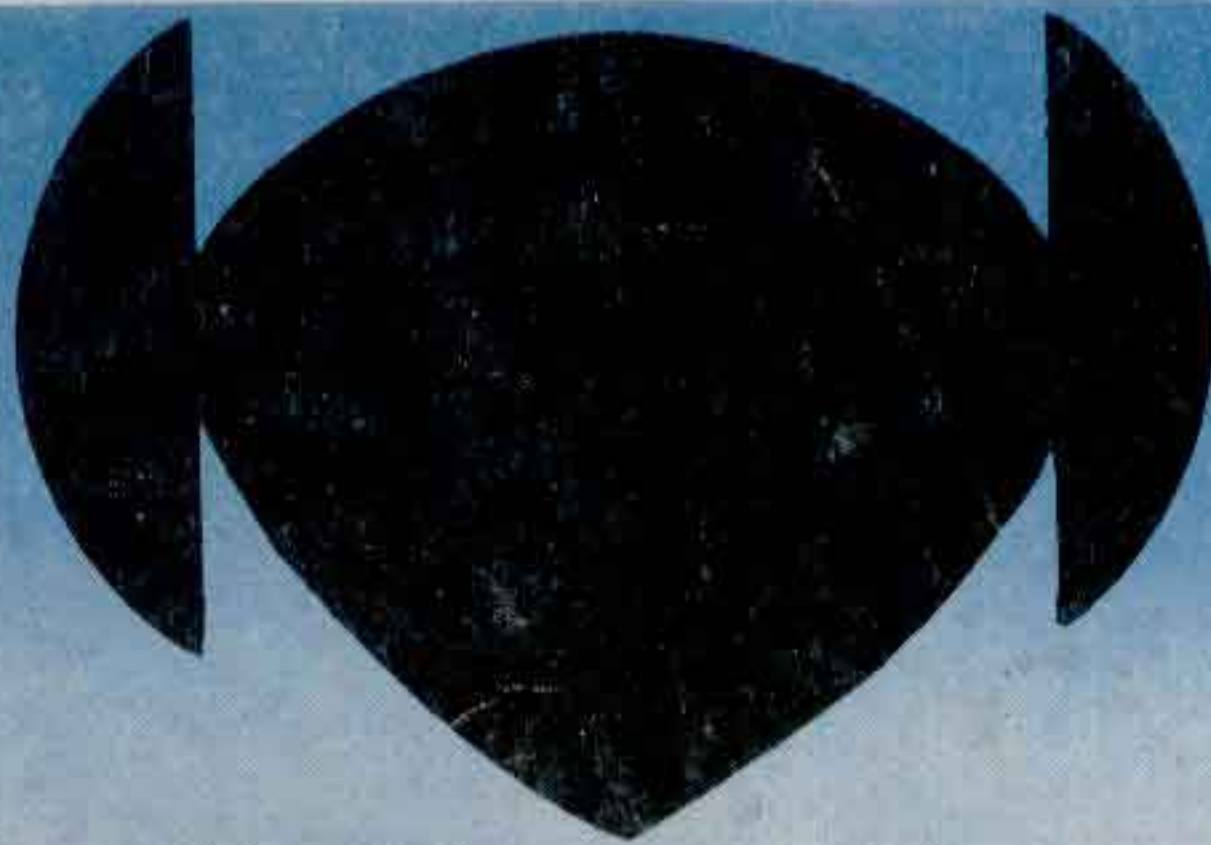
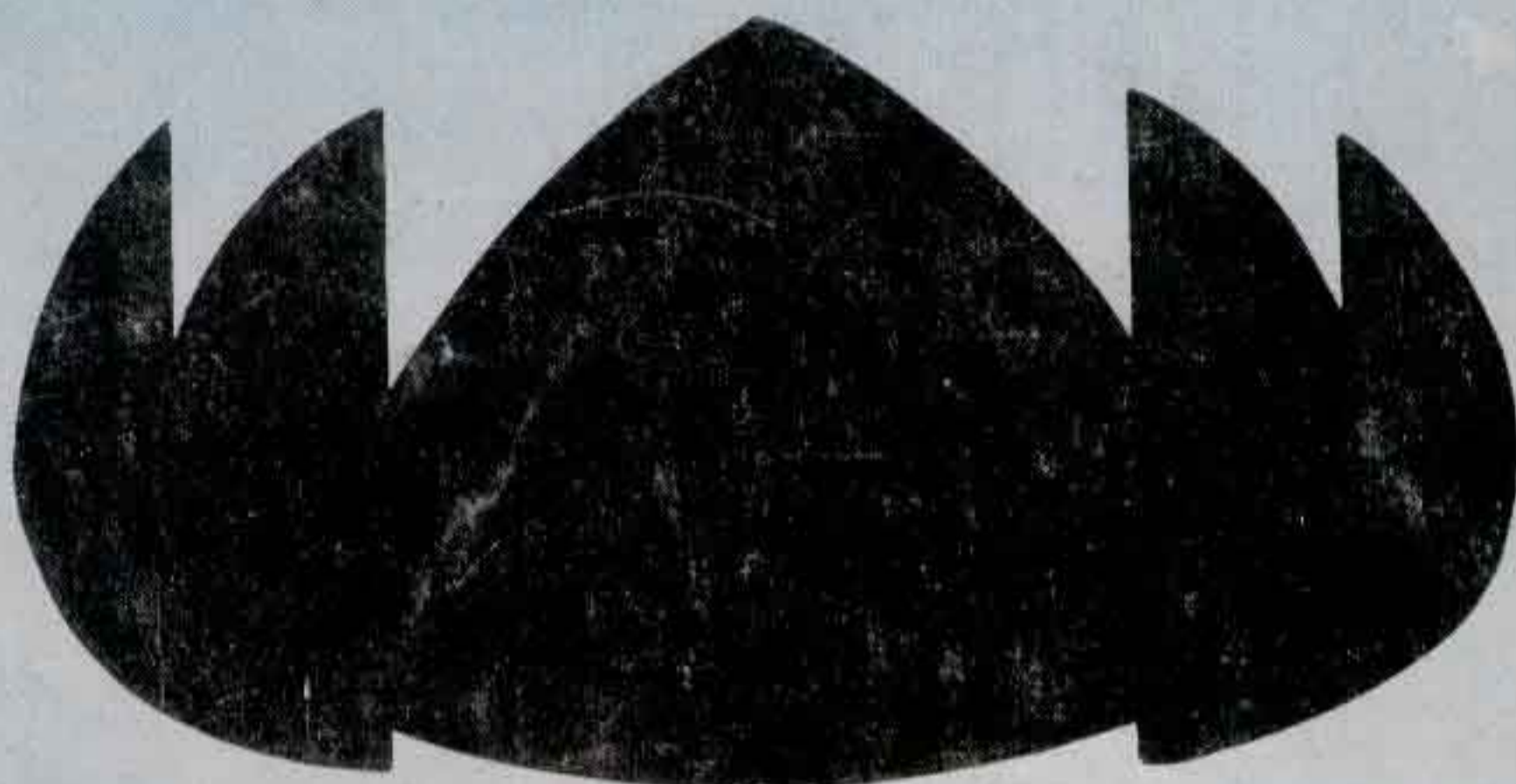


33वाँ राष्ट्रीय फिल्म समारोह

1986

33rd National Film Festival

33rd NFJF



33वाँ राष्ट्रीय फिल्म
समारोह जून, 1986

33RD NATIONAL
FILM FESTIVAL
JUNE, 1986

विषय सूची

पृष्ठ संख्या
Page No.

CONTENTS

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 1985	4	Dada Saheb Phalke Award for 1985
निर्णायक मंडल के सदस्य	6	The Juries
कथाचित्र पुरस्कार		
सर्वोत्तम कथाचित्र	8	Best Feature Film
निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम फिल्म के लिए इन्दिरा गांधी पुरस्कार	10	Indira Gandhi Award for the Best Film of a Director
राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार	12	Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration
सर्वोत्तम बाल फिल्म	14	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशन	16	Best Direction
सर्वोत्तम छायांकन	18	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	20	Best Screenplay
सर्वोत्तम अभिनेता	22	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	24	Best Actress
सर्वोत्तम सह अभिनेता	26	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री	28	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	30	Best Child Artiste
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	32	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	34	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	36	Best Art Direction
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	38	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	40	Best Lyric
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	42	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	44	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम वेशभूषा	46	Best Costume Designing
विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार	48	Special Jury Award
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	50	Best Assamese Film
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	52	Best Bengali Film
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	54	Best Hindi Film
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	56	Best Kannada Film
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	58	Best Malayalam Film
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	60	Best Marathi Film
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	62	Best Oriya Film
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	64	Best Tamil Film
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	66	Best Telugu Film
सर्वोत्तम कथाचित्र बोडो भाषा	68	Best Film in Bodo Language
गैर कथाचित्र पुरस्कार		
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र	70	Best Non-Feature Film
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	72	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म	74	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	76	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) फिल्म	78	Best Scientific (including Environment and Ecology) Film
सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म	80	Best Industrial Film
सर्वोत्तम कृषि फिल्म	82	Best Agricultural Film
सर्वोत्तम समाज कल्याण/परिवार कल्याण फिल्म	84	Best Social Welfare/Family Welfare Film

सर्वोत्तम खोजी/साहसिक फिल्म	86	Best Exploration/Adventure Film
सर्वोत्तम समाचार फिल्म	88	Best News Film
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	90	Best Animation Film
विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार	92	Special Jury Award
सर्वोत्तम सिनेमा लेखन पुरस्कार		AWARD FOR THE BEST WRITING ON CINEMA
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	94	Best Book on Cinema
विशेष उल्लेख/पुरस्कार जो नहीं दिए गए	96	Special obention/Award Not given
कथासार		Synopses
कथाचित्र		<i>Feature Films</i>
आजादी की ओर (हिन्दी)	97	Aazadi ki Ore (Hindi)
अग्निस्नान (असमिया)	98	Agnisnaan (Assamese)
अलायारन (बोडो भाषा)	99	Alayaron (Bodo Language)
अनन्तयात्रा (हिन्दी)	100	Anantyatra (Hindi)
बेट्टाडा हूवु (कन्नड़)	101	Bettada Hoovu (Kannada)
चिदम्बरम् (मलयालम)	102	Chidambaram (Malayalam)
एक पल (हिन्दी)	103	Ek Pal (Hindi)
हाकिम बाबू (उड़िया)	104	Hakim Babu (Oriya)
हम नौजवान (हिन्दी)	105	Hum Naujawan (Hindi)
मयूरी (तेलुगु)	106	Mayuri (Telugu)
मुधल मरियाधार्ई (तमिल)	107	Mudhal Mariyadhai (Tamil)
न्यू दिल्ली टाइम्स (हिन्दी)	108	New Delhi Times (Hindi)
परमा (बंगला)	109	Parama (Bengali)
पुढ्चे पाऊल (मराठी)	110	Pudchche Paool (Marathi)
राव साहिब (हिन्दी)	111	Rao Saheb (Hindi)
श्री नारायण गुरु (मलयालम)	112	Shri Narayana Guru (Malayalam)
सिन्धु भैरवी (तमिल)	113	Sindhu Bhairavi (Tamil)
श्रावन्ती (तेलुगु)	114	Sravanthi (Telugu)
थिनकलाएचा नल्ला दिवसम् (मलयालम)	115	Thinkalazcha Nalla Divasam (Malayalam)
त्रिकाल (हिन्दी)	116	Trikal (Hindi)
गैर कथाचित्र		<i>Non-Feature Films</i>
हमारा शहर	117	Bombay : Our City
हाई एडवेंचर्स ऑन व्हाइट वाटर्स	117	High Adventures on White Waters
द विस्परिंग विन्ड	118	The Whispering Wind
बाई	118	Bai
सत्यजीत रे	119	Satyajit Ray
द सियर हू वाक्स एलोन	119	The Seer who Walks Alone
वर्ली पेंटिंग	120	Warli Painting
पावर टू द पीपल	120	Power to the People
सेफटी मैयर्स इन हैंडलिंग एग्रीकल्चरल मशीनरी	121	Safety Measures in Handling Agricultural Machinery
कैश इन कैशयू कल्टीवेशन	121	Cash in Cashew Cultivation
समाचार चित्र संख्या 59	122	News Magazine No. 59
करुणा की विजय	122	Karuna Ki Vijay
बोध वृक्ष	123	Bodhvriksha
प्रिजनर्स ऑफ सरकम्स्टान्सिज	123	Prisoners of Circumstances
अनुकरण	124	Anukaran



दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 1985

वी. शांताराम

स्वर्ण कमल, 1,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार और एक शाल।

शांताराम राजाराम वांकुद्रे, वी. शांताराम के नाम से जाने जाते हैं तथा पिछले छह दशकों में भारतीय सिनेमा के उत्थान एवं संवर्द्धन में उनका विशिष्ट योगदान रहा है। वे फिल्म उद्योग के कर्मठ योद्धा एवं मुख्य शिल्पी के रूप में विख्यात हुए और उन्होंने केवल निर्देशन द्वारा ही नहीं अपितु तकनीकी विकास एवं कलात्मक तथा साहित्यिक मूल्यों से भी फिल्मों को समृद्ध किया जिसे बुद्धिजीवी वर्ग ने सराहा तथा जनसाधारण ने बेहद पसंद किया। वे विषय और तकनीकी की नई फिल्म रीतियों के प्रचलन के लिए जाने गए तथा उन्होंने भारतीय सिनेमा को बहुत-सी सामाजिक उद्देश्यपूर्ण फिल्में प्रदान कीं। महाराष्ट्र फिल्म कंपनी, कोल्हापुर से

1920 में उन्होंने अपना फिल्मी जीवन प्रारंभ किया तथा 1923 में ऐतिहासिक फिल्म 'सिंहगढ़' से अभिनय की शुरुआत की। 1927 में 'नेताजी पालकर' फिल्म से वे निर्देशन में आए। इसके बाद उनकी रचनात्मक प्रतिभा स्वतंत्र निर्देशक के रूप में विकसित हुई और उन्होंने हिन्दी में 'अमृत मंथन', 'धर्मात्मा', 'अमर ज्योति', 'दुनिया ना माने', 'आदमी', 'पड़ोसी', 'शकुन्तला', 'डॉ. कोटनीस की अमर कहानी', 'झनक झनक पायल बाजे' और 'दो आंखें बारह हाथ' तथा मराठी में 'राम जोशी', 'अमर भोपाली' और 'पिंजरा' जैसी अविस्मरणीय फिल्में बनाईं। उनकी फिल्मों को राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें 'दो आंखें बारह हाथ' विशेष उल्लेखनीय रही। इस फिल्म को बर्लिन के सातवें अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में विशेष पुरस्कार (गोल्डन बीयर) से सम्मानित किया गया, साथ ही वर्ष 1957 के लिए

सर्वोत्तम भारतीय कथाचित्र के लिए उन्हें राष्ट्रपति ने स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। उन्होंने अब तक विभिन्न भाषाओं में 82 फिल्मों का निर्माण, 55 फिल्मों का निर्देशन और 23 फिल्मों में अभिनय किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 11 वृत्तचित्रों और बाल कथाचित्रों का निर्माण एवं निर्देशन भी किया है। वे फिल्म उद्योग से संबंधित अनेक संस्थाओं से संबद्ध रहे हैं और फिल्म सलाहकार बोर्ड तथा केन्द्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड के सदस्य रह चुके हैं। वे भारतीय फिल्म निर्माता गिल्ड के संस्थापक-अध्यक्ष रह चुके हैं तथा फिल्म जांच समिति (एस.के. पाटिल समिति, 1951) के सदस्य भी रहे। उन्होंने फिल्म प्रभाग के मुख्य निर्माता के रूप में भी कार्य किया। वे भारतीय बालचित्र समिति के एक संस्थापक-सदस्य हैं तथा दो-तीन वर्ष की अवधि तक इसके अध्यक्ष भी रहे।

DADA SAHEB PHALKE AWARD FOR 1985

V. SHANTARAM

Swarna Kamal, a cash prize of Rs.1,00,000 and a shawl

In an illustrious career spanning well over six decades, Shantaram Rajaram Vankudre, popularly known as V. Shantaram, has made outstanding contribution to the development and enrichment of Indian Cinema. A pioneer and a path-breaker, a crusader and a master craftsman, Shantaram invested his films with not only directorial excellence but also technical advancement and artistic and cultural values which have been appreciated by the intelligentsia and the masses alike. Known for boldly experimenting with techniques and themes, he has given to the Indian Cinema world many socially purposeful films. He began his film career in 1920 with the Maharashtra Film Company, Kolhapur. He made his

debut as a leading man in 1923 in the historical film 'Sinhgarh'. His first essay in direction was in 'Netaji Palkar' in 1927. With his becoming an independent director, his creative genius blossomed forth and he made such memorable films as 'Amrit Manthan', 'Dharmatma', 'Amar Jyoti', 'Duniya Na Mane', 'Admi', 'Padosi', 'Shakuntala', 'Dr. Kotnis Ki Amar Kahani', 'Jhanak Jhanak Payal Baaje' and 'Do Ankhen Barah Haath' in Hindi and 'Ram Joshi', 'Amar Bhopali' and 'Pinjara' in Marathi. His films have won national and international awards, notable among them being 'Do Ankhen Barah Haath'. The awards which the film won included the President's Gold Medal for the Best Indian Feature Film of 1957 and Golden Bear at the VII

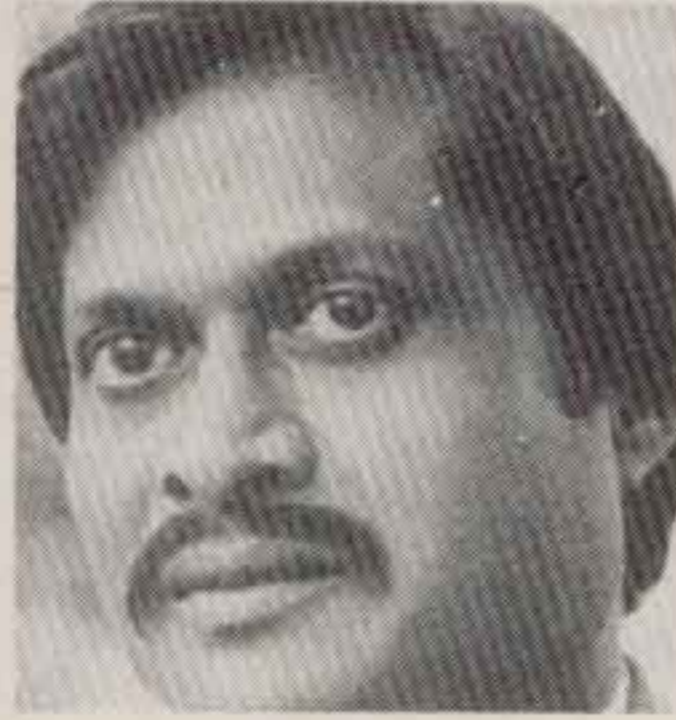
Berlin International Film Festival. Shantaram has so far produced 82 films in different languages, directed 55 and acted in 23 films. He has also produced and directed 11 documentaries and children's films. Shantaram has been associated with various institutions connected with films. He was a member of the film Advisory Board and the Central Board of Film Censors. He was the founder-President of the Film Producers Guild of India. He was a member of the Film Enquiry Committee (S.K. Patil Committee, 1951). He had also worked as Chief Producer of Films Division. He is a founder-member of the Children's Film Society, India, and was its chairman for two three-year terms.

कथाचित्र निर्णायक मंडल

jury for feature films



प्रेम नजीर (अध्यक्ष)
Prem Nazir (Chairman)



डॉ. जे.पी. दास
Dr. J.P. Das



जया बच्चन
Jaya Bachchan



कोमल स्वामीनाथन
Komal Swaminathan



वी.के. माधवन कुट्टी
V.K. Madhavan Kutty



प्रेमा कारन्थ
Prema Karanth



बापू वाटवे
Bapu Watve



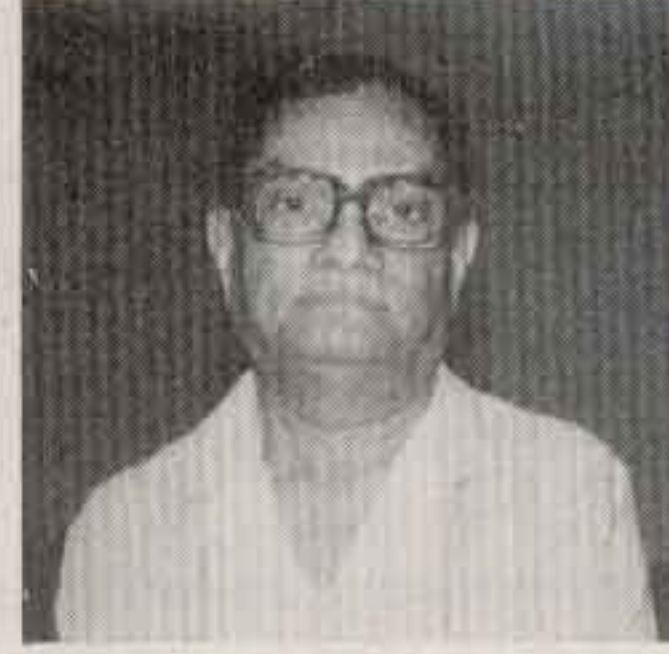
गौतम घोष
Gautam Ghosh

सर्व/श्री कन्हैया लाल नंदन और गुम्मडी वेंकटेश्वर राव भी कथाचित्र निर्णायक मंडल के सदस्य थे, परन्तु श्री नंदन व्यक्तिगत कारणों से और श्री राव एक फिल्म में अभिनय के कारण, निर्णायक मंडल की अंतिम बैठक में सम्मिलित नहीं हुए।

S/Shri K.L. Nandan and Gumjadi Venkateswara Rao had also been included in the Jury for Feature Films but did not associate themselves with the final decision—Shri Nandan because of personal reasons and Shri Rao because he had a small role in one of the films.

गैर कथाचित्र निर्णायक मंडल

jury for non-feature films



एम.वी. कृष्णास्वामी (अध्यक्ष)
M.V. Krishnaswamy (Chairman)

सतीश बहादुर
Satish Bahadur

टी.एम. रामचन्द्रन
T.M. Ramachandran

पंकज बुटालिया
Pankaj Butalia

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन निर्णायक मंडल

jury for the best writing
on cinema



अमिता मलिक (अध्यक्ष)
Amita Malik (Chairperson)

एन. एन. पिल्लै
N.N. Pillai

बी.वी. धरप
B.V. Dharap

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

चिदंबरम्

निर्माता सूर्यकान्ती फिल्म मेकर्स को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक जी. अरविन्दन को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1985 का पुरस्कार मलयालम फिल्म चिदंबरम् को दिया गया है जिसमें विरोधी तत्वों से जूझते हुए एक व्यक्ति की पीड़ा और अन्तर्द्वन्द्व को व्यक्त करते हुए फिल्म माध्यम का अद्वितीय ढंग से उपयोग किया है।

award for the best feature film

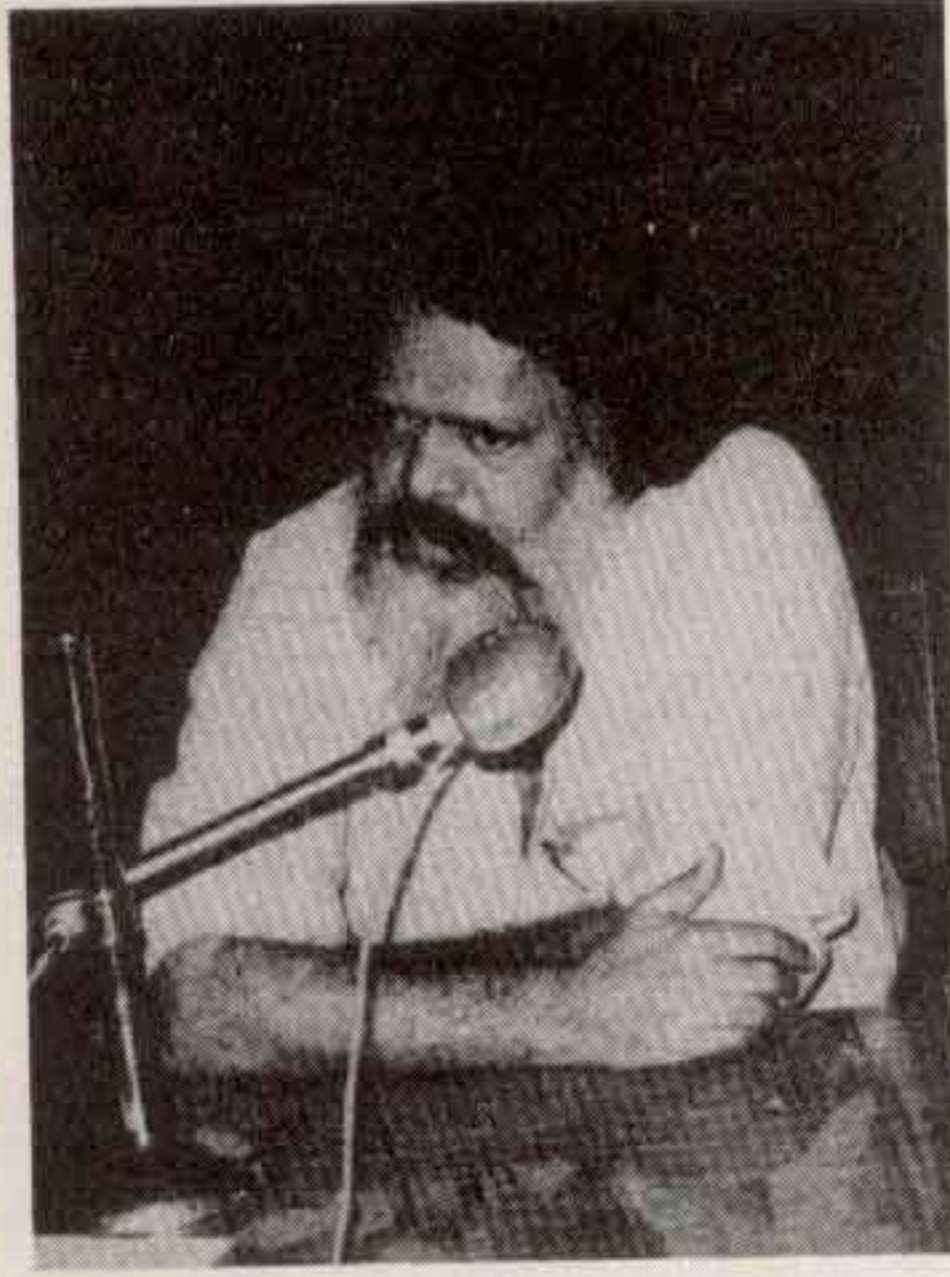
CHIDAMBARAM

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.50,000 to the Producer, Suryakanthi Film Makers.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.25,000 to the Director, G. Aravindan.

citation

The Award for the Best Feature Film of 1985 is given to the Malayalam film CHIDAMBARAM which provides a rare cinematic experience while delineating the inner conflicts and suffering of an individual set against the backdrop of the elements.



जी. अरविन्दन चित्रकार तथा कार्टूनकार हैं। वे शास्त्रीय तथा लोकनाटकों से भी सम्बद्ध हैं। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन 1973 में शुरू किया। अब तक उन्होंने 7 फिल्मों का निर्देशन किया है और वे सभी बहुत सराही गई हैं। ये हैं—उत्तरायणम्, कंचनसीता, थम्प, कुमट्टी, स्थापन, पोककुवेईल और चिदंबरम्। उन्होंने लघु चित्रों का भी निर्माण किया है। उनका नवीनतम लघु चित्र द सियर हू वाक्स एलोन है जो जे. कृष्णमूर्ति के संबंध में है। इस चित्र को इस वर्ष भी पुरस्कार मिला है।

Painter and cartoonist, G. Aravindan works also for the theatre, producing classical and folk plays. Beginning his career in 1973, he has so far directed seven films, all of which have won acclaim: UTTARAYANAM, KANCHANASITA, THAMP, KUMMATTY, ESTHAPPAN, POKKUYEYIL and CHIDAMBARAM. He has also made short films, the latest being THE SEER WHO WALKS ALONE, a docu-feature on J. Krishnamurthi which too has won an award this year.

निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम फिल्म के लिए इन्दिरा गांधी पुरस्कार

न्यू दिल्ली टाइम्स

निर्माता पी. के. तिवारी को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक रमेश शर्मा को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम फिल्म के लिए इन्दिरा गांधी का 1985 का पुरस्कार न्यू दिल्ली टाइम्स को राजनीति के अंधकारपूर्ण संसार, जिसमें सच्चाई को दबाकर स्वार्थ के लिए हत्याएं होती हैं, को उजागर करने के सशक्त चित्रण के लिए दिया गया है।

indira gandhi award for the best first film of a director

NEW DELHI TIMES

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.25,000 to the Producer, P.K. Tewari.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.25,000 to the Director, Ramesh Sharma.

citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a director of 1985 is given to the Hindi film NEW DELHI TIMES for a bold exposure of the murky world of politics where murder and mayhem are engineered for personal gains and truth becomes a casualty.



पी.के. तिवारी एक उद्योगपति हैं और समकालीन जीवन में संचार साधनों की उपयोगिता से अच्छी तरह परिचित हैं।

रमेश शर्मा का प्रथम लघु चित्र रूमटेक-ए मानेस्ट्री रेथड इन ए थाउजेंड रेनबोज को सर्वोत्तम सूचना फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा कामनवेल्थ फिल्म समारोह में विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार मिला। इसके बाद 1981 में उन्होंने लद्दाख के संबंध में एक घण्टे का लघु चित्र ड्रिकंग: ए फेद इन एग्जाइल बनाया। उनकी रुचि प्रकाशन माध्यम से परफार्मिंग आर्ट्स तथा दृश्य-श्रव्य जैसे जन-माध्यम तक विकसित हुई है।

P.K. Tewari is an industrialist who is keenly aware of the importance of communication in contemporary life.

Ramesh Sharma's first independent documentary, RUMTEK—A MONASTERY WREATHED IN A THOUSAND RAINBOWS, won him the national award for the Best Information Film and the Special Jury Award at the Commonwealth Film Festival. This was followed in 1981 by an hour-long documentary on Ladhakh, DRIKUNG: A FAITH IN EXILE. Sharma's interests range from the print medium to the performing arts and audio-visual mass media.

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

श्री नारायण गुरु

निर्माता ए. जाफर को रजत कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक पी.ए. बक्कर को रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1985 का नरगिस दत्त पुरस्कार मलयालम फिल्म श्री नारायण गुरु को दिया गया है जिसमें महान सुधारक की जीवनी के माध्यम से 'मनुष्य के लिए एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर' के सार्वकालिक सिद्धान्त की शिक्षा दी गई है।

nargis dutt award for the best feature film on national integration

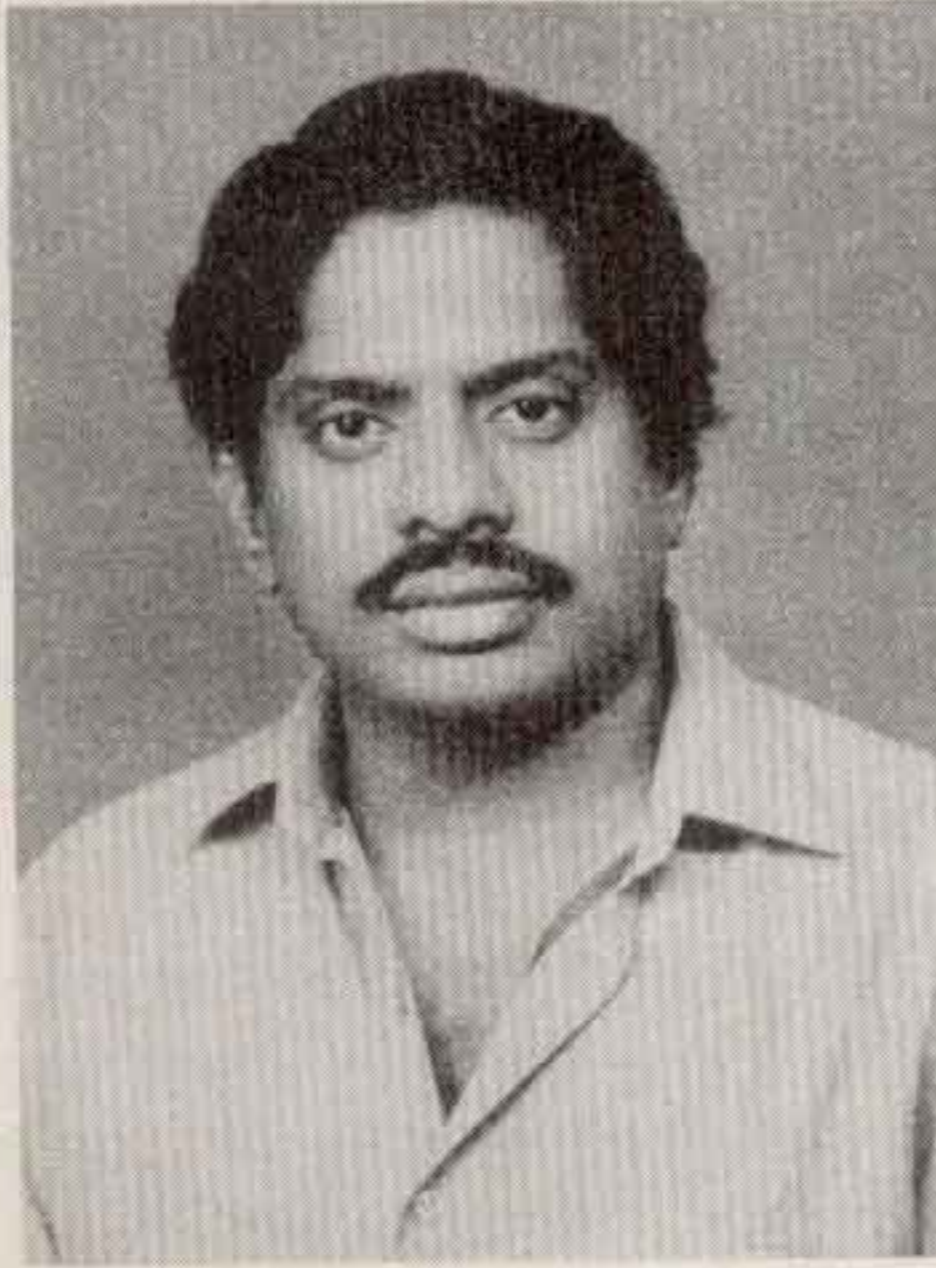
SHRI NARAYANA GURU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.30,000 to the Producer, A. Jaffer.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.15,000 to the Director, P.A. Backer.

citation

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration of 1985 is given to the Malayalam Film SHRI NARAYANA GURU, a film which preaches, through the life of a great reformer, the universal values of 'One Caste, One Religion and One God for Man.'



ए. जाफर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र के स्नातक हैं और दर्शन तथा धर्म में उनकी गहरी रुचि है। श्री नारायण गुरु उनकी पहली फिल्म है।

पी.ए. बक्कर की पहली फिल्म **कबानी नादी चुवन्नापुल** काफी प्रशंसित हुई। 1977 में उनकी फिल्म **मणि मुशक्कम** और 1982 में **चापा** को सर्वोत्तम मलयालम फिल्म के पुरस्कार मिले।

A graduate in economics from the Aligarh University, A. Jaffer is keenly interested in philosophy and religion. SHRI NARAYANA GURU is his maiden production venture.

P.A. Backer won acclaim with his very first film KABANEE NADHI CHUVANNAPPOL. His films MANI MUZHAKKAM and CHAAPA won the best Malayalam film award in 1977 and 1982.

सर्वोत्तम बाल फिल्म पुरस्कार

आजादी की ओर

निर्माता संगीतालय को स्वर्ण कमल और 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक पी.एस. प्रकाश को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल फिल्म का 1985 का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **आजादी की ओर** को एक रोचक कहानी के माध्यम से मनुष्य द्वारा जानवरों के शोषण और उत्पीड़न को उजागर करने और बच्चों के मन में जानवरों के लिए प्रेम पैदा करने के लिए दिया गया है।

award for the best children's film

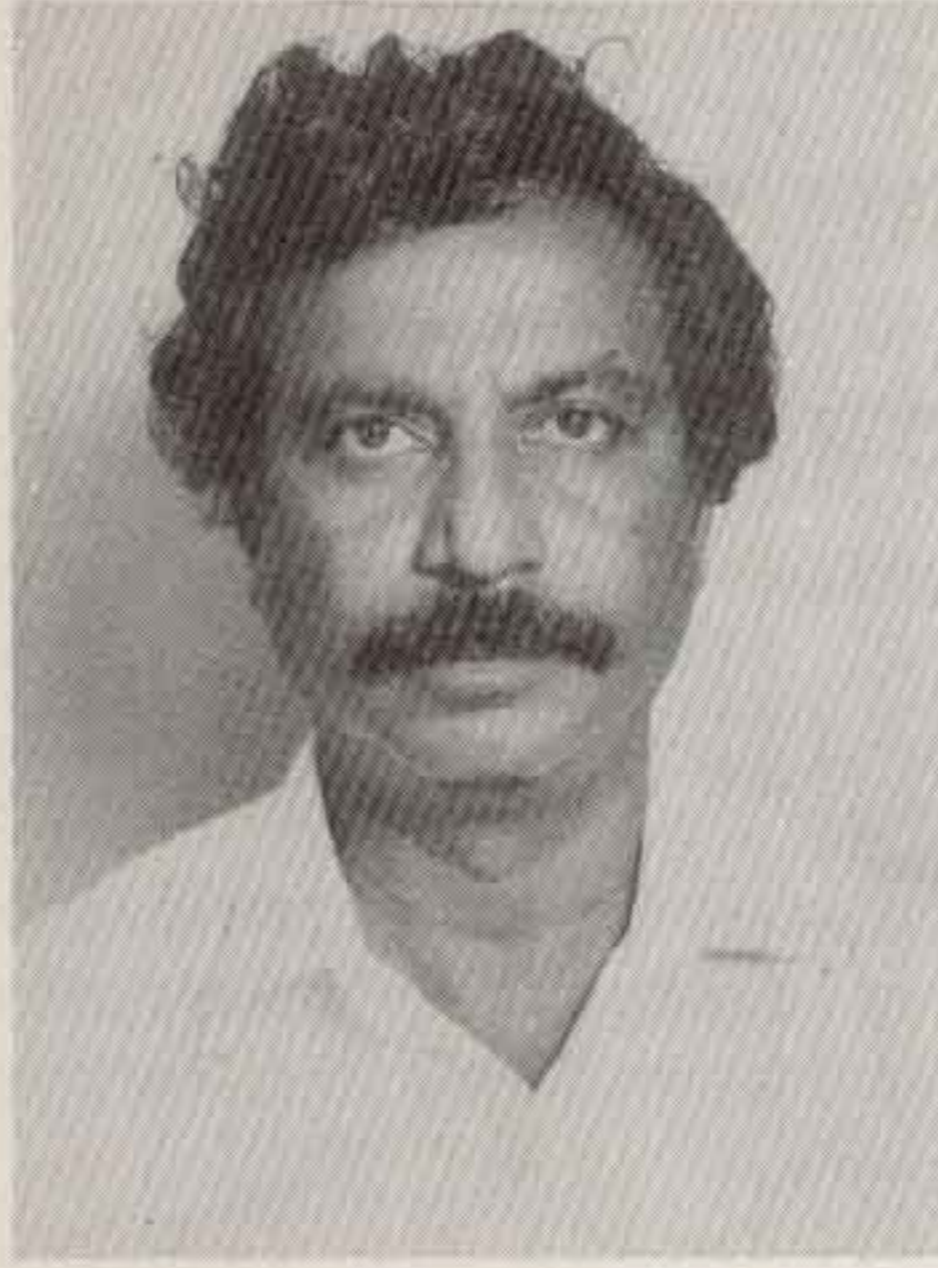
AAZADI KI ORE

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.30,000 to the Producer, Sangeethalaya.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.15,000 to the Director, P.S. Prakash.

citation

The Award for the Best Children's Film of 1985 is given to the Hindi film AAZADI KI ORE for exposing man's cruelty to and exploitation of animals and, through an interesting story, inculcating in the minds of children the love of animals.



पी.एस. प्रकाश निर्देशक के साथ-साथ छायाकार भी हैं। वे विभिन्न भाषाओं की 25 से अधिक फिल्मों का छायांकन कर चुके हैं। उन्होंने 5 फिल्मों का निर्देशन किया है जिनमें 4 कन्नड़ तथा एक तेलुगु की है। आज़ादी की ओर हिन्दी में निर्देशित उनकी पहली फिल्म है जिसका छायांकन भी उन्होंने स्वयं किया है।

A photographer-cum-director, P.S. Prakash has cranked the camera for more than 25 films in different languages and has directed five films-four in Kannada and one in Telugu. He is also cameraman for AAZADI KI ORE, his first directorial venture in Hindi.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

श्याम बेनेगल

रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1985 का पुरस्कार श्याम बेनेगल को हिन्दी फिल्म त्रिकाल में एक ऐसी असामान्य कहानी को कुशलतापूर्वक प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है जिसमें सूक्ष्म और भावुकतापूर्ण ढंग से विचित्र स्मृतियों और स्थितियों में फंसे एक परिवार के तनाव और विवादों की अभिव्यक्ति हुई है।

award for the best direction

SHYAM BENEKAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000

citation

The Award for the Best Direction of 1985 is given to SHYAM BENEKAL for his work in the Hindi film TRIKAL for the masterly treatment of an unusual story which, through subtle and sensitive handling, brings out the conflicts in a family trapped in strange memories and situations.



श्याम बेनेगल अब तक लगभग एक हजार विज्ञापन फिल्मों, 38 वृत्तचित्रों और 15 कथाचित्रों/वृत्तचित्रों का निर्देशन कर चुके हैं। उनके कथाचित्रों में अंकुर, निशान्त, मंथन, भूमिका, कोंडुरा, जुनून, कलयुग, आरोहण तथा मण्डी और वृत्तचित्रों में नेहरू तथा सत्यजीत रे शामिल हैं। उनकी फिल्मों को अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। उन्हें 1976 में पद्मश्री से विभूषित किया गया।

Shyam Benegal has directed about 1000 film commercials, 38 documentaries and 15 feature length/documentary films. His feature films include ANKUR, NISHANT, MANTHAN, BHUMIKA, KONDURA, JUNOON, KALYUG, AROHAN and MANDI and his documentaries, NEHRU and SATYAJIT RAY. His films have won several national and international awards. He was awarded Padma Shri in 1976.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

सुब्रतो मित्रा

रजत कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1985 का पुरस्कार सुब्रतो मित्रा को हिन्दी फिल्म न्यू दिल्ली टाइम्स में प्रकाश एवं छाया के सूक्ष्म भेदों से सशक्त दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण तथा विशिष्ट छायांकन कार्य के लिए दिया गया है।

award for the best cinematography

SUBRATA MITRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.15,000

citation

The Award for the Best Cinematography of 1985 is given to SUBRATA MITRA for his work in the Hindi film NEW DELHI TIMES for inspired camera work which brings out the delicate nuances of light and shade resulting in a strong visual presentation.



सुब्रतो मित्रा, जिन्होंने पहले कभी कैमरा छुआ तक नहीं था, सत्यजीत रे की पहली फिल्म **पथेर पांचाली** से एक व्यावसायिक छायाकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। सुब्रतो मित्रा ने सत्यजीत रे की 10 फिल्मों में छायांकन किया। जिनमें **अपराजितो, अपूर संसार, जलसाघर, देवी, कंचनजंगा, चारुलता** तथा **नायक** सम्मिलित हैं। वर्षों से उन्होंने छायांकन का विशिष्ट ढंग विकसित करके अनेक नवीनताएं प्रस्तुत की हैं। 1981 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान ने भारतीय सिनेमा की उनकी उच्च व्यवसायिक सफलता एवं विशिष्ट योगदान के लिए डिप्लोमा से सम्मानित किया।

Satyajit Ray's **PATHER PANCHALI** transformed Subrata Mitra, who had never touched a movie camera before, into a renowned professional cinematographer. During his collaboration with Satyajit Ray, Mitra directed the camera in ten of Ray's films including **APARAJITO, APUR SANSAR, JALSAGHAR, DEVI, KANCHENJUNGH, CHARULATA** and **NAYAK**. Over the years, he has evolved a unique style of photography and introduced many innovations. In 1981, the FTII awarded him the 'Diploma Honoris Causa for his high professional achievement and signal contribution to Indian Cinema'.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

डॉ. भबेन्द्र नाथ साइकिया

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1985 का पुरस्कार डॉ० भबेन्द्र नाथ साइकिया को असमिया फिल्म अग्निस्नान में एक ऐसी स्त्री की कहानी को सशक्त ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है जो सामाजिक बंधनों के विरुद्ध विद्रोह कर देती है और अपनी क्षमता को पहचान जाती है।

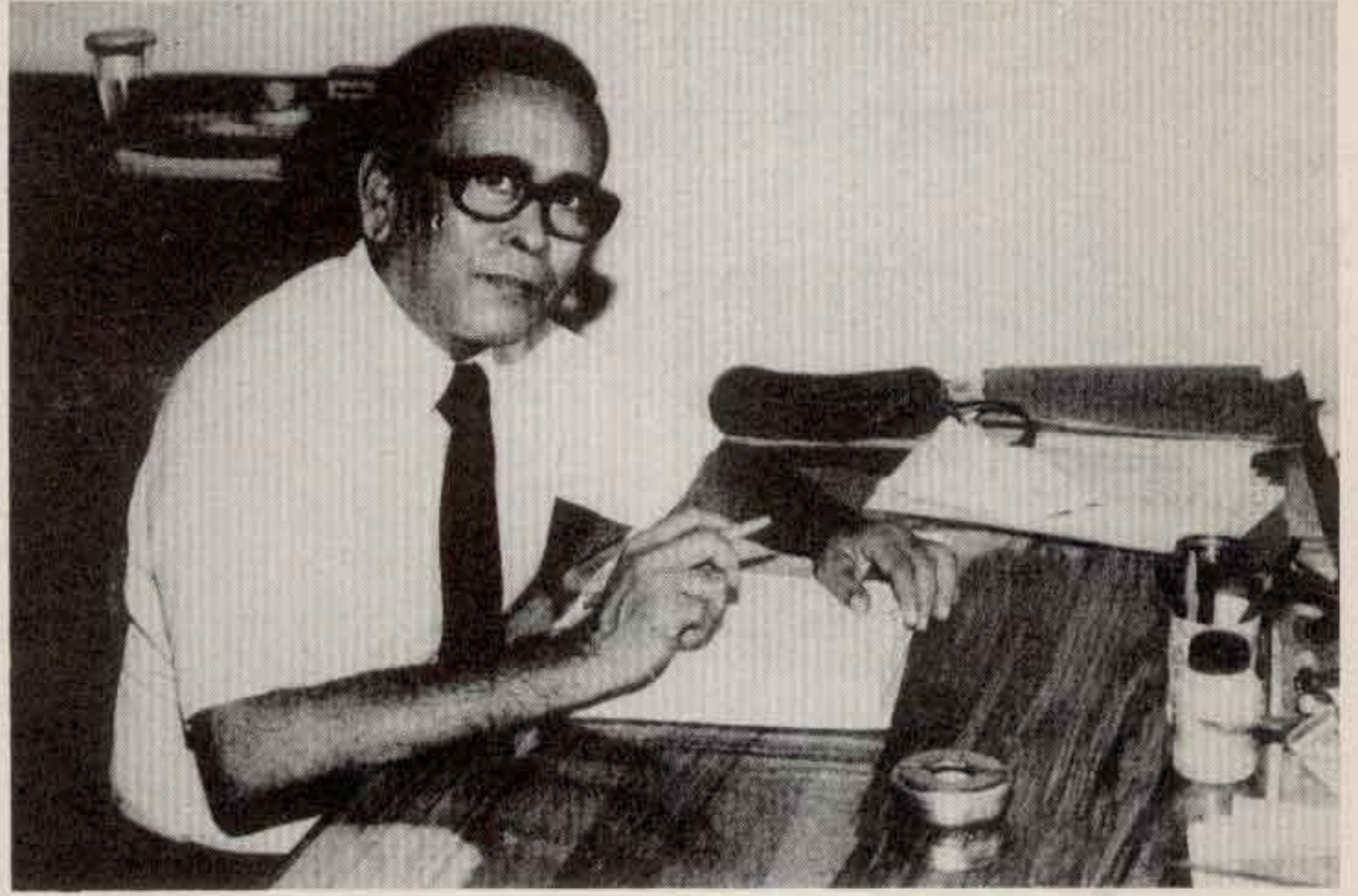
award for the best screenplay

Dr. BHABENDRA NATH SAIKIA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000.

citation

The Award for the Best Screenplay of 1985 is given to Dr. BHABENDRA NATH SAIKIA for his work in the Assamese film AGNISNAAN for the powerful rendering of the saga of a woman who goes through a revolution against the prevailing social mores and comes to terms with herself.



डॉ० भबेन्द्र नाथ साइकिया असम के विख्यात लेखक हैं और कला-संस्कृति तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी अग्रणी भूमिका रही है। वे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किए जा चुके हैं। उनकी पहली फिल्म **संध्याराग** को 1977 में रजत कमल दिया गया। उनकी दूसरी फिल्म **अनिरबान** को भी 1981 में रजत कमल मिला। **अग्निस्नान** को भी इस वर्ष रजत कमल प्रदान किया गया है। डॉ० साइकिया ने लंदन विश्वविद्यालय से भौतिक शास्त्र में डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की है। इस समय वे प्रान्तिक (पाक्षिक पत्रिका) के मुख्य संपादक और सोफुरा (मासिक बाल पत्रिका) के संपादक हैं।

A major creative writer of Assam and a Sahitya Akademi award winner, Dr. Bhabendra Nath Saikia has a most distinctive record of activities in art, culture and education. His first film, SANDHYARAG was given the Rajat Kamal in 1977. His second film ANIRBAAN won the Rajat Kamal in 1981. AGNISNAAN has also won the Rajat Kamal this year. Dr. Saikia has a doctoral degree in physics from the London University. He is at present Chief Editor, Prantik (fortnightly magazine) and Editor, Sofura (monthly children's magazine).

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

शशि कपूर

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1985 का पुरस्कार शशि कपूर को हिन्दी फिल्म न्यू दिल्ली टाइम्स में राजनीतिक जोड़-तोड़ के घेरे में फंसे एक समर्पित पत्रकार की भूमिका को विश्वसनीय ढंग से निभाने के लिए दिया गया है।

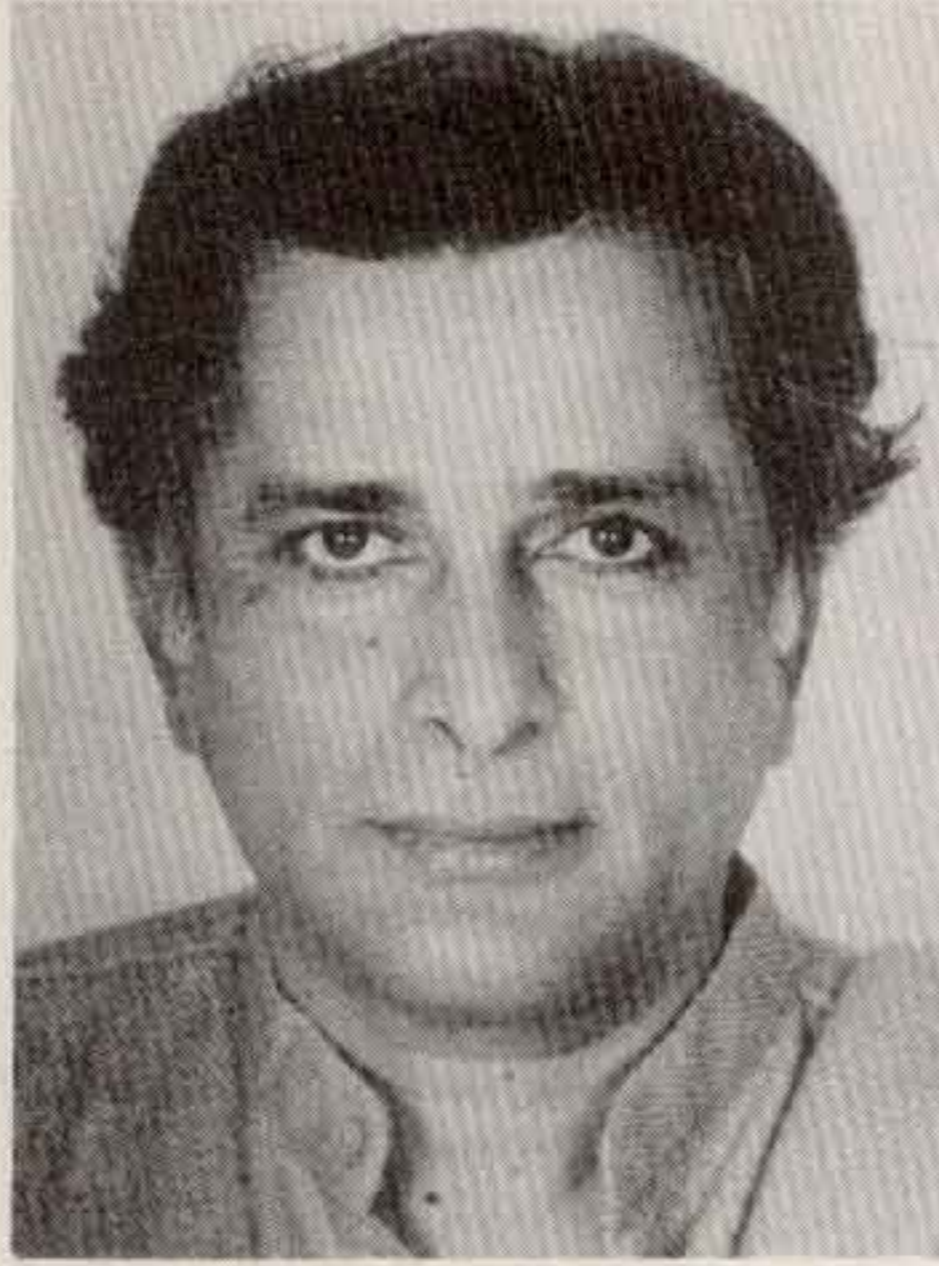
award for the best actor

SHASHI KAPOOR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000.

citation

The Award for the Best Actor of 1985 is given to SHASHI KAPOOR for his work in the Hindi film NEW DELHI TIMES for a convincing and credible portrayal of dedicated journalist caught in the cross-currents of political manoeuvring.



शशि कपूर बचपन में ही अपने पिता की नाट्य संस्था पृथ्वी थिएटर और अपने भाई राजकपूर की फिल्मों में काम करने लगे। बाद में वे एक अन्तरराष्ट्रीय नाट्य संस्था शैक्सपीरियाना में अभिनेता के रूप में काम करने लगे। उन्होंने पहली बार 1960 में चारदीवारी फिल्म में मुख्य भूमिका निभाई। अब तक वे 250 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके हैं। उन्होंने पांच फिल्मों-जूनून, कलयुग, 36 चौरंगी लेन, विजेता और उत्सव का निर्माण किया है तथा इन फिल्मों के लिए राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

As a child, Shashi Kapoor had worked in his father's theatrical company, Prithvi Theatre, and his brother, Raj Kapoor's films. Later he worked as professional actor with the Shakespeareana International Theatrical Company. Beginning as a leading man in the film CHAR DIWARI in 1960, he has acted in more than 250 films. He has also produced five films, JUNOON, KALYUG, 36 CHOWRINGHEE LANE, VIJETA and UTSAV and has received national and international awards for them.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

सुहासिनी

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1985 का पुरस्कार सुहासिनी को तमिल फिल्म सिन्धु बैरवी में एक ऐसी स्त्री की कठिन भूमिका को सुन्दर ढंग से निभाने के लिए दिया गया है जो अपने जीवन में प्रेमिका और अविवाहित मां बनती है और अन्ततः एकाकी जीवन बिताती है।

award for the best actress

SUHASINI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000.

citation

The Award for the Best Actress of 1985 is given to SUHASINI for her superb performance in the Tamil film SINDHU BHAIRAVI in the difficult role of a woman who goes through life as lover and unwed mother who has finally to go back to her lonely existence.



सुहासिनी ने मद्रास में फिल्म संस्थान में सिनेमाटोग्राफर का प्रशिक्षण लिया। उन्होंने सबसे पहले तमिल फिल्म नेंजाथाई किल्लाथे में अभिनय किया, जिसे पुरस्कार मिला। अब वे तमिल के अलावा मलयालम, कन्नड़ और तेलुगु फिल्मों में भी अभिनय कर रही हैं।

Suhasini had her training as cinematographer from the Film Institute at Madras. She made her acting debut in the Tamil film NENJATHAI KILLATHE which won an award. She now acts in films in various languages like Tamil, Malayalam, Kannada and Telugu.

सर्वोत्तम सह अभिनेता पुरस्कार

दीपंकर डे

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह अभिनेता का 1985 का पुरस्कार दीपंकर डे को बंगला फिल्म परमा में एक ऐसे पति की व्यथा को विश्वसनीय ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है जो अपनी पत्नी को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है।

award for the best supporting actor

DEEPANKAR DE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000.

citation

The Award for the Best Supporting Actor of 1985 is given to DEEPANKAR DE for his work in the Bengali film PARAMA for a convincing portrayal of the anguish of a husband who is unable to accept his wife.



दीपंकर डे 120 से अधिक बंगला फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। उन्होंने सत्यजीत रे, मृणाल सेन, तपन सिन्हा और अपर्णा सेन जैसे कुशल निर्देशकों की फिल्मों में काम किया है। वे सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

Deepankar De has acted in over 120 Bengali films under eminent directors like Satyajit Ray, Mrinal Sen, Tapan Sinha and Aparna Sen. He has won several awards, including best actor awards.

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री पुरस्कार

विजया मेहता

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री का 1985 का पुरस्कार विजया मेहता को हिन्दी फिल्म राव साहिब में एक ऐसी प्रौढ़ विधवा के चरित्र को कुशलता के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है जो परंपराओं में जकड़ी है और आधुनिक बनने के लिए संघर्ष कर रही है।

award for the best supporting actress

VIJAYA MEHTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000.

citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1985 is given to VIJAYA MEHTA for her work in the Hindi film RAO SAHEB for the delicate delineation of the role of a middle-aged widow fighting for modernity though herself rooted in tradition.



विजया मेहता ने नाटकों के क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है और उन्होंने फिल्मों में भी अपना स्थान बनाया है। उनकी पहली फिल्म **स्मृति चित्रे** को 1984 के फिल्मोत्सव में भारतीय पैनोरमा के लिए चुना गया था तथा उसे सर्वोत्तम निर्देशन और सर्वोत्तम क्षेत्रीय फिल्म के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। वे श्याम बेनेगल और गोविंद निहलानी द्वारा निर्देशित फिल्मों में काम कर चुकी हैं।

An internationally known theatre personality, Vijaya Mehta has made a mark in films also. Her first film, **SMRITI CHITRE**, selected for Indian Panorama in Filmotsav '84, won national awards for the best direction and the best regional film. She has acted in films directed by Shyam Benegal and Govind Nihalani.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

मास्टर पुनीत

रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1985 का पुरस्कार मास्टर पुनीत को कन्नड़ फिल्म **बेट्टाड हूवु** में एक ऐसे गरीब लड़के की भूमिका को सजीव और स्वाभाविक ढंग से निभाने के लिए दिया गया है जिसे अपनी व्यक्तिगत इच्छा और पारिवारिक जिम्मेदारियों में से एक को चुनने का कठिन काम करना होता है।

award for the best child artiste

MASTER PUNEET

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.5,000.

citation

The Award for the Best Child Artiste of 1985 is given to MASTER PUNEET for his work in the Kannada film BETTADA HOOVU for his lively and effortless performance in the role of a poor boy who has to make the difficult choice between his personal goal and his family responsibilities.



मास्टर पुनीत 10 से अधिक कन्नड़ फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। उन्हें कर्नाटक सरकार द्वारा कन्नड़ फिल्मों चालीसुवा मुडगालु और एराडु नक्षत्ररागालु (दोहरी भूमिका) के लिए सर्वोत्तम बाल अभिनेता पुरस्कार दिया गया। वे जाने-माने फिल्म अभिनेता डॉ० राजकुमार के सबसे छोटे पुत्र हैं।

Master Puneet has acted in over 10 Kannada films. He has won the Best Child Actor award of the Karnataka Government twice for his performance in the Kannada films CHALISUVA MOODAGALU and ERADU NAKSHATRAGALU (in dual role). He is the youngest son of the well-known film artiste, Dr. Rajkumar.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

हितेन्द्र घोष

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1985 का पुरस्कार हितेन्द्र घोष को हिन्दी फिल्म एक पल में फिल्म के वातावरण के अनुरूप ध्वनि संयोजन के कुशल उपयोग के लिए दिया गया है।

award for the best audiography

HITENDRA GHOSH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000

citation

The Award for the Best Audiography of 1985 is given to HITENDRA GHOSH for his work in the Hindi film EK PAL for his masterly use of the sound track in keeping with the atmosphere of the film.



हितेन्द्र घोष ध्वनि आलेखन के क्षेत्र में कई पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। वे श्याम बेनेगल, गोविन्द निहलानी, राहुल रवेल और सुभाष घई की सभी फिल्मों से संबद्ध रहे हैं।

Hitendra Ghosh has won several awards in the field of audiography. He has been associated with all the films of Shyam Benegal, Govind Nihalani, Rahul Rawail and Subhash Ghai.

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

बाबू शेख

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सम्पादन का 1985 का पुरस्कार बाबू शेख को हिन्दी फिल्म हम नौजवान में उनके दक्ष सम्पादन, जिससे फिल्म और अधिक प्रभावपूर्ण बनी है, के लिए दिया गया है।

award for the best editing

BABU SHEIKH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000.

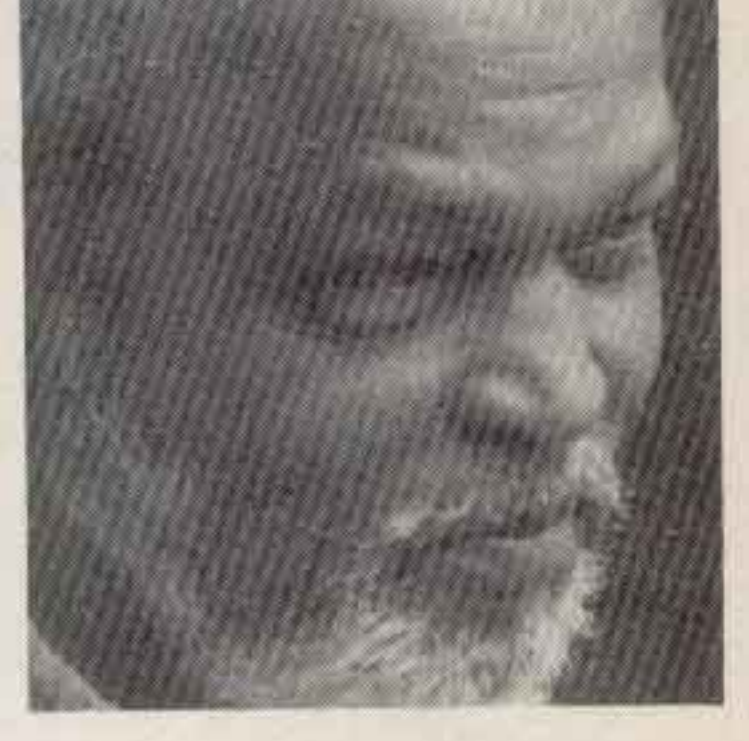
citation

The Award for the Best Editing of 1985 is given to BABU SHEIKH for his work in the Hindi film HUM NAUJAWAN which, due to his slick editing becomes more effective.



बाबू शेख ने अपना फिल्मी जीवन प्रभात फिल्म कंपनी के संपादन विभाग में प्रशिक्षणार्थी के रूप में शुरू किया तथा वे 1957 में नवकेतन में कार्य करने लगे। उनकी प्रथम फिल्म तेरे घर के सामने संपादन कार्य के लिए बेहद सराही गई। महाराष्ट्र राज्य सरकार ने उन्हें मराठी फिल्म शान्तता कोर्ट चालू आहे में सर्वोत्तम संपादन के लिए पुरस्कार से सम्मानित किया।

Babu Sheikh started his career as an apprentice in the Editing Department of Prabhat Film Co. He joined Navketan in 1957. The first film he edited, TERE GHAR KE SAMNE, won acclaim for editing. He won the Maharashtra Government's award as the Best Editor for the Marathi film SHANTATA COURT CHALU AHE.



मधुकर मेघश्याम रूपजी आवास और भवन निर्माण उद्योग से संबद्ध हैं।

सुधा चिताले व्यापार, विशेषकर भवन निर्माण उद्योग में सक्रिय हैं।

विनय नेवलकर ने बंबई के जे.जे. व्यावहारिक कला संस्थान से डिप्लोमा प्राप्त किया। फिल्म उद्योग में उन्होंने वी.के. मूर्ति और पद्मनाभ के सहायक के रूप में प्रवेश किया। वे प्रशिक्षित कठपुतली फलाकार भी हैं।

इन तीनों द्वारा निर्मित पहली फिल्म 'शापित' को दो राष्ट्रीय तथा आठ राज्य पुरस्कार मिले।

राजदत्त लगभग 30 वर्षों से मराठी फिल्मों में काम कर रहे हैं। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन अभिनेता-निर्देशक राजा परांजपे के सहायक के रूप में प्रारंभ किया। उन्होंने 1965 में सबसे पहले मधुचन्द्र फिल्म का निर्देशन किया। वे चर्ची रानी और अपराध फिल्मों के लिए राज्य पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। पुरस्कार विजेता फिल्म 'शापित' का भी निर्देशन राजदत्त ने ही किया।

Madhukar Meghashyam Rupji is concerned with housing and construction industries.

Sudha Chitale is active in business, particularly in construction industry.

A diploma holder from Bombay's J.J. Institute of Applied Art, Vinay Newalkar entered the film industry as an assistant to V.K. Murthy and Padmanabh. He is also a trained puppeteer.

The first film produced by the trio, SHAPIT, won two national and eight state awards.

Rajdatt has been in Marathi films for nearly thirty years. He started as assistant to the actor-director, Raaja Paranjape. The first film he directed was MADHUCHANDRA in 1965. He has won state awards for CHARCHI RANI and APRADH. The award-winning film SHAPIT was also directed by him.

सर्वोत्तम मराठी फिल्म पुरस्कार

पुढचे पाऊल

निर्माता मधुकर रूपजी, सुधा ए. चिताले, विनय नेवलकर को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक राजदत्त को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मराठी फिल्म का 1985 का पुरस्कार **पुढचे पाऊल** को दिया गया है जो सशक्त सामाजिक संदेश लिए हुए है और जिसमें दहेज की बुराई का पर्दाफाश किया गया है तथा ये बताया गया है कि सामाजिक दंड ही इसका एकमात्र समाधान है।

award for the best marathi film

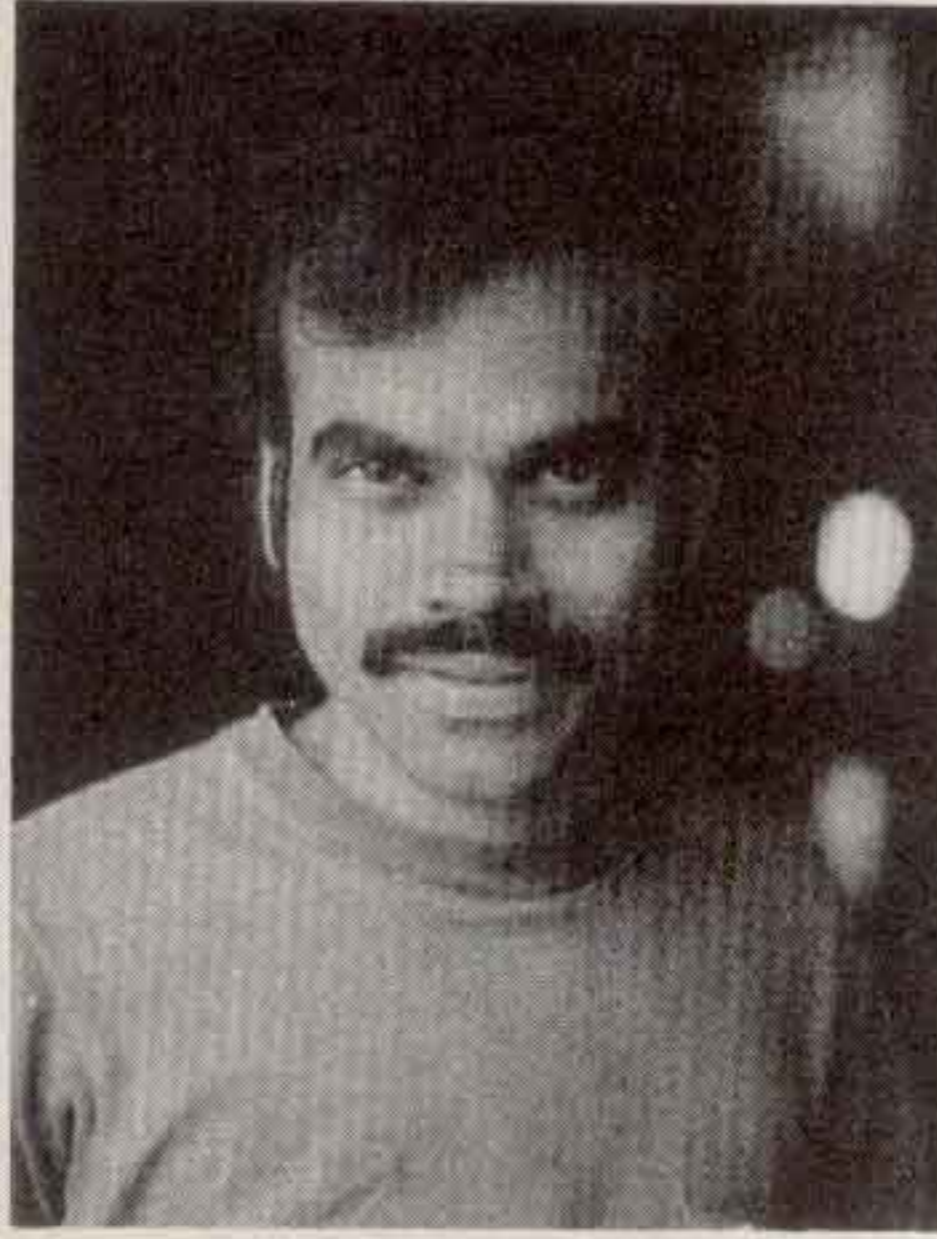
PUDHCHE PAOOL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producers, Madhukar Rupji, Sudha A. Chitale, Vinay Newalkar.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Director, Rajdatt.

citation

The Award for the Best Marathi Film of 1985 is given to PUDHCHE PAOOL for a film with a powerful social content, exposing the evil of dowry and underlining that the only solution is social censure.



श्याम भुटकर रेखाकला और चित्रकला की शिक्षा प्राप्त हैं, जो पिछले 10 वर्षों से अनेक नाटकों की मंच-सज्जा का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने 1980-81 में बंबई राज्य नाटक प्रतिस्पर्धा में सर्वोत्तम मंच-सज्जा का पुरस्कार प्राप्त किया।

Qualified in drawing and painting, Sham Bhutkar has designed sets for a number of theatre groups over the last ten years. He won the best set-design award in the state drama competition in Bombay in 1980-81.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

इलयाराजा

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1985 का पुरस्कार इलयाराजा को तमिल फिल्म सिन्धु भैरवी में लोक और शास्त्रीय संगीत के कल्पनापूर्ण सामंजस्य के लिए दिया गया है जिससे कहानी और सशक्त बन गई है।

award for the best music direction

ILAIYARAJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Music Direction of 1985 is given to ILAIYARAJA for his work in the Tamil film SINDHU BHAIRAVI for innovative blending of folk and classical music which lends strength and power to the story.



इलयाराजा अपनी पहली फिल्म अन्नाकिली से ही प्रसिद्ध हो गए। वे 100 से अधिक फिल्मों में संगीत दे चुके हैं। उन्हें 1983 में तेलुगु फिल्म सागर संगमम् के लिए सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

Winning fame and popularity with his very first film, ANNAKILI, Ilaiyaraaja has more than one hundred films to his credit. He won national award for the best music direction of 1983 for his work in the Telugu film SAAGARA SANGAMAM.

सर्वोत्तम गीत पुरस्कार

वैरामुथु

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीत का 1985 का पुरस्कार वैरामुथु को तमिल फिल्म मुधल मरियाधई में लोक-बिम्बों और शैली के कल्पनापूर्ण उपयोग के लिए दिया गया है जो फिल्म की कलात्मक और ग्रामीण पृष्ठभूमि में घुल-मिल जाता है।

award for the best lyric

VAIRAMUTHU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000.

citation

The Award for the Best Lyric of 1985 is given to VAIRAMUTHU for his work in the Tamil film MUDAL MARIYADHAI for imaginative use of folk images and form which blend with the pastoral and idyllic backdrop of the film.



वैरामुथु एक अग्रणी लेखक और कवि हैं। वे तमिल फिल्मों के लिए 500 से अधिक गीत लिख चुके हैं। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं।

A pioneer in writing prose-poem and a prolific writer of essays, Vairamuthu has written more than 500 songs for Tamil films. He has authored a number of books.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

जयचन्द्रन

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1985 का पुरस्कार जयचन्द्रन को मलयालम फिल्म श्री नारायण गुरु में फिल्म के विषय के अनुरूप भक्ति-गीतों को उत्कृष्ट ढंग से गाने के लिए दिया गया है।

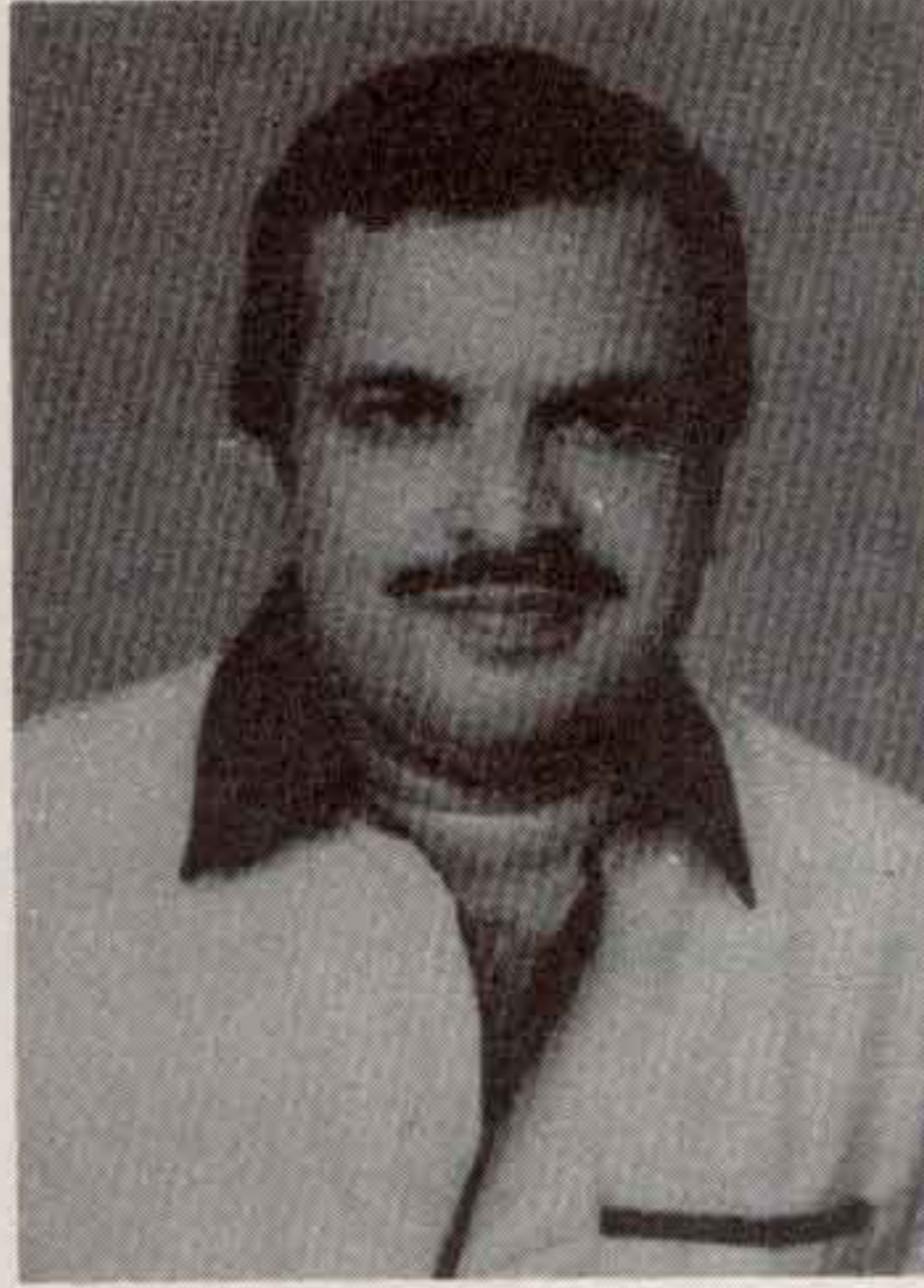
award for the best male playback singer

JAYACHANDRAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1985 is given to JAYACHANDRAN for his work in the Malayalam film SHRI NARAYANA GURU for his superb rendering of devotional songs keeping in tune with the subject matter of the film.



जयचन्द्रन केरल विश्वविद्यालय से विज्ञान के स्नातक हैं। उन्होंने फिल्मों के लिए गायन 1965 में शुरू किया। वे सभी दक्षिण भारतीय भाषाओं में गीत गा चुके हैं। उन्हें 1972 और 1978 में सर्वोत्तम पार्श्व गायक का केरल राज्य पुरस्कार प्रदान किया गया। वे मलयालम फिल्मों में अभिनय भी कर चुके हैं।

A science graduate of the Kerala University, Jayachandran started singing for films in 1965. He has sung in all the South Indian languages. He won the Kerala State award for the best male playback singer in 1972 and 1978. He has also acted in Malayalam films.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

चित्रा

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1985 का पुरस्कार चित्रा को तमिल फिल्म सिन्धु भैरवी में लोक-गीतों तथा शास्त्रीय गीतों के मधुर गायन और दोनों शैलियों में माधुर्यपूर्ण सामंजस्य पैदा करने के लिए दिया गया है।

award for the best female playback singer

CHITRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1985 is given to CHITRA for her work in the Tamil film SINDHU BHAIRAVI for melifluous rendering of songs, both in the folk and the classical moulds, bringing about a melodious synthesis between the two.



चित्रा त्रिवेन्द्रम की रहने वाली हैं और के.जे. येसुदास के साथ मंच पर गायी रही हैं। उन्होंने मलयालम फिल्मों में पार्श्व गायन शुरू किया और तमिल फिल्मों में उन्हें इलयाराजा लाए।

Hailing from Trivandrum, CHITRA sang along with K.J. Yesudass on the stage. She got a break in playback singing in Malayalam films. She was introduced to Tamil films by Ilaiyaraja.

सर्वोत्तम वेशभूषा पुरस्कार

सबा जैदी

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषा का 1985 का पुरस्कार सबा जैदी को हिन्दी फिल्म त्रिकाल में इस काल की फिल्म में रचनात्मक प्रयोजन के अनुरूप वेशभूषा के प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

award for the best costume designing

SABA ZAIDI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000

citation

The Award for the Best Costume Designing of 1985 is given to SABA ZAIDI for her work in the Hindi film TRIKAL for creatively designing appropriate costumes for this period film, thereby lending authenticity to the milieu.



राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से डिप्लोमा प्राप्त सबा जैदी ने मंच, दूरदर्शन और फिल्मों में निर्देशक, वेशभूषाकार, अध्यापक तथा पटकथा लेखक के रूप में कार्य किया। उन्होंने 100 से अधिक दूरदर्शन-नाटकों, वृत्तचित्रों, कथाचित्रों, नृत्य, संगीत और साहित्यिक-कार्यक्रमों का निर्देशन व निर्माण कार्य किया। 50 से अधिक मंच-नाटकों में निर्देशन, सज्जा और अभिनय के अतिरिक्त उन्होंने जुनून, मण्डी, शतरंज के खिलाड़ी, कहां से कहां गुजर गया, रेजर एज और किस्सा कुर्सी का कथाचित्रों के लिए वेशभूषा और सजावट का कार्य किया है। आजकल वे दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र में नाटक निर्माता हैं।

A diploma holder from the National School of Drama, Saba Zaidi has worked as director, designer, teacher and script writer for the stage, television and films. She has directed and produced more than 100 TV plays, documentaries, features, dance, music and literary programmes. Besides directing, designing and acting in more than 50 stage plays, she has designed costumes and decor for the films JUNOON, MANDI, SHATRANJ KE KHILARI, KAHAN KAHAN SE GUZAR GAYA, RAZOR EDGE AND KISSA KURSI KA. She is currently Drama Producer in Doordarshan Kendra, Delhi.

विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार

सुधा चन्द्रन

रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

विशेष निर्णायक मंडल का 1985 का पुरस्कार सुधा चन्द्रन को तेलुगु फिल्म मयूरी में अभिनय के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने फिल्मों में अपने पहले अभिनय में अपनी ही जीवन-गाथा को साहस तथा संकल्प के साथ विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत किया है।

special jury award

SUDHA CHANDRAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.5,000.

citation

The Special Jury Award for 1985 is given to SUDHA CHANDRAN for her work in the Telugu film MAYURI in which, in her first screen appearance, she convincingly recreates her own life-story with courage and determination.



सुधाचन्द्रन की 1981 में सड़क दुर्घटना में एक टांग कट गई। फिर से भरतनाट्यम् नर्तकी बनने के संकल्प से प्रेरित होकर होकर सुधा ने जयपुर जाकर जाने-माने चिकित्सक डॉ० पी.के. सेठी से जयपुर पैर लगवाया। उन्होंने फिर से नृत्य का अभ्यास किया। अपनी विकलांगता के बावजूद सुधा पहले की तरह कुशल नर्तकी बन गई। सुधा को असामान्य साहस और श्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कार प्रदान किए जा चुके हैं।

Sudha Chandran lost her leg in a road accident in 1981. Determined to be a Bharata Natyam dancer again, Sudha got a 'Jaipur Foot' fitted to her by the renowned Dr. P.K. Sethi of Jaipur. She practised dancing again. Overcoming her handicap, Sudha regained her former skill. For her rare courage and outstanding achievement, Sudha Chandran has been conferred many awards.

सर्वोत्तम असमिया फिल्म पुरस्कार

अग्निस्नान

निर्माता डॉ० भबेन्द्र नाथ साइकिया को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक डॉ० भबेन्द्र नाथ साइकिया को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया फिल्म का 1985 का पुरस्कार अग्निस्नान को एक विख्यात असमिया उपन्यास पर आधारित एक सशक्त फिल्म में एक औरत की सत्यपरीक्षा का सजीव चित्रण करने एवं विद्रोह की भावना और अंत में विजयी होने के लिए दिया गया है।

award for the best assamese film

AGNISNAAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producer, Dr. Bhabendra Nath Saikia.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Director, Dr. Bhabendra Nath Saikia.

citation

The Award for the Best Assamese Film of 1985 is given to AGNISNAAN for a powerful film based on a well-known Assamese novel, portraying the ordeals of a woman who revolts and finally overcomes.



डॉ० भबेन्द्र नाथ साइकिया असम के विख्यात लेखक हैं और कला-संस्कृति तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी अग्रणी भूमिका रही है। वे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किए जा चुके हैं। उनकी पहली फिल्म **संध्याराग** को 1977 में रजत कमल दिया गया। उनकी दूसरी फिल्म **अनिरबान** को भी 1981 में रजत कमल मिला। **अग्निस्नान** को भी इस वर्ष रजत कमल प्रदान किया गया है। डॉ० साइकिया ने लंदन विश्वविद्यालय से भौतिक शास्त्र में डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की है। इस समय वे प्रान्तिक (पाक्षिक पत्रिका) के मुख्य संपादक और सोफुरा (मासिक बाल पत्रिका) के संपादक हैं।

A major creative writer of Assam and a Sahitya Akademi award winner, Dr. Bhabendra Nath Saikia has a most distinctive record of activities in art, culture and education. His first film, SANDHYARAG was given the Rajat Kamal in 1977. His second film ANIRBAAN won the Rajat Kamal in 1981. AGNISNAAN has also won the Rajat Kamal this year. Dr. Saikia has a doctoral degree in physics from the London University. He is at present Chief Editor, Prantik (fortnightly magazine) and Editor, Sofura (monthly children's magazine).

सर्वोत्तम बंगला फिल्म पुरस्कार

परमा

निर्माता निर्मल कुमार गुहा, निहारेन्दु गुहा, सुखेन्दु गुहा, सरोजेन्दु गुहा को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक अपर्णा सेन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला फिल्म का 1985 का पुरस्कार परमा को एक औरत के भावनात्मक पहलू, जिसमें समाज द्वारा लगाए गए दोषों को अस्वीकारने, के संवेदनात्मक चित्रण के लिए दिया गया है।

award for the best bengali film

PARAMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producers, Nirmal Kumar Guha, Niharendu Guha, Sukhendu Guha, Sarojendu Guha.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Director, Aparna Sen.

citation

The Award for the Best Bengali film of 1985 is given to PARAMA, a film which handles sensitively the delicate story of a woman who refuses to accept the feeling of guilt forced on her by society.



निर्मल कुमार गुहा, निहारेन्दु गुहा, सुखेन्दु गुहा और सरोजेन्दु गुहा फिल्म निर्माण और वितरण में भागीदार हैं। वे मृणालसेन की फिल्में एक दिन प्रतिदिन के वितरक और बिमल राय की फिल्म दुति पटा के निर्माता-वितरक हैं।

अपर्णा सेन ने अपना फिल्मी जीवन 1961 से सत्यजीत रे की फिल्म समाप्ति, तीन कन्या से शुरू किया। उन्होंने बंगला, हिन्दी तथा अंग्रेजी फिल्मों में अभिनय किया है। निर्देशक के रूप में 1981 में उनकी पहली फिल्म 36 चौरंगी लेन थी जिसे देश एवं विदेश में काफी सराहा गया। परमा उनके द्वारा निर्देशित दूसरी फिल्म है।

Nirmal Kumar Guha, Niharendu Guha, Sukhendu Guha and Sarojendu Guha are partners in film production and distribution enterprise. They are distributors for Mrinal Sen's EK DIN PARATI DIN and producer-distributor for Bimal Roy's DUTI PATA.

Introduced to film acting by Satyajit Ray in 1961 in his SAMAPTI, the concluding part of TEEN KANYA, Aparna Sen has acted in Bengali, Hindi and English films. In 1981, she directed her first film 36 CHOWRINGHEE LANE which won critical acclaim. PARAMA is her second film as director.

सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म पुरस्कार

अनन्त यात्रा

निर्माता नचिकेत पटवर्धन को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक दम्पति नचिकेत और जयू पटवर्धन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म का 1985 का पुरस्कार अनन्त यात्रा को प्रौढ़ावस्था के एक अधिकारी की कुंठाओं के सम-सामयिक विषय को यथार्थ और कल्पना का सम्मिश्रण करके हास्य और व्यंग्य के साथ प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best hindi film

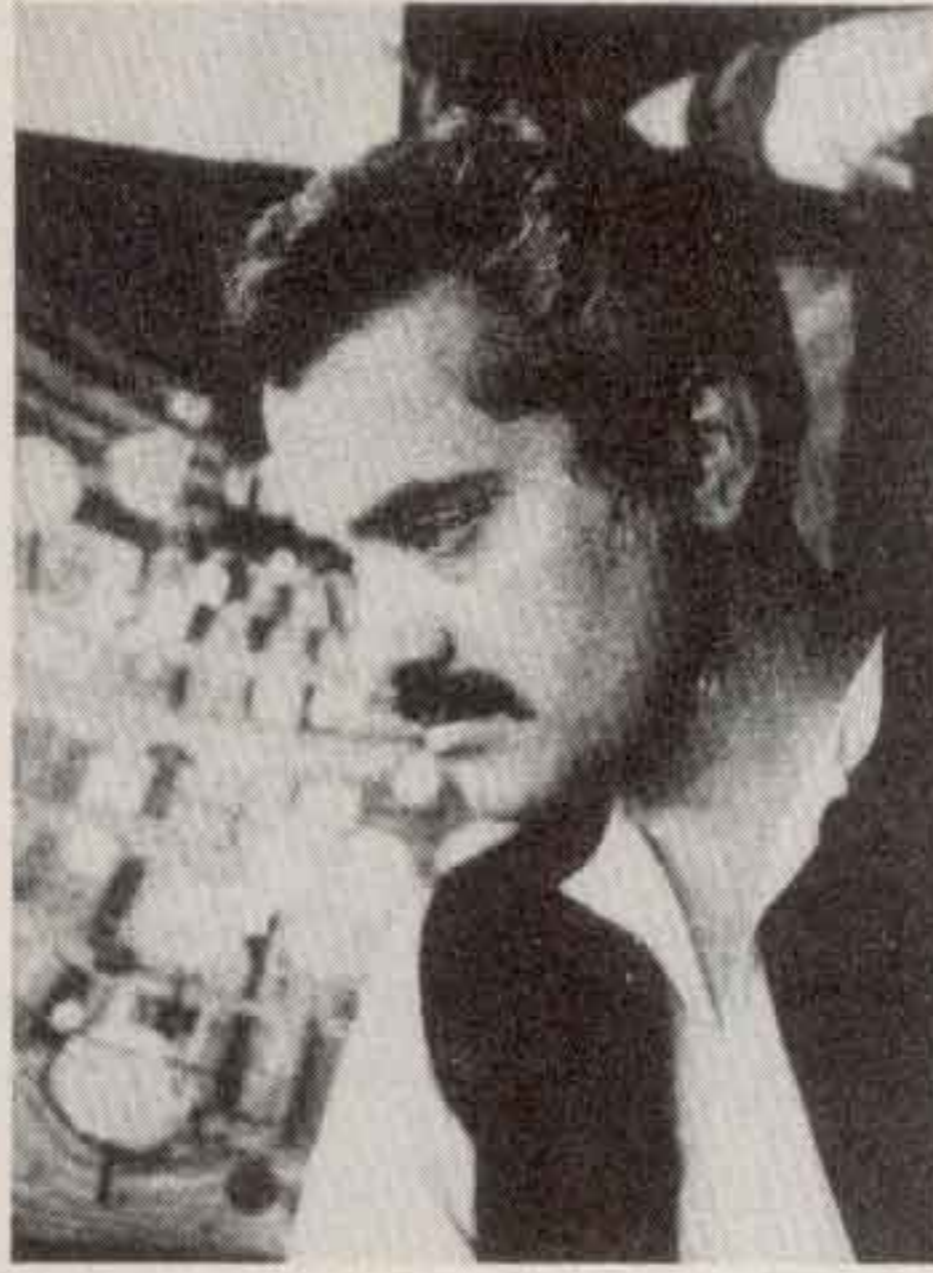
ANANTYATRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producer, Nachiket Patwardhan.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Directors, Nachiket and Jayoo Patwardhan.

citation

The Award for the Best Hindi Film of 1985 is given to ANANTYATRA, an unusual film blending fact and fantasy, dealing with the contemporary subject of the frustrations of a middle-aged executive, presented with wit and humour.



नचिकेत और जयू पटवर्धन मूलतः वास्तुकार हैं। उन्होंने फिल्मों में 1977 में घासीराम कोतवाल फिल्म में वेशभूषाकार और कला निर्देशक के रूप में प्रवेश किया। निर्माता और निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म 22 जून 1897 को राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र और सर्वोत्तम कला निर्देशन का पुरस्कार मिला। 1984 में उन्हें उत्सव फिल्म में सर्वोत्तम कला निर्देशन का पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे मोहन जोशी हाज़िर हो तथा ओन्डोनोन्डु कलाडल्ली फिल्मों में भी कला निर्देशन कर चुके हैं।

The involvement of Nachiket and Jayoo Patwardhan, architects, in films began in 1977 with art direction and costume designing for GHASIRAM KOTWAL. The first film they produced, directed and provided art direction, 22 JUNE 1897, won the award for the Best Feature Film on National Integration besides the award for art direction. UTSAV won them the award for the Best Art Direction in 1984. They have also worked as art directors for MOHAN JOSHI HAZIR HO and ONDONONDU KALADALLI.

सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म पुरस्कार

बेट्टाडा हूवु

निर्माता पर्वतम्मा राजकुमार को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक एन. लक्ष्मीनारायण को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म का 1985 का पुरस्कार बेट्टाडा हूवु को दिया गया है जो आर्थिक-सामाजिक अभावों की एक भावपूर्ण कहानी पर गीतात्मक पृष्ठभूमि में कुशलतापूर्वक बनाई गई फिल्म है।

award for the best kannada film

BETTADA HOOVU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producer, Parvathamma.Rajkumar.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Director, N. Lakshminarayan.

citation

The Award for the Best Kannada Film of 1985 is given to BETTADA HOOVU, a well-made film with a sensitive story of socio-economic deprivation told against a lyrical backdrop.



पर्वतम्मा राजकुमार त्रिमूर्ति होवेनेहेडे, रविचन्द्र, शंकरगुरु, चालीसुवा मुडगालु और हालुजेनु जैसी प्रसिद्ध कन्नड़ फिल्मों का निर्माण कर चुकी हैं। इनमें से अंतिम फिल्म को राज्य सरकार की ओर से पुरस्कृत किया गया है। वे सुप्रसिद्ध कन्नड़ फिल्म अभिनेता डॉ० राजकुमार की पत्नी हैं।

एन. लक्ष्मीनारायण ने 1961 में उस समय फिल्मों में प्रवेश किया जब उन्होंने लंदन के ब्रिटिश फिल्म संस्थान के प्रयोगात्मक फिल्म कार्यक्रम के अन्तर्गत लघु चित्र ब्लिस का निर्माण किया। 1962 के सेन फ्रांसिसको अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में उन्हें पुरस्कार मिला। वे नान्दी, उईयाले, मुक्ति, अबचुरीना पोस्टऑफिस और मूई फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। उनकी सभी फिल्मों को देश तथा विदेश में सराहा गया है।

Parvathamma Rajkumar has produced the well-known Kannada films TRIMURTHI, HAAVENA HEDE, RAVICHANDRA, SHANKARA GURU, CHALISUVA MOODAGALU and HAALU JENU. The last film won awards from the State Government. She is married to the well-known Kannada film artiste, Dr. Rajkumar.

N. Lakshminarayan first appeared in the film firmament in 1961 with his short film BLISS produced under the Experimental Film Programme of the British Film Institute, London. He won recognition in U.S.A. with an award at the 1962 San Francisco International Film Festival. He had earlier directed five feature films; NAANDI, UYYALE, MUKTI, ABACHURINA POSTOFFICE and MUYYI. All the films have won awards at home and acclaim abroad.

सर्वोत्तम मलयालम फिल्म पुरस्कार

थिनकलाएचा नल्ला दिवसम्

निर्माता एम. मणि को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक पी. पद्मराजन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम फिल्म का 1985 का पुरस्कार थिनकलाएचा नल्ला दिवसम् को दिया गया है जिसमें ग्रामीण वातावरण में ऐसे परिवार के संबंधों की परतों को उजागर किया गया है जो शहरी संस्कृति के थपेड़ों से डगमगा रहा है और ये बताया गया है कि किस तरह एक व्यक्ति की मृत्यु से संयुक्त परिवार टूटने से बच जाता है।

award for the best malayalam film

THINKALAZCHA NALLA DIVASAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producer, M. Mani.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Director, P. Padmarajan.

citation

The Award for the Best Malayalam Film of 1985 is given to THINKALAZCHA NALLA DIVASAM which explores the layers of family relationship in a rural setting threatened by urban culture and explains how the imminent breakdown of the joint family is prevented by a death.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

श्याम भुटकर

रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1985 का पुरस्कार श्याम भुटकर को हिन्दी फिल्म राव साहिब में शताब्दी के प्रारंभिक समय की प्रामाणिक रचना की मंच-सज्जा के लिए दिया गया है।

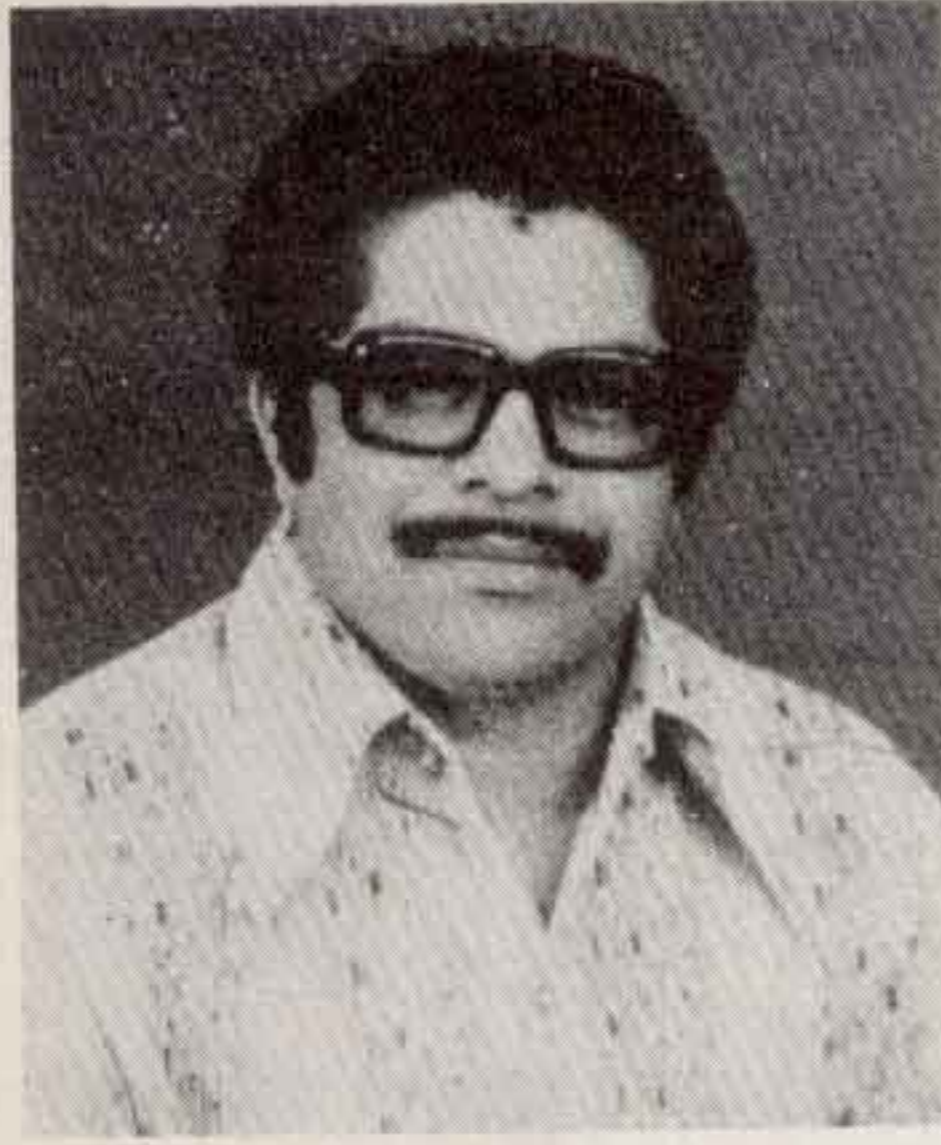
award for the best art direction

SHAM BHUTKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000.

citation

The Award for the Best Art Direction of 1985 is given to SHAM BHUTKAR for his work in the Hindi film RAO SAHEB for the authentic creation of a setting of the early years of the century.



एम. मणि ने 1976 में अपनी पहली फिल्म **धीर समीरे यमुना तीरे** का निर्माण किया। वे अब तक मलयालम में 23 फिल्मों बना चुके हैं। जिनमें से 7 का निर्देशन भी उन्होंने किया है। उनके द्वारा निर्मित ताजा फिल्म **लव स्टोरी** है और उनके निर्देशन में बनी ताजा फिल्म **अन्नाकुरुम्मा** है।

पी. पद्मराजन कुशल कहानीकार और उपन्यासकार हैं। वे साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने सबसे पहले 1979 में **पेरुवाजीय अम्बलम** फिल्म का निर्देशन किया और कई राष्ट्रीय तथा राज्य पुरस्कार प्राप्त किए। इनमें रजत कमल भी शामिल हैं। उनकी अन्य फिल्मों हैं—**कल्लन पवित्रम**, **ओरिडाथोरु फायलवान**, **नोवमबेरिंटे नष्टम**, **कुडेविडे**, **परन्नु परन्नु परन्नु** और **अरापट्टा केट्टिया ग्रामथिल**। पद्मराजन पटकथा लेखक के रूप में भी अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

Beginning with **DHEERASAMEERE YAMUNA THEERE** in 1976, M. Mani has produced 23 films in Malayalam, also directing seven of them. His latest production is **LOVE STORY** and directorial venture, **ANAKKORUMMA**.

A prolific short-story and novel writer and winner of Sahitya Akademi award, P. Padmarajan made his first film, **PERUVAZHIIYAMBALAM** in 1979 and won a number of national and state awards, including the Silver Lotus. His other films are **KALLAN PAVITHRAN**, **ORIDATHORU PHAYALVAAN**, **NOVEMBERINTE NASHTAM**, **KOODEVIDE**, **PARANNU-PARANNU-PARANNU** and **ARAPPATTA KETTIYA GRAAMATHIL**. Padmarajan has won several distinctions also as a screenplay writer.

सर्वोत्तम उड़िया फिल्म पुरस्कार

हाकिम बाबू

निर्माता अमिय पटनायक को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक प्रणव दास को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया फिल्म का 1985 का पुरस्कार हाकिम बाबू को दिया गया है जिसमें नौकरशाही पर करारी टिप्पणी की गई है, जो एक आदर्शवादी अधिकारी को असहाय और अपने उद्देश्यों को पाने में असमर्थ बना देती है।

award for the best oriya film

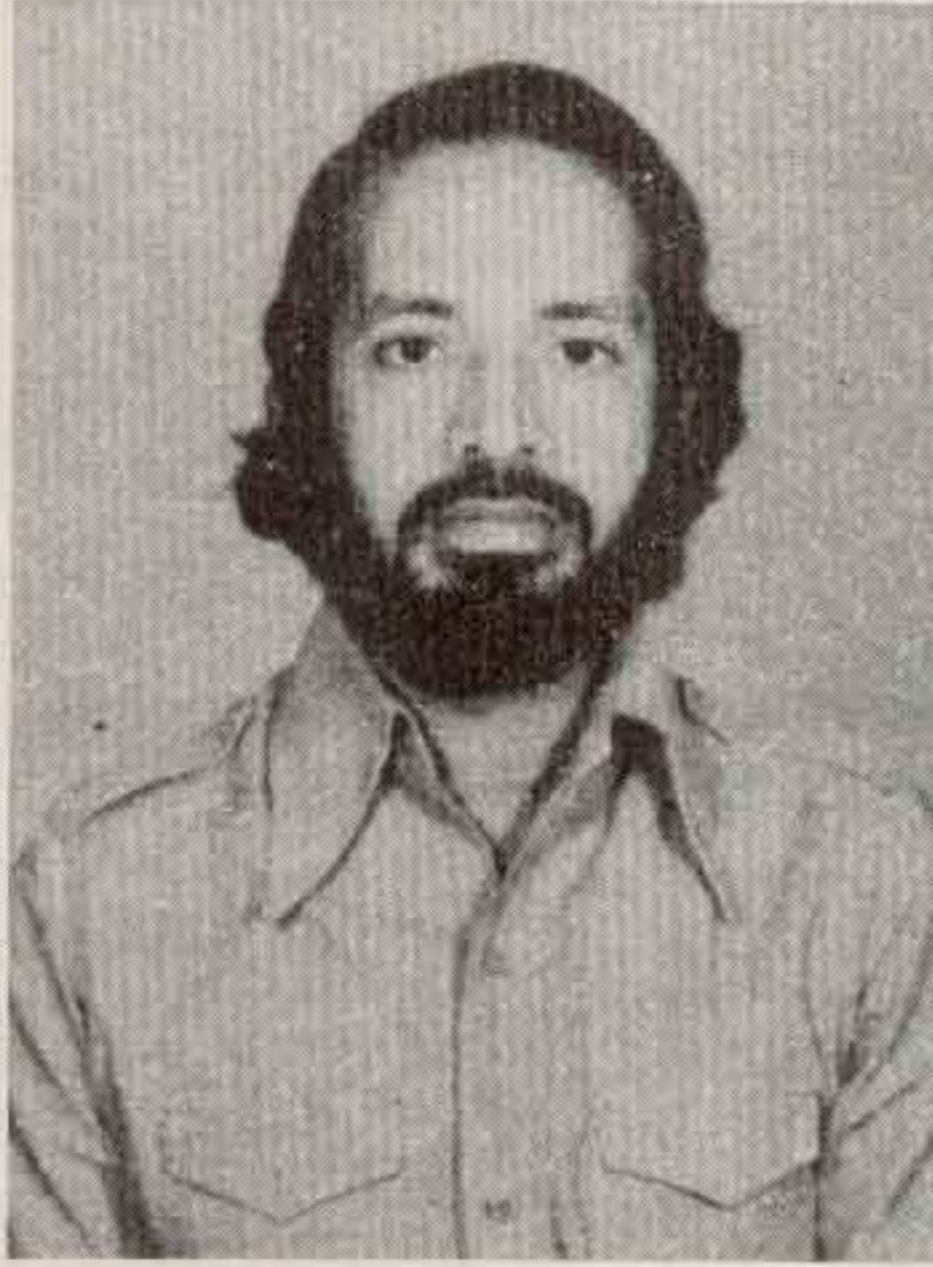
HAKIM BABU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producer, Amiya Patnaik

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to the Director,Pranah Das.

citation

The Award for the Best Oriya Film of 1985 is given to HAKIM BABU,a film which makes a powerful comment on the bureaucratic system which renders even an idealistic officer helpless and unable to realise his own objectives.



अरूण खोपकर ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा किया। भारतीय सिनेमा के बारे में उनके कई शोधपत्र एवं लेख छप चुके हैं। 1978 में उन्हें लघु चित्र टोबैको हैबिट्स एंड ओरल कैंसर के लिए निर्देशक और सह निर्माता का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। वे लगभग 20 लघु चित्रों के पटकथा लेखक और निर्देशक रहे हैं। उन्होंने मणि कौल की फिल्म आषाढ़ का एक दिन में मुख्य भूमिका निभाई।

A diploma holder from the FTII, Arun Khopkar has contributed research papers and popular articles on Indian Cinema. He won national award as director and co-producer for the short film TOBACCO HABITS AND ORAL CANCER in 1978. He has scripted and directed about 20 short films. He played the male lead in Mani Kaul's film ASHADH KA EK DIN.

विशेष उल्लेख

गैर कथाचित्र निर्णायक मंडल ने महत्वपूर्ण विशेषता वाली निम्नलिखित फिल्मों का विशेष उल्लेख किया:

1. प्रिजनर्स ऑफ सरकमस्टेंसिज

रिमांड गृहों में बच्चों के साथ अमानवीय व्यवहार के निष्पक्ष प्रस्तुतीकरण के लिए।

2. अनुकरण

भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव के पैंने चित्रण के लिए।

पुरस्कार : जो नहीं दिए गए

कथाचित्र निर्णायक मंडल ने निम्नलिखित पुरस्कार नहीं दिए :

1. सर्वोत्तम लघु नियोजित परिवार प्रेरक फिल्म पुरस्कार
2. मद्य निषेध पर सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार
3. लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म पुरस्कार। इस वर्ग में कोई प्रविष्टि नहीं आई।

गैर कथाचित्र फिल्म निर्णायक मंडल ने सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म के पुरस्कार के लिए किसी फिल्म की सिफारिश नहीं की।

सिनेमा के बारे में सर्वोत्तम लेखन निर्णायक मंडल ने सर्वोत्तम फिल्म पत्रकार के 1985 के पुरस्कार के लिए किसी के नाम की सिफारिश नहीं की।

special mention

The Non-Feature Film Jury made a SPECIAL MENTION of the following films of notable distinction:

1. Prisoners of circumstances

for its objective presentation of the inhuman treatment of children in remand homes.

2. Anukaran

for a poignant portryal of discrimination against women in Indian society

awards not given

The Feature Film Jury did not give the following awards:

1. Best Film Promoting Small Planned Family
2. Best Film on Prohibition.
3. Award for Best Film providing popular and wholesome entertainment. There were no entries in this category.

The Non-Feature Film Jury did not recommend any film for the award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film.

The Jury for the Best Writing on Cinema did not recommend anyone for the award for the Best Film Journalist of 1985.



आजादी की ओर

हिन्दी/105 मिनट

निर्माता संगीतालय, निर्देशक/पटकथा लेखक/छायाकार पी.एस. प्रकाश, ध्वनि आलेखक एस. सेल्वराज, संपादक के. बालू, कला निर्देशक भास्कर राजू, वेशभूषाकार विजय बाबू, संगीत निर्देशक रमेश नायडू।

बंदर और बंदरी शंकर और गौरी का जोड़ा मानव आचरण को बखूबी अभिव्यक्त करता है। शंकर अपनी दासता की बेड़ियां तोड़कर चला जाता है और गौरी को वहीं छोड़ जाता है। आजादी की अपनी ललक में वह एक सांप को सपेरे के शिकंजे से मुक्त करा देता है और मृत्युशैया पर पड़ी एक हथिनी को सांत्वना देता है। शंकर जुदाई की पीड़ा सहन नहीं कर पाता और गौरी को भी मुक्त कराने के लिए वापस आ जाता है। इसके बाद मनुष्य और बंदर में घमासान लड़ाई होती है जिसमें वह सांप शंकर की मदद करके उसे विजय दिलाता है जिसे शंकर ने आजाद कराया था।

AAZADI KI ORE

Hindi/105 mins.

Producer Sangeethalaya **Director/Screenplay Writer/Cameraman** P.S. Prakash **Adudiographer** S. Selvaraj **Editor** K. Balu **Art Director** Bhaskar Raju **Costume Designer** Vijaya Babu **Music Director** Ramesh Naidu

Shanker and Gowri, the monkey pair, make profound statements on human behaviour. Shanker breaks away from his enslavement leaving Gowri behind. In his quest for freedom, he sets free a cobra from the clutches of the snake charmer and consoles a dying mother elephant. The pangs of separation are too much for Shanker to bear and he returns to liberate Gowri. In the free-for-all that follows between Monkey and Man, Shanker and Gowri are helped to triumph by the cobra that Shanker had earlier freed.



अग्निस्नान

असमिया/155 मिनिट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक वी.एन. साइकिया, मुख्य अभिनेता बीजू फुकन, मुख्य अभिनेत्री मलया गोस्वामी, सह अभिनेता अरुण नाथ, सह अभिनेत्री कश्मीरी बरुआ, बाल कलाकार कमरुज्जमान अहमद, छायाकार कमल नायक, ध्वनि आलेखक पीयूष कांति राय, संपादक निकुंज भट्टाचार्य, कला निर्देशक पटिक बरुआ, नुरुद्दीन अहमद, वेशभूषाकार प्रीति साइकिया, संगीत निर्देशक तरुण गोस्वामी।

महिकान्त एक धनी चावल मिल मालिक है जिसमें सामंतवादी घमंड और जिद्द कूट-कूट कर भरी है। उसके तौर-तरीकों से उसकी सुंदर और निष्ठावान पत्नी मेनका, जो कि चार बच्चों की मां है, बहुत दुखी है। जब महिकान्त सारे परिवार के विरोध के बावजूद दूसरी शादी करता है तो उसकी पत्नी का दुख चरम सीमा पर पहुंच जाता है। अपने प्रति महिकान्त के बढ़ते हुए अत्याचारपूर्ण व्यवहार से उत्तेजित होकर मेनका उससे बदला लेने पर मजबूर हो जाती है। वह ऐसा बदला लेती है जो जीवन भर उसे सालता रहता है।

AGNISNAAN

Assamese/155 mins.

Producer/Director/Screenplay Writer: B.N. Saikia **Leading Actor:** Biju Phukan **Leading Actress** Malaya Goswami **Supporting Actor** Arun Nath **Supporting Actress** Kashmiri Barua **Child Artiste** Kamruzzaman Ahmed **Cameraman** Kamal Nayak **Audiographer** Pijush Kanti Roy **Editor** Nikunja Bhattacharya **Art Directors** Patik Barua, Nuruddin Ahmed **Costume Designer** Preeti Saikia **Music Director** Tarun Goswami.

Mohikanta, the rich rice mill owner, full of feudal vanity and dissolute ways, proves an ordeal to his charming and dutiful wife, Menoka, mother of four young children. Her humiliation becomes more acute when Mohikanta marries again against the wishes of the entire family. Mohikanta's increasingly brutal behaviour towards her drives Menoka to wreaking vengeance on him—a revenge that will haunt him all his life.

अलायारन

बोडो/130 मिनट

निर्माता बोडोसा फिल्म प्रोडक्शन्स, निर्देशक/छायाकार/संपादक जुंगदाओ बोडोसा, पटकथा लेखक नीलकमल ब्रह्म, हीरांबा नरजारी, मुख्य अभिनेता अमर नरजारी, मुख्य अभिनेत्री रोहिला ब्रह्म, सह अभिनेता टिकन्द्रजीत नरजारी, सह अभिनेत्री रामानी नरजारी, बाल कलाकार फिरोज ब्रह्म, ध्वनि आलेखक संजीव पुंज, कला निर्देशक/वेशभूषाकार माखन ब्रह्म, गीतकार/संगीत निर्देशक मोहिनी नरजारी, पार्श्व गायक अरुण नरजारी, पार्श्व गायिका सुलेखा बासुमतारी।

गोंबर नाम का नवयुवक एक जमींदार मोंबारु के यहां बंधुआ मजदूर हो जाता है क्योंकि उसके पिता ने जमींदार से कर्जा लिया था। मोंबारु की छोटी लड़की हिंगमाश्री के मन में गोंबर के प्रति सहानुभूति है। यह देखकर मोंबारु गोंबर को घर से निकाल देता है और धमकी देता है कि अगर पांच साल के अंदर उसने कर्जा नहीं चुकाया तो उसकी जमीन जब्त कर ली जाएगी। गोंबर जमीन छुड़ाने का निश्चय करता है और शहर में आ जाता है। वहां वह पैसा कमाने के लिए पहले लकड़ी काटता है, रिक्शा चलाता है, गाड़ी चलाता है, भार ढोने का काम करता है और अंत में होटल में नौकरी करने लगता है। होटल में संयोगवश उसकी मुलाकात एक भले व्यापारी दिगंबर से होती है जो उसे बंधुआ मजदूर से एक उद्योगपति बना देता है। गोंबर अपने पिता की जमीन छुड़ा लेता है और हिंगमाश्री से विवाह कर लेता है।

ALAYARON

Bodo/130 mins.

Producer Bodosa Film Productions **Director/Cameraman/Editor:** Jwngdao Bodosa **Screenplay Writers** Nilkamal Brahma, Hiramamba Narzary **Leading Actor** Amar Narzary **Leading Actress** Rahila Brahma **Supporting Actor** Tikandrajit Narzary **Supporting Actress** Ramani Narzary **Child Artiste** Feroz Brahma **Audiographer** Sanjeev Punj **Art Director/Costume Designer** Makhan Brahma **Lyricist/Music Director** Mohini Narzary **Male Playback Singer** Arun Narzary **Female Playback Singer** Sulekha Basumatary.

Gombor, a young man, becomes a bonded labourer in the household of Monbaru, the landlord, for the debts incurred by his father. Monbaru's younger daughter, Hangmashree is sympathetic towards Gombor. For this reason, Monbaru drives out Gombor with the threat that he would confiscate Gombor's land if he did not redeem the mortgage in five year's time. Determined to make good, Gombor comes to town. He struggles for existence, first as a firewood splitter, then a rickshaw puller, cart-puller, load-carrier and finally a hotel-boy. A chance meeting in the hotel with a well-off businessman, Digambor, provides Gombor the opening to grow from a bonded-labourer to an affluent industrialist, redeem his father's land and be united with Hangmashree.

अनन्त यात्रा

हिन्दी/110 मिनट

निर्माता नचिकेत पटवर्धन, निर्देशक/पटकथा लेखक नचिकेत और जयू, मुख्य अभिनेता सुधीर जोशी, मुख्य अभिनेत्री रोहिणी हट्टगंडी, सह अभिनेता नसीरुद्दीन शाह, सह अभिनेत्री अनुराधा पटेल, छायाकार को कुंग चियांग, ध्वनि आलेखक दिलीप सावंत, सतीश सावंत, संपादक विश्राम रेवान्कर, कला निर्देशक दिनेश मेहता, मीरा मेहता, वेशभूषाकार मीरा मेहता, गीतकार दिलीप चित्रे, राजेन्द्र धोड़पाकड़, संगीत निर्देशक हृदयनाथ मंगेशकर, पार्श्व गायक रवि साठे, पार्श्व गायिका देवकी पंडित।

अनन्त गोडबोले एक कंपनी में वरिष्ठ अधिकारी है। लेकिन वह रोजमर्रा की अपनी घिसीपिटी जिंदगी से ऊब गया है। इस बोरियत से उसे अपने रोगी होने का भ्रम हो जाता है। एक दिन उसे एक रहस्यपूर्ण टेलीफोन आता है जिससे उसका जीवन पूरी तरह बदल जाता है। एक जादूवाला उसे बताता है कि वह किसी किताब का जो भी पृष्ठ खोलेगा वह उसी लोक में पहुंच जाएगा। गोडबोले पेशवाओं के युग में पहुंच जाता है लेकिन यह दुस्साहस उसे बहुत महंगा पड़ता है। वह संकल्प करता है कि आइंदा ऐसा कभी नहीं करेगा लेकिन अगला मौका आने पर वह अपना वचन भूल जाता है। इस बार वह कालिदास की शकुंतला के पास पहुंचता है। मुसीबत तब आती है जब शकुंतला बंबई देखने की जिद्द करती है। गोडबोले उसे एक होटल में ठहराता है और कभी घर, कभी दफ्तर और कभी होटल के चक्कर लगाते हुए परेशान हो उठता है।



ANANTYATRA

Hindi/110 mins.

Producer: Nachiket Patwardhan **Directors/Screenplay Writers:** Nachiket and Jayoo **Leading Actor:** Sudhir Joshi **Leading Actress:** Rohini Hattangady **Supporting Actor:** Naseeruddin Shah **Supporting Actress:** Anooradha Patel **Cameraman:** Ko Hung Chiang **Audiographers:** Dilip Swant, Satish **Editor:** Vishram Rewankar **Art Directors:** Dinesh Mehta, Meera Mehta **Costume Designer:** Meera Mehta **Lyricists:** Dilip Chitre, Rajendra Dhodapakar **Music Director:** Hridayanath Mangeshkar **Male Playback Singer:** Ravi Sathe **Female Playback Singer:** Devaki Pandit.

Anant Godbole is a successful senior company executive. But he is fed up with his routine life. His boredom threatens to turn him into a hypochondriac. One day he gets a mysterious telephone call which completely changes his life. One Jaduwala offers him any fantasy by merely opening a book at any page. Godbole is transported to the time of the Peshwas but the adventure ends in near disaster. Godbole vows never to try the trick again but is not able to resist the temptation. This time Godbole finds himself with Kalidasa's Sakuntala. The idyllic setting gets a jolt when Sakuntala insists on visiting Bombay. Godbole has a tough time running between the office, the home and the hotel where Sakuntala is put up.



बेट्टाडा हूवु

कन्नड़/120 मिनिट

निर्माता पर्वतम्मा राजकुमार, निर्देशक/पटकथा लेखक एन. लक्ष्मीनारायण, मुख्य अभिनेता/बाल कलाकार पुनीत, मुख्य अभिनेत्री वासन्ती, सह अभिनेता मोहन कुमार, सह अभिनेत्री मार्सिया जमाल, छायाकार बी.सी. गौरीशंकर, ध्वनि आलेखक गोविन्दस्वामी, संपादक पी. भक्तवत्सलम, कला निर्देशक पाकेती रंगा, गीतकार उदय शंकर, संगीत निर्देशक राजन, नगेन्द्र, पार्श्व गायक एस.पी. बालासुब्रह्मण्यम, सी. अस्वाती, पी.बी. श्रीनिवास और मास्टर पुनीत।

एक ग्रामीण बालक रामू एक छोटे से पहाड़ी शहर में रहता है। वह पुस्तकें पढ़कर ज्ञान बढ़ाने का इच्छुक है। मजबूरी में रामू को स्कूल छोड़ना पड़ता है और अपने गरीब परिवार की मदद के लिए कमाई करनी पड़ती है। वह नौकरी कर लेता है उसकी मां उसी के कमाए हुए धन में से कुछ रुपये उसे देती रहती है जिसे वह अपनी प्रिय पुस्तक रामायण खरीदने के लिए संभालकर रख लेता है। एक अमरीकी अध्यापिका शिरले भारत के जंगली फूलों पर पुस्तक लिखने के लिए उस पहाड़ी शहर में आती है। वह रामू को जंगल से कुछ फूल लाने को कहती है और उसके बदले उसे रुपये देती है। रामू को इस बात से बहुत खुशी होती है कि इन रुपयों और अपनी बचत के रुपयों से वह रामायण खरीद सकता है। वह तत्काल पुस्तकों की दुकान पर पहुंचता है लेकिन वहां जाकर उसे अचानक याद आता है कि उसकी बहन और भाई के पास सर्दी से अपने को ढंकने के लिए कोई अच्छा कंबल नहीं है। वह रामायण खरीदने के बजाय एक कंबल खरीद लेता है।

BETTADA HOOVU

Kannada/120 mins.

Producer: Parvathamma Rajkumar **Director/Screenplay Writer:** N. Lakshminarayan **Leading Actor/Child Artiste:** Puneet **Leading Actress:** Vasanthi **Supporting Actor:** Mohan Kumar **Supporting Actress:** Marcia Jamal **Cameraman:** B. Gowri Shankar **Audio-grapher:** Govindaswamy **Editor:** P. Bhaktavatsalam **Art Director** Peketi Ranga **Lyricist:** Udaya Shankar **Music Directors:** Rajan, Nagendra **Male Playback Singers:** P. Balasubramaniam, C. Aswath, P.B. Srinivos, Master Puneet.

Ramu, a poor village boy, lives in a tiny hill station. He has a great desire to acquire knowledge through books. Ramu is required to give up his school and to earn to help the poor family. He works as an errand boy. His mother gives him a small part of the money earned by him and he saves it up to buy his favourite book 'Ramayana'. Shirley, an American teacher, who comes to the hill station to write a book on Indian wild flowers, asks Ramu to get her some rare flowers from the forest and pays him for it. Ramu is overjoyed to find that this money and his savings will be enough to buy 'Ramayana'. He rushes to the bookshop where he suddenly remembers that his sister and brother do not have a decent blanket to cover themselves with in winter. He buys a blanket instead.



चिदंबरम्

मलयालम/103 मिनिट

निर्माता सूर्यकान्ती फिल्म मेकर्स, निर्देशक/पटकथा लेखक जी. अरविन्दन, मुख्य अभिनेता गोपी, मुख्य अभिनेत्री स्मिता पाटिल, सह अभिनेता श्रीनिवासन, छायाकार शाफी, ध्वनि आलेखक पी. देवदास, संपादक बोस, कला निर्देशक नम्बूदरि, संगीत निर्देशक जी. देवराजन, पार्श्व गायिका माधुरी।

शंकरण केरल में एक सरकारी पशु फार्म में अधिकारी के रूप में काम करता है। उसे फार्म के एक मजदूर मुन्यांटी की नवविवाहिता पत्नी शिवकामी से लगाव हो जाता है। शंकरण की आसक्ति को देखकर शिवकामी भी धीरे-धीरे उसकी ओर आकर्षित हो जाती है। रात की ड्यूटी के दौरान मुन्यांटी, जिसे फील्ड सुपरवाइजर पर शक होता है, अपने घर आता है और दरवाजे पर दस्तक देता है। एक व्यक्ति तेजी से घर के पिछवाड़े से बाहर निकलता है। यह फील्ड सुपरवाइजर नहीं बल्कि शंकरण था, जिस पर मुन्यांटी ने भरोसा किया था। अगले दिन सवेरे शंकरण को पता चलता है कि मुन्यांटी ने अपनी पत्नी की हत्या का प्रयास करने के बाद खुदकशी कर ली। शंकरण अपने अपराध बोध से छुटकारा पाने के लिए फार्म छोड़कर चला जाता है। घूमते-घामते वह चिदंबरम् पहुंचता है। वहां मंदिर के निकट श्रद्धालुओं के जूतों की देख रेख करने वाली महिला जब उसकी ओर देखती है तो उसे पता चलता है कि वह शिवकामी है जो उम्र की मार से अब अपनी सुंदरता खो चुकी है। शंकरण के लिए यह यात्रा का अन्त है।

CHIDAMBARAM

Malayalam/103 mins.

Producer: Suryakanthi Film Makers **Director/Screenplay Writer:** G. Aravindan **Leading Actor:** Gopi **Leading Actress:** Smita Patil **Supporting Actor:** Sreenivasan **Cameraman:** Shafi **Audiographer:** P. Devadas **Editor:** Bose **Art Director:** Namboodiri **Music Director:** G. Devarajan **Female Playback Singer:** Madhuri.

Shankaran, a petty officer in a government cattle farm in the high ranges of Kerala, finds himself attracted to Sivakami, the newly married wife of Muniyandi, a worker on the farm. Shankaran's compassion and concern, for Sivakami in the alien setting gradually draws the woman towards him. During a forced night shift, Muniyandi, who is suspicious of the Field Supervisor's intentions, comes home and bangs on the door. A figure goes swiftly from the back of the house. It was not the Field Supervisor but Shankaran whom Muniyandi had trusted. Next morning Shankaran confronts the gruesome reality-the suicide of Muniyandi after an attempted murder of his wife. Shankaran goes away from the farm to escape from the guilt that engulfed him. In the course of his wanderings, he reaches Chidambaram. The lady who looks after the footwear of the devotees near the temple looks at him and he sees Sivakami-old and worn out. It is journey's end for him.



एक पल

हिन्दी / 130 मिनट

निर्माता भूपेन हजारिका, कल्पना लाजमी, **निर्देशक/पटकथा लेखक** कल्पना लाजमी, गुलजार, **मुख्य अभिनेता** नसीरुद्दीन शाह, **मुख्य अभिनेत्री** शबाना आजमी, **सह अभिनेता** श्रीराम लागू, **सह अभिनेत्री** दीना पाठक, **छायाकार** के.के. महाजन, **ध्वनि आलेखक** हितेन्द्र घोष, **संपादक** भानुदास दिवाकर, **कला निर्देशक** नीतीशराय, **वेशभूषाकार** सुनीला प्रधान, **शौकत कैफी**, **गीतकार** गुलजार, **संगीत निर्देशक** भूपेन हजारिका, **पार्श्व गायक** भूपेन हजारिका, भूपेन्द्र सिंह, **पार्श्व गायिका** लता मंगेशकर।

प्रियम चालिहा एक सुन्दर युवक जीत बरुआ से प्रेम करने लगती है। लेकिन उनके इस प्रेम संबंध में उस समय अचानक बाधा आ जाती है जब जीत को उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाना पड़ता है। प्रियम का दिल टूट जाता है और वह अपने पिता के कहने पर वेद हजारिका से विवाह कर लेती है। वेद हजारिका गंभीर स्वभाव का और मेहनती व्यक्ति है। वह अपने काम में बहुत व्यस्त रहता है जिससे प्रियम अपने को अकेली तथा उपेक्षित महसूस करती है। जीत विदेश से लौटता है और यह जानते हुए भी कि प्रियम अब किसी और की पत्नी है उससे पुनः संबंध बनाने की कोशिश करता है। इस बीच वेद एक वर्ष के लिए विदेश जाता है। भावावेग के एक क्षण में प्रियम जीत को आत्मसमर्पण कर देती है। वेद जब विदेश से लौटता है तो वह अपनी पत्नी को गर्भवती पाता है। रात को प्रियम बड़े दुख भरे स्वर में सच्ची बात वेद को बता देती है।

EK PAL

Hindi/130 mins.

Producers: Bhupen Hazarika, Kalpana Lajmi **Director/Screenplay Writers:** Kalpana Lajmi, Gulzar **Leading Actor:** Naseeruddin Shah **Leading Actress:** Shabana Azmi **Supporting Actor:** Shriram Lagoo **Supporting Actress:** Dina Pathak **Cameraman:** K.K. Mahajan **Audiography:** Hitendra Ghosh **Editor:** Bhanudas Diwakar **Art Director:** Nitish Roy **Costume Designers:** Sunila Pradhan, Shaukat. Kaifi **Lyricist:** Gulzar **Music Director:** Bhupen Hazarika **Male Playback Singers:** Bhupen Hazarika, Bhupinder Singh **Female Playback Singer:** Lata Mangeshkar.

Young Priyam Chaliha is swept off her feet by the flamboyant and charming Jeet Baroo. Their passionate relationship is abruptly broken when Jeet, afraid of a commitment, goes abroad for further studies. A heart-broken Priyam is persuaded by her father to accept the proposal of the serious and hardworking Ved Hazarika. With Ved getting more and more involved in his work, Priyam feels neglected and lonely. Jeet comes back and tries to resume his relationship with Priyam despite knowing she is another's wife. Ved goes abroad for a year. In a moment of unguarded emotion, Priyam yields to Jeet. Ved returns to find her pregnant. Late at night, in the quiet of the bedroom, painfully but with honesty, Priyam reveals to Ved the shattering truth.

हाकिम बाबू

उड़िया/135 मिनिट

निर्माता अमिय पटनायक, निर्देशक/पटकथा लेखक प्रणव दास, मुख्य अभिनेता अजीत दास, मुख्य अभिनेत्री जया, सह अभिनेता विजय महन्ती, मुख्य अभिनेत्री डॉली जेना, बाल कलाकार सुबोधा, छायाकार राजन किनागी, ध्वनि आलेखक कैरियर सर्विसिज, संपादक मुखतार अहमद, कला निर्देशक निखिल सेन गुप्त, वेशभूषाकार निर्मल, संगीत निर्देशक सरोज पटनायक।

खानू नाम का युवक आदिवासी लोगों का सहारा है और उसी पर उनकी आशाएं टिकी हैं। वे सब उस दिन की इंतजार में हैं जब वह उच्च शिक्षा प्राप्त करके लौटेगा और उन्हें साहूकार के शिकंजे से मुक्त कराएगा। जब खानू सरकारी अफसर बनता है और अपने बचपन की मित्र की बजाय किसी सरकारी अधिकारी की लड़की से शादी कर लेता है तो आदिवासियों को निराशा होती है। उस क्षेत्र में क्रोमाइट के भंडारों का पता चलता है। उनकी खुदाई के लिए आदिवासियों को वहां से हटाने की योजना बनती है। साहूकार व्यापार पाने के लोभ में आदिवासियों को भगाने के उद्देश्य से गांव में आग लगा देता है। आदिवासी लोगों को खानू से बड़ी निराशा होती है जो अपने आप को एकदम अकेला और असहाय पाता है।



HAKIM BABU

Oriya/135 mins.

Producer: Amiya Patnaik **Director/Screenplay Writer:** Pranab Das **Leading Actor:** Ajit Das **Leading Actress:** Jaya **Supporting Actor:** Bijaya Mohanty **Supporting Actress:** Dolly Jena **Child Artiste:** Subodha **Cameraman:** Rajan Kinagi **Audiographer:** Carrier Services **Editor:** Muktar Ahmed **Art Director:** Nikhil Sengupta **Costume Designer:** Nirmal **Music Director:** Soroj Pattnaik.

Young Khanu is the pride and hope of the tribal people. They all wait for the day when he would come back after high education and free them from the clutches of the sahuakar. When Khanu becomes a bureaucrat and chooses to marry another bureaucrat's daughter instead of his childhood sweetheart, the tribal people feel alienated. Chromite desposits are discovered in the area. For their mining, the tribal inhabitants have to be evacuated. The sahuakar, greedy to acquire the big business and in a bid to drive away the tribals, burns down the village. The tribal people feel thoroughly disillusioned about Khanu who finds himself alone and helpless.



श्याम बेनेगल अब तक लगभग एक हजार विज्ञापन फिल्मों, 38 वृत्तचित्रों और 15 कथाचित्रों/वृत्तचित्रों का निर्देशन कर चुके हैं। उनके कथाचित्रों में अंकुर, निशान्त, मंथन, भूमिका, कोंडुरा, जुनून, कलयुग, आरोहण तथा मण्डी और वृत्तचित्रों में नेहरू तथा सत्यजीत रे शामिल हैं। उनकी फिल्मों की अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। उन्हें 1976 में पद्मश्री से विभूषित किया गया।

जी. अरविन्दन चित्रकार तथा कार्टूनकार हैं। वे शास्त्रीय तथा लोकनाटकों से भी सम्बद्ध हैं। उन्होंने अपना फिल्मी जीवन 1973 में शुरू किया। अब तक उन्होंने 7 फिल्मों का निर्देशन किया है और वे सभी बहुत सराही गई हैं। ये हैं—उत्तरायणम्, कंचनसीता, थम्प, कुमट्टी, स्थापन, पोक्कुवेईल और चिदंबरम्। उन्होंने लघु चित्रों का भी निर्माण किया है।

Shyam Benegal has directed about 1000 film commercials, 38 documentaries and 15 feature length/documentary films. His feature films include ANKUR, NISHANT, MANTHAN, BHUMIKA, KONDURA, films include ANKUR, NISHANT, MANTHAN, BHUMIKA, KONDURA, JUNOON, KALYUG, AROHAN and MANDI and his documentaries, NEHRU and SATYAJIT RAY. His films have won several national and international awards. He was awarded Padma Shri in 1976.

Painter and cartoonist, G. Aravindan works also for the theatre, producing classical and folk plays. Beginning his career in 1973, he has so far directed seven films, all of which have won acclaim: UTTARAYANAM, KANCHANSITA, THAMP, KUMMATTY, ESTHAPPAN, POKKUYEYIL and CHIDAMBARAM. He has also made short films.

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म पुरस्कार

सत्यजीत रे तथा द सियर हू वाक्स एलोन

निर्माता फिल्म प्रभाग और जी. अरविन्दन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक श्याम बेनेगल तथा जी. अरविन्दन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म का 1985 का पुरस्कार सत्यजीत रे को सत्यजीत रे के जीवन तथा कृतित्व के आमने-सामने की बातचीत पर आधारित गहन विश्लेषण के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम जीवनी संबंधी फिल्म का 1985 का पुरस्कार द सियर हू वाक्स एलोन को भी सुप्रसिद्ध दार्शनिक जे. कृष्णमूर्ति के जीवन, कृतित्व और दर्शन के कुशल चित्रण के लिए दिया गया है।

award for the best biographical film

1. SATYAJIT RAY

2. THE SEER WHO WALKS ALONE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, Films Division and G. Aravindan.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Directors, Shyam Benegal and G. Aravindan.

citation

The Award for the Best Biographical Film of 1985 is given to SATYAJIT RAY for a deep analysis of the life and work of Satyajit Ray, in a face-to-face interaction.

The Award for the Best Biographical Film of 1985 is also given to THE SEER WHO WALKS ALONE for a sensitive portrayal of the life, personality and philosophy of J. Krishnamurthi, the noted philosopher.



संपादक-निर्देशक बिप्लब राय चौधरी ने 1969 में प्रथम लघु चित्र लेटेन्ट का निर्देशन किया। जिसने सर्वोत्तम समाज-प्रलेखन फिल्म के लिए राष्ट्रपति पदक प्राप्त किया। इसके बाद वे लगभग एक दर्जन लघु फिल्मों व विभिन्न भाषाओं में 7 कथाचित्रों का निर्देशन कर चुके हैं। उनकी अन्य पुरस्कृत फिल्में चिलिका तीरे, शोध तथा स्पंदन हैं।

Editor-Director Biplab Roy Choudhary first directed the short film LATENT in 1969 which got the President's medal for the best social documentation film. Since then he has directed a dozen short films and seven feature films in different languages. His other award winning films are CHILIKA TEEREY, SHODH and SPANDAN.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म पुरस्कार

द विस्परिंग विन्ड

निर्माता को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक बिप्लब राय चौधरी को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म का 1985 का पुरस्कार द विस्परिंग विन्ड को उड़ीसा की डोंगरिया जनजाति के परंपरागत जीवन एवं सामाजिक परिवर्तन की झांकी को प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best anthropological/ ethnographic film

THE WHISPERING WIND

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Biplab Roy Choudhary.

citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1985 is given to THE WHISPERING WIND for its authentic and comprehensive depiction of the traditional life of the Dongria tribe of Orissa facing social change.



आनन्द पटवर्धन ने 1971 में बिजनेस एज यूजएल फिल्म के साथ वृत्तचित्र निर्माण का काम शुरू किया। इसके बाद उन्होंने फिल्म पट्टिका वन डे आफ्टर द हार्वेस्ट तथा वृत्तचित्र वेव्स आफ रिवोल्यूशन, प्रिजनर्स आफ कन्साईस तथा ए टाइम टू राइज बनाए। ए टाइम टू राइज के लिए उन्हें लिपज़िक में दूसरा पुरस्कार मिला। हमारा शहर फिल्म को पेरिस में सिनेमाडूरिल में निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार मिला।

Anand Patwardhan began documentary film making in 1971 with the film BUSINESS AS USUAL. This was followed by a film-strip, ONE DAY AFTER THE HARVEST and documentaries WAVES OF REVOLUTION, PRISONERS OF CONSCIENCE and A TIME TO RISE, which won the Silver Dove at Leipzig. BOMBAY : OUR CITY has won the Special Jury Prize at Cinema Du Reel, Paris.

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार

हमारा शहर

निर्माता आनन्द पटवर्धन को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक आनन्द पटवर्धन को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का 1985 का पुरस्कार हमारा शहर को शहरी तंग-बस्तियों की समस्या के प्रति गहरी चिन्ता और विषय के निष्पक्ष ढंग से साहसिक प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

award for the best non-feature film

BOMBAY : OUR CITY

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Producer, Anand Patwardhan.

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director, Anand Patwardhan.

citation

The Award for the Best Non-feature Film of 1985 is given to BOMBAY : OUR CITY for its deep concern for the problem of urban slums and the courageous presentation of the theme in an objective manner.

गैर-कथाचित्र
Non-Feature
Films

संविधान की आठवीं-अनुसूची में शामिल भाषाओं से भिन्न भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए पुरस्कार

अलायारन

निर्माता बोडोसा फिल्म प्रॉडक्शन्स को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक जुंगदाओ बोडोसा को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

संविधान की आठवीं-अनुसूची में शामिल भाषाओं से भिन्न भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र का 1985 का पुरस्कार अलायारन (बोडो भाषा) को भाषा में निर्मित अग्रणी फिल्म में बोडो समुदाय के सामाजिक-आर्थिक जीवन के निष्ठापूर्वक चित्रण के लिए दिया गया है।

award for the best film in a language other than those specified in the VIII schedule to the constitution

ALAYARON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producer, Bodosa Film Productions.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Director, Jwndgas Bodosa.

citation

The Award for the Best Film of 1985 in a language other than those specified in the VIII Schedule to the Constitution is given to ALAYARON (Bodo Language) for a pioneering film in the language which faithfully brings out the socio-economic life of the Bodo community.



जयकृष्ण ने 1961 में रूप-सज्जा प्रमुख के रूप में फिल्म उद्योग में प्रवेश किया। वे बी.एन. रेड्डी, सी. पुल्लया, के. कामेश्वर राव और के. विश्वनाथ जैसे नामी फिल्मकारों के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने 100 से भी अधिक फिल्मों में काम किया है। 1979 में उन्होंने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में प्रवेश किया। इनकी पहली फिल्म **मना वुरी पांडावुलु** को अनेक पुरस्कार मिले। अब तक उन्होंने दस फिल्में बनाई हैं।

क्रांति कुमार बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न निर्माता-निर्देशक हैं। जिन्होंने कई भाषाओं में फिल्में बनाई हैं। 1984 में निर्देशन के क्षेत्र में पदार्पण करने से पूर्व उन्होंने 15 फिल्मों का निर्माण किया। उनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म **स्वाती** बहुत सफल रही और उसे अनेक पुरस्कार मिले।

Jayakrishna entered the film industry as a make-up chief in 1961. He was associated with stalwarts like B.N. Reddy, C. Pullaiah, K. Kameswara Rao and K. Viswanath. He has worked in more than one hundred films. He launched his own production in 1979. His first film **MANA VOORI PANDAVULU** won many awards. He has made ten films so far.

A versatile, multi-lingual producer-director, Kranthi Kumar produced 15 films before turning to direction in 1984. His first directorial venture **SWATHI** proved a big success and bagged several awards.

सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म पुरस्कार

श्रावन्ती

निर्माता जयकृष्ण को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक क्रांति कुमार को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म का 1985 का पुरस्कार हृदयस्पर्शी फिल्म श्रावन्ती को दिया गया है जिसमें एक ऐसी उत्कृष्ट भारतीय महिला की दशा का चित्रण किया गया है जो पुत्री, पत्नी और मां के रूप में अपने दायित्व निभाती हुई अपनी जिंदगी गुजारती है।

award for the best telugu film

SRAVANTHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producer, Jayakrishna.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Director, Kranthi Kumar.

citation

The Award for the Best Telugu Film of 1985 is given to SRAVANTHI, a moving film which depicts the plight of the quintessential Indian woman who goes through life discharging obligations as daughter, wife and mother.



भारती राजा ने लंबे संघर्ष के बाद 1968 में सहायक निर्देशक के रूप में फिल्म उद्योग में प्रवेश किया। उन्होंने 1977 में अपनी पहली फिल्म पथीनारु वयाथिनिले बनाई। इस फिल्म को राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार मिले। भारती राजा की अन्य फिल्में हैं—सिगप्पु, रोजक्कल, पुथ्या वरपुगल, निशलगल, अलाइगल उईवथिलई, कथल ओवियम, मनवसनाइ और पुदुमई पेन।

After years of struggle, Bharathi Rajaa managed to enter the film industry as an assistant director in 1968. He made his first film PATHINARU VAYATHINILEY in 1977. The film won national and state awards. Bharathi Rajaa's other films are SIGAPPU ROJAKKAL, PUTHIYA VARPUGAL, NIZHALGAL, ALAIGAL OOVATHILLAI, KATHAL OVIUM, MANVASANAI and PUDUMAI PEN.

सर्वोत्तम तमिल फिल्म पुरस्कार

मुधल मरियाधाई

निर्माता भारती राजा को रजत कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक भारती राजा को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल फिल्म का 1985 का पुरस्कार **मुधल मरियाधाई** को दिया गया है जिसमें एक ऐसे पुरुष के कष्टों की प्रेम कहानी है जो अपनी स्मृतियों के सहारे जीवित रहता है और अपने अंतिम दिन एक नदी-किनारे रमणीय वातावरण में झोंपड़ी में रहकर गुजारता है।

award for the best tamil film

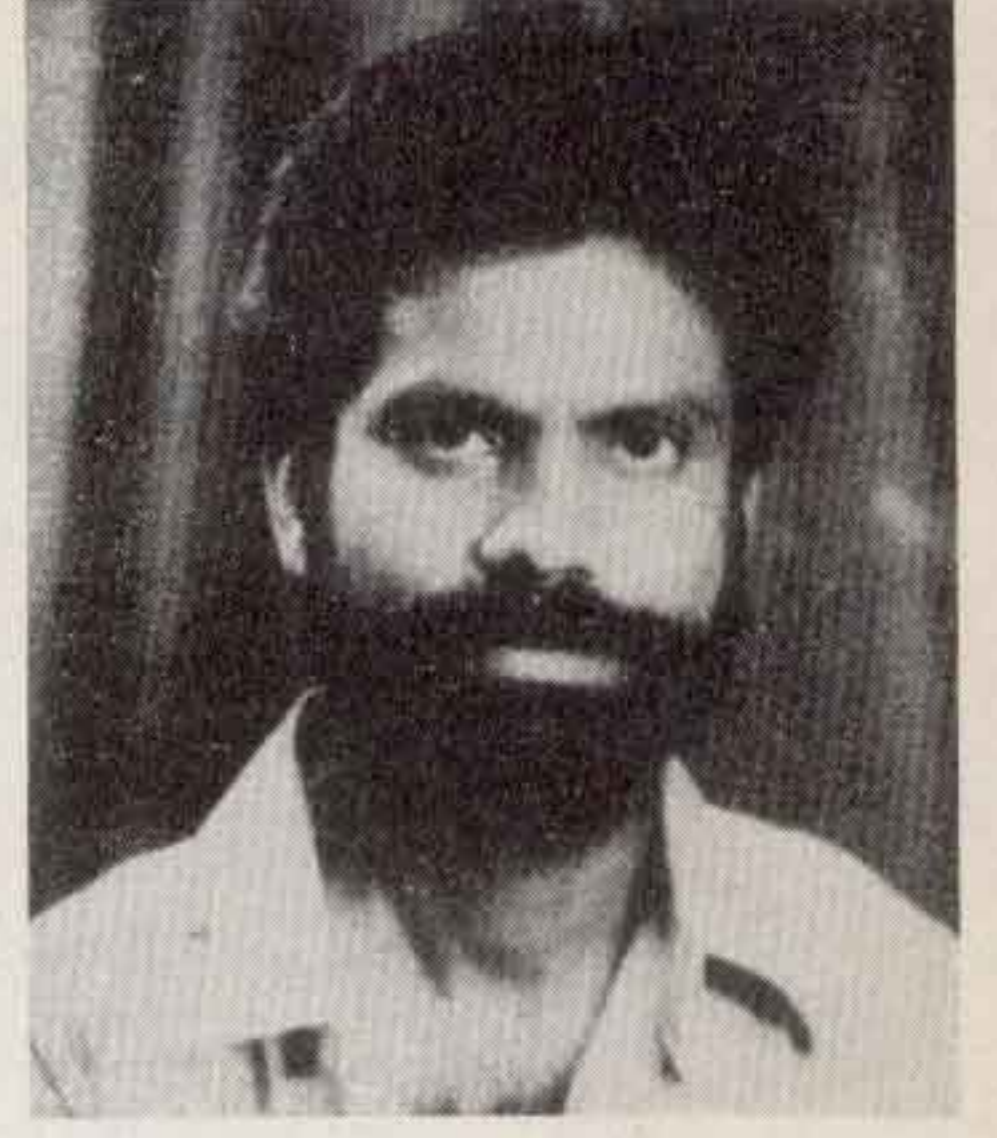
MUDHAL MARIYADHAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.20,000 to the Producer, Bharathi Rajaa.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Director, Bharathi Rajaa.

citation

The Award for the Best Tamil Film of 1985 is given to MUDHAL MARIYADHAI, a love story about the suffering of a man who is destined to live with his memories, spending his last days in a hut on the banks of a river in idyllic surroundings.



अमिय पटनायक उद्योगपति और सामाजिक कार्यकर्ता हैं तथा नाटकों से भी जुड़े हैं। 1975 में इलाहाबाद नाट्य संघ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय नाटक प्रतियोगिता में उन्हें पुरस्कार मिला। उन्होंने उड़िया फिल्म **ममता मागे मुला** का निर्माण व निर्देशन किया जो बहुत लोकप्रिय हुई।

प्रणब दास फिल्म सोसायटी आन्दोलन से संबद्ध हैं। उनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म **शेष प्रतीक्ष्या** थी। **हाकिम बाबू** उनकी दूसरी फिल्म है। उन्होंने **बधू निरूपमा** फिल्म की पटकथा भी लिखी।

Basically an industrialist and social worker, Amiya Patnaik is associated with the stage. He won the award in 1975 in the all India drama competition organised by the Allahabad Natya Sangha. He has produced and directed the Oriya film MAMATA MAGE MULA which has proved greatly popular.

Pranab Das is associated with the film society movement. The first film he directed was SETHA PRATIKSHYA. HAKIM BABU is his second film. He has also written the screenplay for the film BADHU NIRUPAMA

सर्वोत्तम खोजी/साहसिक फिल्म पुरस्कार

हाई एडवेंचर ऑन व्हाइट वाटर्स

निर्माता यश चौधरी को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक सी.एल. कौल को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी/साहसिक फिल्म का 1985 का पुरस्कार हाई एडवेंचर ऑन व्हाइट वाटर्स को भारत में पानी के एक नए खेल के रोमांच को चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best exploration/ adventure film

HIGH ADVENTURE ON WHITE WATERS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Yash Choudhary.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, C.L. Kaul.

citation

The Award for the Best Exploration/Adventure Film of 1985 is given to HIGH ADVENTURE ON WHITE WATERS for its depiction of the thrills of a new water sport in India.



सुमित्रा भावे ग्रामीण विकास और महिलाओं के कल्याण से संबद्ध रही हैं। वे उच्चकोटि की समाज वैज्ञानिक हैं और उन्होंने इस विषय पर अनेक शोधपरक अध्ययन किए हैं। वे फिल्मों तथा चित्रकला में भी रुचि रखती हैं और उन्होंने फिल्म समीक्षा तथा फोटोग्राफी के अल्पकालिक पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण लिया है।

Sumitra Bhawe is closely associated with rural development and women's welfare. A highly qualified social scientist, she has a number of investigative and research studies to her credit. Interested in films and painting, she had undergone a short course in film appreciation and photography.

सर्वोत्तम समाज कल्याण/परिवार कल्याण फिल्म पुरस्कार

बाई

निर्माता स्त्रीवाणी, ईशवाणी को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक सुमित्रा भावे को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम समाज कल्याण/परिवार कल्याण फिल्म का 1985 का पुरस्कार बाई फिल्म को एक निर्धन और दलित गृहिणी के यथार्थ चित्रण के लिए दिया गया है जो अपने पुनर्वास तथा अपने पांव पर खड़े होने की क्षमता का उपयोग करने के अपने दृढ़-प्रयासों में सफल होती है।

award for the best social welfare/ family welfare film

BAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Streevani and Ishvani.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, Sumitra Bhave.

citation

The Award for the Best Social Welfare Family Welfare Film of 1985 is given to BAI for its realistic portrayal of a poor, oppressed housewife who succeeds in her determined effort to rehabilitate herself and realise her potential to be on her own.



के.के. गर्ग 1961 में निर्देशक के सहायक के रूप में फिल्म प्रभाग में आए। तब से वे उप-निदेशक, निदेशक और निर्माता के रूप में काम करते रहे हैं। 1978 से वे उप मुख्य निर्माता के पद पर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने लगभग 30 वृत्तचित्रों का निर्देशन और करीब 70 का निर्माण किया है। वे 30 राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

डी. गौतमन ने पुणे भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से प्रथम श्रेणी में डिप्लोमा करने के बाद मलयालम फिल्म निर्देशक रामू करियत के मुख्य सहायक के रूप में अपना फिल्मी जीवन प्रारंभ किया। वे फिल्म प्रभाग में निर्देशक के रूप में भर्ती हुए और 60 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्देशन कर चुके हैं। इन दिनों वे निर्माता के रूप में काम कर रहे हैं।

K.K. Garg joined Films Division as assistant to director in 1961. Since then he has worked as deputy director, director and producer. Since 1978 he is Deputy Chief Producer in Films Division. He has directed about 30 documentary films and produced about 70. He has won as many as 30 national and international awards.

A first-class-first diploma holder from the Film and Television Institute of India, Pune, D. Gautaman started his career as Chief Assistant to the Malayalam Film Director, Ramu Kariat. He joined Films Division as a director and handled more than 60 documentaries. Currently he is working as a producer.

सर्वोत्तम कृषि फिल्म पुरस्कार

कैश इन कैशयू कल्टीवेशन

निर्माता के.के. गर्ग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक डी. गौतमन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि फिल्म का 1985 का पुरस्कार कैश इन कैशयू कल्टीवेशन को काजू की खेती में सुधार की दिशा में वैज्ञानिक विकास के संबंध में समृद्ध शिक्षापरक चित्रण के लिए दिया गया है।

award for the best agricultural film

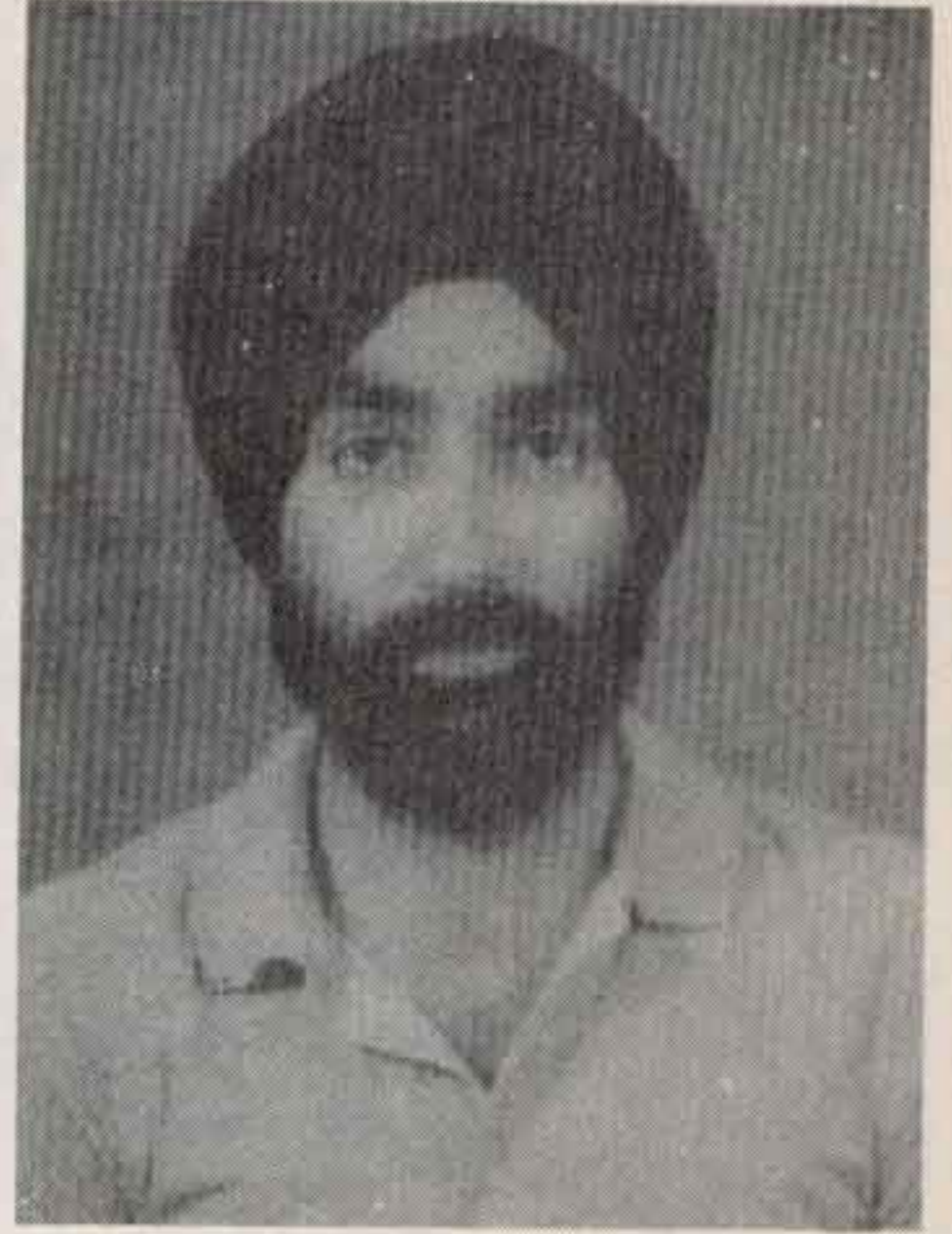
CASH IN CASHEW CULTIVATION

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, K.K. Garg.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, D. Gautaman.

citation

The Award for the Best Agricultural Film of 1985 is given to CASH IN CASHEW CULTIVATION for its rich informational content about the scientific development in the improvement of cashew crop.



डी. गौतमन ने पुणे भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से प्रथम श्रेणी में डिप्लोमा करने के बाद मलयालम फिल्म निर्देशक रामू करियत के मुख्य सहायक के रूप में अपना फिल्मी जीवन प्रारंभ किया। वे फिल्म प्रभाग में निर्देशक के रूप में भर्ती हुए और 60 से अधिक वृत्तचित्रों का निर्देशन कर चुके हैं। इन दिनों वे निर्माता के रूप में काम कर रहे हैं।

गुरबीर सिंह ग्रेवाल ने भी भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा किया है और वे 1978 में रिकार्डिस्ट के रूप में फिल्म प्रभाग में भर्ती हुए। 1983 से वे उप-निदेशक के पद पर काम कर रहे हैं और लगभग 10 फिल्मों में सहयोग दे चुके हैं।

A first-class-first diploma holder from the Film and Television Institute of India, Pune, D. Gautaman started his career as Chief Assistant to the Malayalam Film Director, Ramu Kariat. He joined Films Division as a director and handled more than 60 documentaries. Currently he is working as a producer.

A diploma holder from the FTII, Gurbir Singh Grewal joined Films Division as a recordist in 1978. Since 1983 he is a deputy director and has about 10 films to his credit.

सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म पुरस्कार

सेफटी मैयर्स इन हैंडलिंग एग्रीकल्चरल मशीनरी

निर्माता डी. गौतमन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक गुरबीर सिंह ग्रेवाल को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम औद्योगिक फिल्म का 1985 का पुरस्कार सेफटी मैयर्स इन हैंडलिंग एग्रीकल्चरल मशीनरी को स्पष्ट शिक्षाप्रद मूल्यों के लिए दिया गया है।

award for the best industrial film

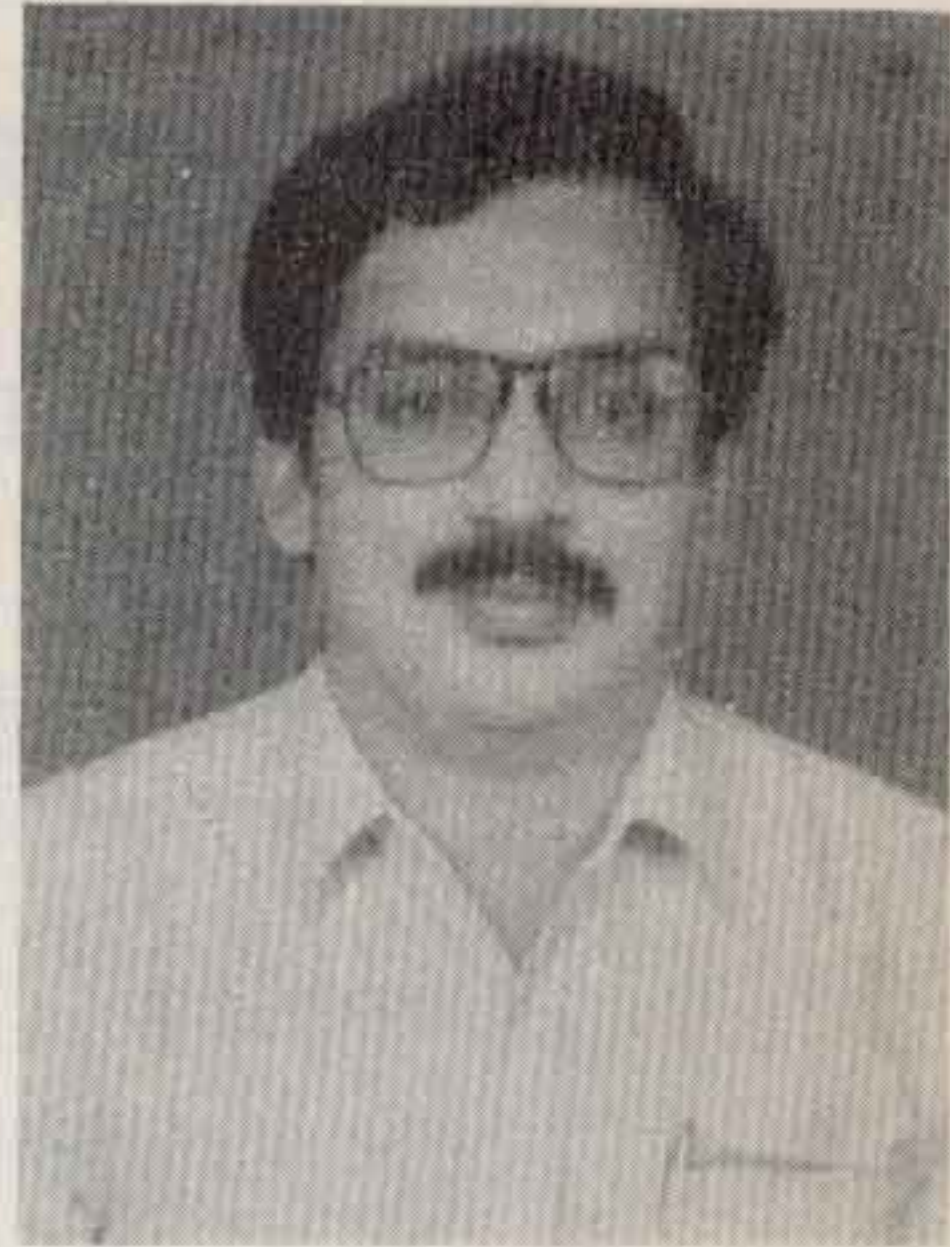
SAFETY MEASURES IN HANDLING AGRICULTURAL MACHINERY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, D. Gautaman.

Rajat Kamal and a cash Prize of Rs. 10,000 to the Director, Gurbir Singh Grewal.

citation

The Award for the Best Industrial Film of 1985 is given to SAFETY MEASURES IN HANDLING AGRICULTURAL MACHINERY for its clear instructional value.



बी.एन. मेहरा ने ओ.पी. दत्ता, सदानंद देसाई तथा एस. न्याय शर्मा के साथ सहायक निर्देशक के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। 1958 में उन्होंने फिल्म प्रभाग में निर्माता-निर्देशक के रूप में प्रवेश किया। उन्होंने 46 लघु चित्रों का निर्देशन तथा 27 का निर्माण किया। उनके कार्य को देश एवं विदेश में काफी सराहा गया।

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान के छात्र श्री के. बालकृष्णन् नायर कुछ समय तक चित्रलेखा को-ऑपरेटिव त्रिवेन्द्रम से संबद्ध रहे। 1983 में उन्होंने फिल्म प्रभाग में कार्य आरंभ किया। 1983 में उनकी पहली फिल्म रिजुवेनेशन का राष्ट्रीय निर्णायक मंडल ने विशेष उल्लेख किया।

B.N. Mehra worked as assistant director with O.P. Dutta, Sadanand Desai and S. Nyaya Sharma. Joining Film Division in 1958, he has worked as director and producer. He has directed 46 documentary films and produced 27. His work has won special mention nationally and internationally.

An alumnus of the FTII, K. Balakrishnan Nair was associated for some-time with the Chitralkha Film Cooperative, Trivandrum. He joined Films Division in 1983. His film REJUVENATION had won special mention of the national jury in 1983.

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) पुरस्कार

पावर टू द पीपल

निर्माता बी. एन. मेहरा को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक के बालकृष्णन् नायर को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित) का 1985 का पुरस्कार पावर टू द पीपल को सामाजिक परिवर्तन के लिए जन समुदाय द्वारा वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने की महत्ता के प्रयास को विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

award for the best scientific film, including environment and ecology

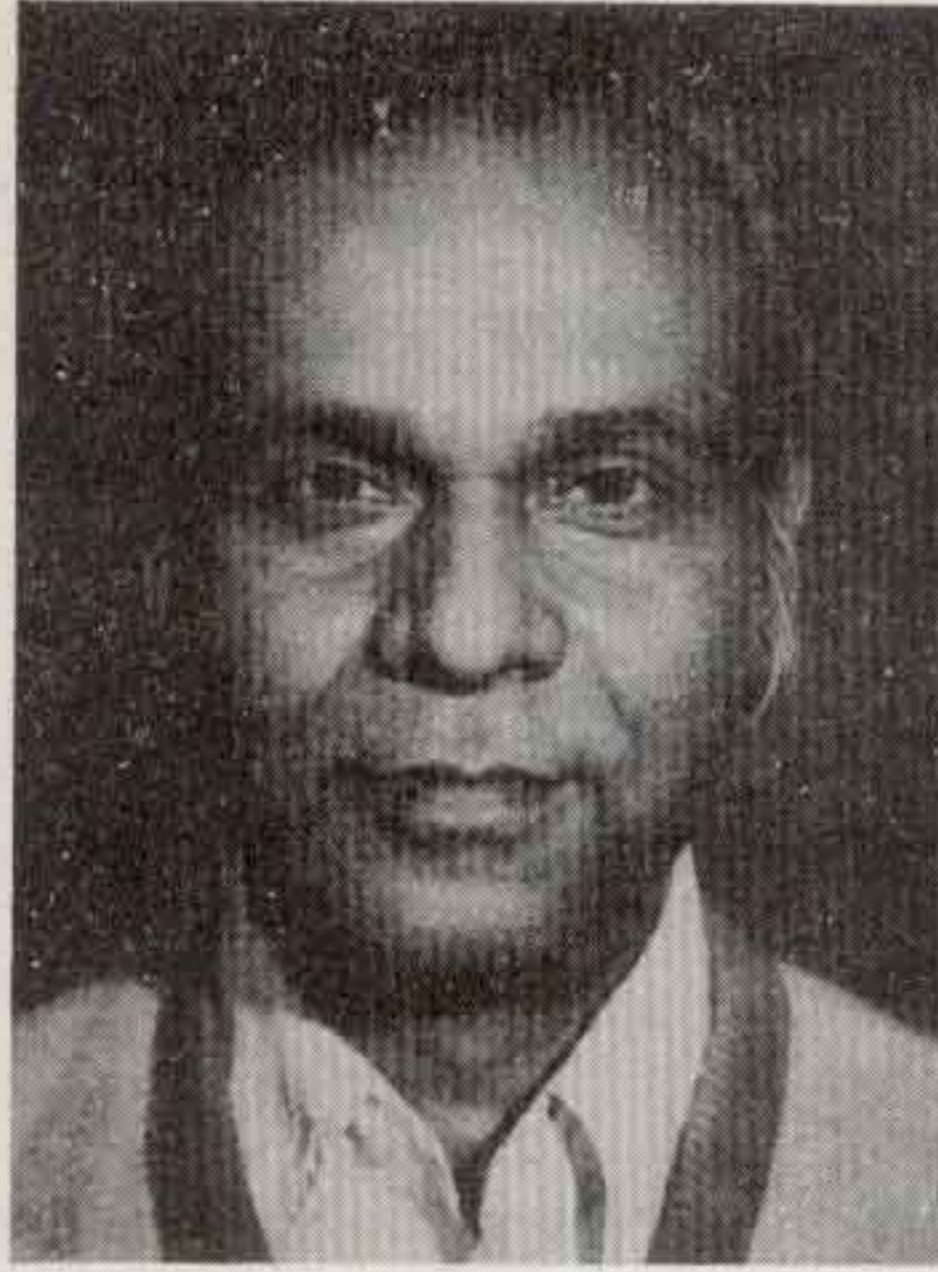
POWER TO THE PEOPLE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, B.N. Mehra.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, K. Balakrishnan Nair.

citation

The Award for the Best Scientific (including Environment and Ecology) Film of 1985 is given to POWER TO THE PEOPLE for its convincing portrayal of the importance of a people's movement for scientific attitude towards social change.



बी.आर. शेंडगे ने रेखाकला और चित्रकला में डिप्लोमा किया है तथा वे सुयोग्य आर्ट मास्टर हैं। वे 1961 में फिल्म प्रभाग की कार्टून फिल्म इकाई में भर्ती हुए। वे अम्ब्रेला, सिन्थसिस, लॉ आफ नेचर और प्रेशियस वाटर जैसी अनेक कार्टून फिल्मों के लिए राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

वी.के. वानखेड़े ने बंबई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से रेखाकला और चित्रकला का डिप्लोमा किया है और वे फिल्म प्रभाग की कार्टून फिल्म इकाई में कार्यरत हैं। अब तक उन्होंने 4 फिल्में बनाई हैं। 1984 में उन्हें कार्टून कला के लिए रजत कमल मिला।

A diploma holder in drawing and painting and a qualified Art Master, B.R. Shendge joined the Cartoon Film Unit of Films Division in 1961. He has won national and international awards for many of his animated and cartoon films such as UMBRELLA, SYNTHESIS, LAW OF NATURE and PRECIOUS WATER.

A diploma holder in drawing and painting from the J.J. School of Arts; Bombay, V.K. Wankhede is working with the Cartoon Film Unit of Films Division. He has so far made four films. He received the Silver Lotus for animation in 1984.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म पुरस्कार

वर्ली पेंटिंग

निर्माता बी.आर. शेंडगे को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।
निर्देशक वी.के. वानखेड़े को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म का 1985 का पुरस्कार **वर्ली पेंटिंग** को वर्ली जन जातीय लोगों के जीवन और कला के संबंध को अनुभूतिपूर्ण ढंग से उजागर करने के लिए दिया गया है।

award for the best arts/ cultural film

WARLI PAINTING

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, B.R. Shendge.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director V.K. Wankhede.

citation

The Award for the Best Arts/Cultural film of 1985 is given to WARLI PAINTING for a perceptive exploration of the relationship between the life and art of the warli tribals.

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक पुरस्कार

गुरुदत्त : तीन अंकी शोकान्त ईकी

लेखक अरूण खोपकर को रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक का 1985 का पुरस्कार अरूण खोपकर द्वारा लिखित मराठी पुस्तक गुरुदत्त : तीन अंकी शोकान्त ईकी (गुरुदत्त : तीन अंकों की दुखान्त कहानी) को दिया गया है क्योंकि यह गुरुदत्त के बारे में एक मुख्य आलोचनात्मक पुस्तक है, जिसमें शोध किया गया है और जिसे सुन्दर ढंग से उचित मूल्य पर प्रकाशित किया गया है तथा जिसमें अनेक मनोहारी चित्र हैं जो सिनेमा के बारे में किसी भी पुस्तक के लिए अभीष्ट हैं।

award for the best writing on cinema

GURU DUTT : TEEN ANKI SHOKANT IKI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to the Author, ARUN KHOPKAR

citation

The Award for the Best Book on Cinema of 1985 is given to the Marathi book GURU DUTT: TEEN ANKI SHOKANT IKI (Guru Dutt: A Tragedy in Three Acts) written by ARUN KHOPKAR as it is a major critical work on Guru Dutt, which is researched, attractively published at a reasonable price with a wealth of visual which enriches any book on cinema.



राजन खोसा, जिन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से हाल ही में प्रशिक्षण प्राप्त किया है, की डिप्लोमा फिल्म बोध वृक्ष को इस वर्ष ओबरहसन, पश्चिमी जर्मनी के फिल्म समारोह में मुख्य अन्तरराष्ट्रीय निर्णायक मंडल पुरस्कार तथा अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समीक्षक निर्णायक मंडल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। कैथोलिक फिल्म कार्यशाला, जर्मनी के अन्तरराष्ट्रीय निर्णायक मंडल द्वारा भी इस फिल्म को पुरस्कृत किया गया है।

Bodhvriksha is a diploma film of Rajan Khosa who recently graduated from the FTII. The film won the main International Jury award and the award of the International Jury of Film Critics at the Oberhausen Festival in West Germany this year. It was also given the award of the International Jury of the Catholic Film Workshop in Germany.

विशेष निर्णायक मंडल पुरस्कार

राजन खोसा

निर्देशक राजन खोसा को रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

विशेष निर्णायक मंडल का 1985 का पुरस्कार राजन खोसा को उनकी फिल्म बोध वृक्ष में सीमित पात्रों से सार्थक फिल्म निर्माण की नई शैली विकसित करने तथा एक महिला द्वारा अपनी लकवाग्रस्त बूढ़ी की सेवा करने के संताप तथा भावनात्मक जिज्ञासा के साथ प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

special jury award

RAJAN KHOSA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to the Director, Rajan Khosa.

citation

The Special Jury Award of 1985 is given to RAJAN KHOSA for his film BODHVRIKSHA for his sensitive exploration of the anguish of a woman nursing her aged, paralysed grandmother. The film is characterised by economy and control and innovative cinematic form.



के.एस. बनसोड बंबई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से ललितकला में स्नातक हैं। उन्होंने फिल्म प्रभाग में 22 वर्ष तक कार्टून फिल्मों के डिजाइनर के रूप में काम किया है। करुणा की विजय को इंटरनेशनल सेंटर ऑफ फिल्म फार चिल्डरन एंड यंग पीपल का पुरस्कार तथा 1985 में बैंगलोर में आयोजित चौथे अन्तरराष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में सर्वोत्तम कार्टून फिल्म के लिए रजत हाथी का पुरस्कार मिला।

A graduate in Fine Arts from the J.J. School of Art, Bombay, K.S. Bansod had worked in Films Division of Ministry of Information and Broadcasting for 22 years as designer for animated Films. KARUNA KI VIJAY won the award of the International Centre of Films for Children and Young People (CIFEJ) and the Silver Elephant award for the best animation film at the 4th International Children's Film Festival of India, Bangalore in 1985.

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म पुरस्कार

करूणा की विजय

निर्माता भारतीय बालचित्र समिति को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

निर्देशक के.एस. बनसोड को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

कार्टूनकार के.एस. बनसोड को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म का 1985 का पुरस्कार **करूणा की विजय** को बच्चों के लिए एक हृदयस्पर्शी कथा को प्रस्तुत करने में कार्टून तकनीक के उपयोग में कलात्मक श्रेष्ठता के लिए दिया गया है।

award for the best animation film

KARUNA KI VIJAY

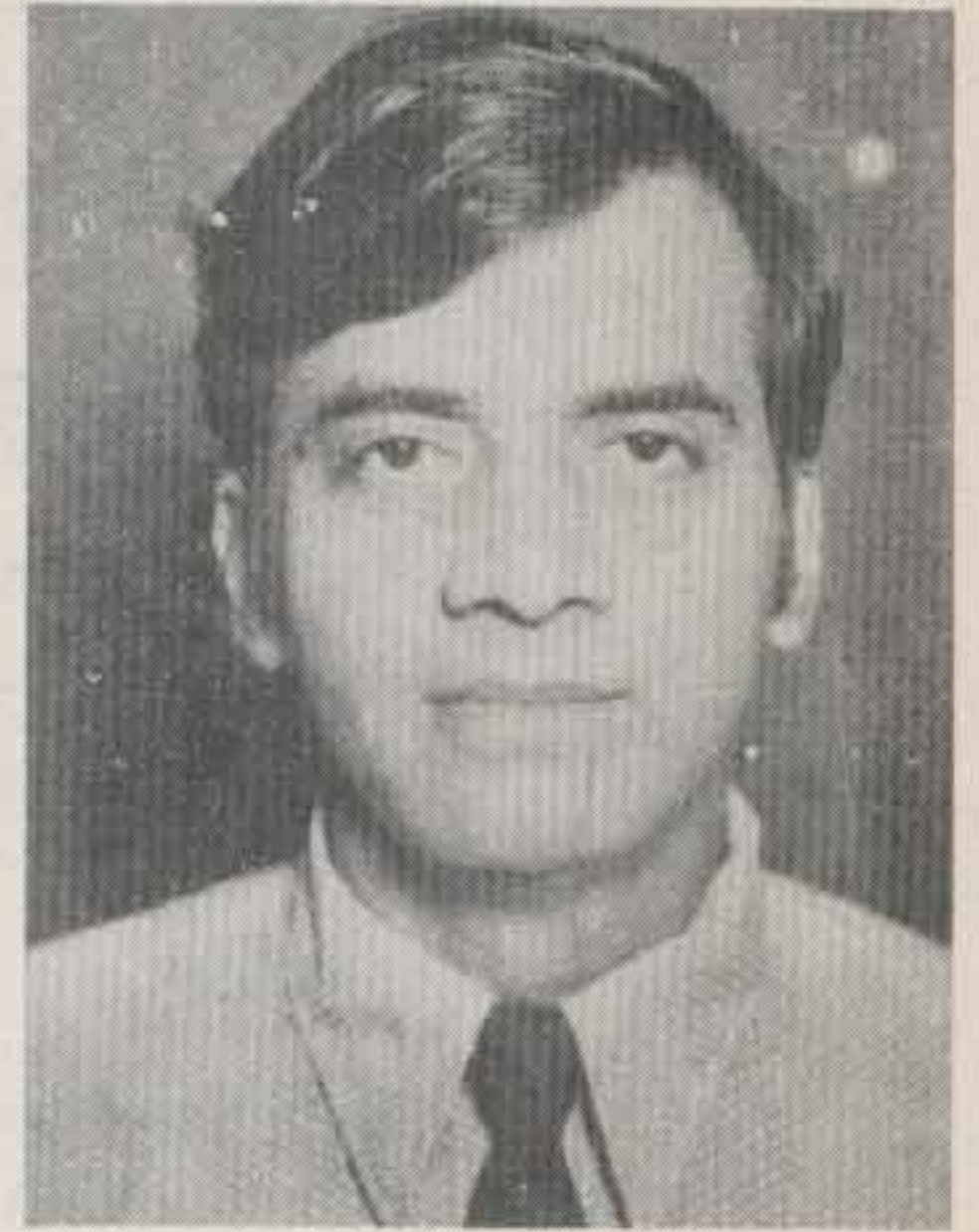
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer, Children's Film Society, India.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director, K.S. Bansod.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Animator, K.S. Bansod.

citation

The Award for the Best Animation Film of 1985 is given to KARUNA KI VIJAY for its artistic excellence in the use of animation techniques in presenting a heart-warming story for children.



पी.बी. पेंडारकर ने 1952 से 1959 तक भाई जी पेंडारकर और वी. शान्ताराम के सहायक के रूप में काम किया। उन्होंने मराठी फिल्म भावताते देव और बाल फिल्म बाल शिवाजी की कहानी लिखी तथा निर्देशन किया। बाल शिवाजी को 1981 में मद्रास में नवयुवा अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वोत्तम कथाचित्र का द्वितीय पुरस्कार मिला। 1961 से वे फिल्म प्रभाग में काम कर रहे हैं। उन्हें सर्वोत्तम शिक्षाप्रद फिल्म और सर्वोत्तम प्रेरक फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।

एम.एस. गंगाधर 1957 से फिल्म प्रभाग में काम कर रहे हैं। वे अनेक पुरस्कृत वृत्तचित्रों और समाचार चित्रों से संबद्ध रहे हैं।

अशोक पाटिल लगभग 75 वृत्तचित्रों और 100 से अधिक घटनाओं का छायांकन कर चुके हैं। उनके काम की देश और विदेश में सराहना हुई है।

From 1952 to 1959, P.B. Pendharkar worked as assistant to Bhalji Pendharkar and V. Shantaram. He wrote and directed the Marathi film BHAV TATE DEV, and the children's film BAL SHIVAJI which won the Second Best Feature Film award in the Neo-Youth International Film Festival held in Madras in 1981. He has been with Films Division since 1961. He has won national awards for the best educational film and the best promotional film.

M.S. Gangadhar is working in Films Division since 1957. He has many award-winning documentaries and newsreel coverage to his credit.

Ashok Patil has photographed about 75 documentaries and more than 100 news events. His work has won appreciation at home and abroad.

सर्वोत्तम समाचार चित्र पुरस्कार

समाचार चित्र सं० 59—तारानाथ शिनाय

निर्माता पी.बी. पेंडारकर, प्रीतम एस. अर्शी को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

छायाकार एम.एस. गंगाधर, अशोक पाटिल को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार।

प्रशस्ति

सर्वोत्तम समाचार चित्र का 1985 का पुरस्कार समाचार चित्र सं० 59—तारानाथ शिनाय को इंग्लिश चैनल को तैर कर पार करने वाले विकलांग तैराक तारानाथ शिनाय के दृढ़-संकल्प को गहराई के साथ चित्रित करने के लिए दिया गया है।

award for the best news film

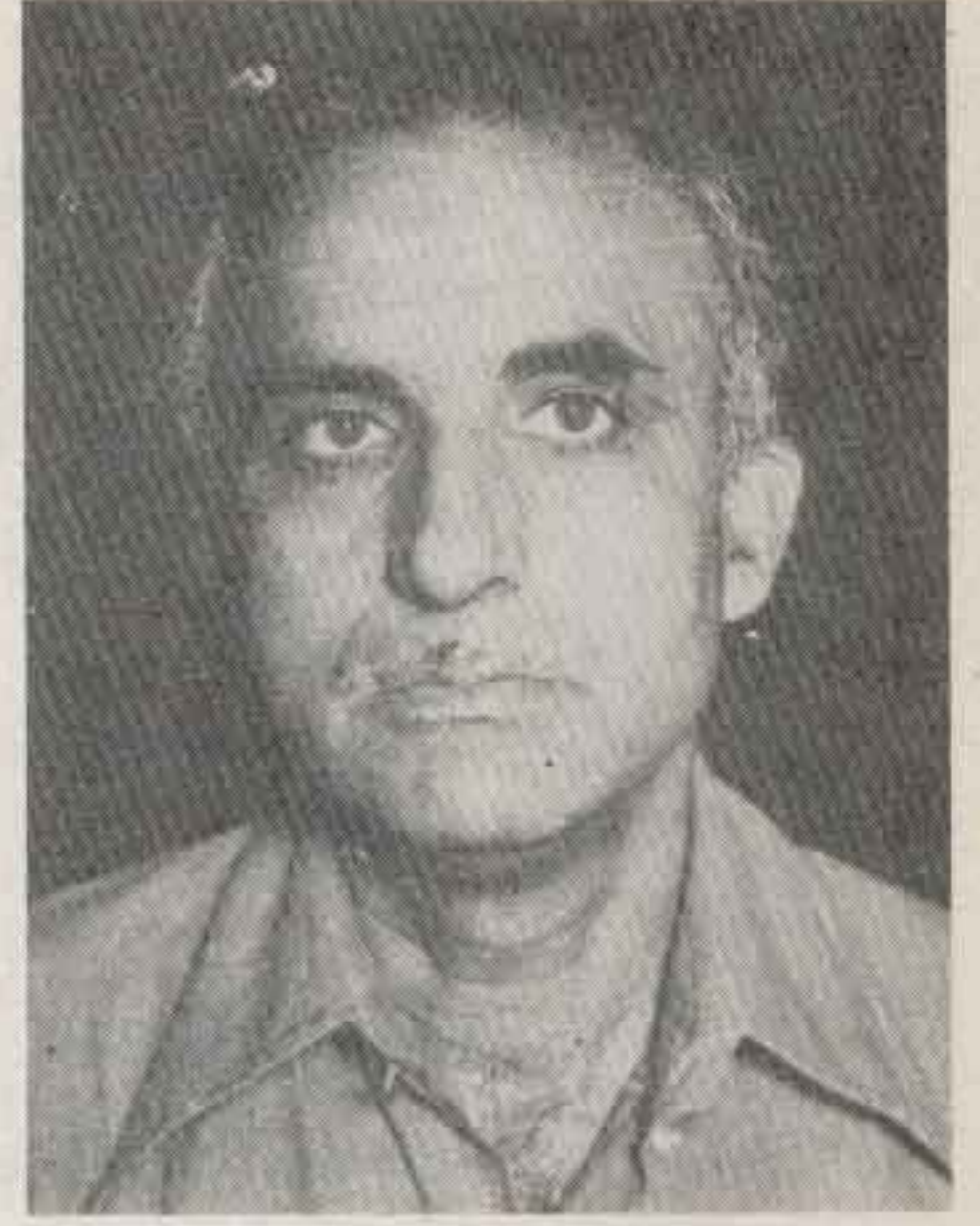
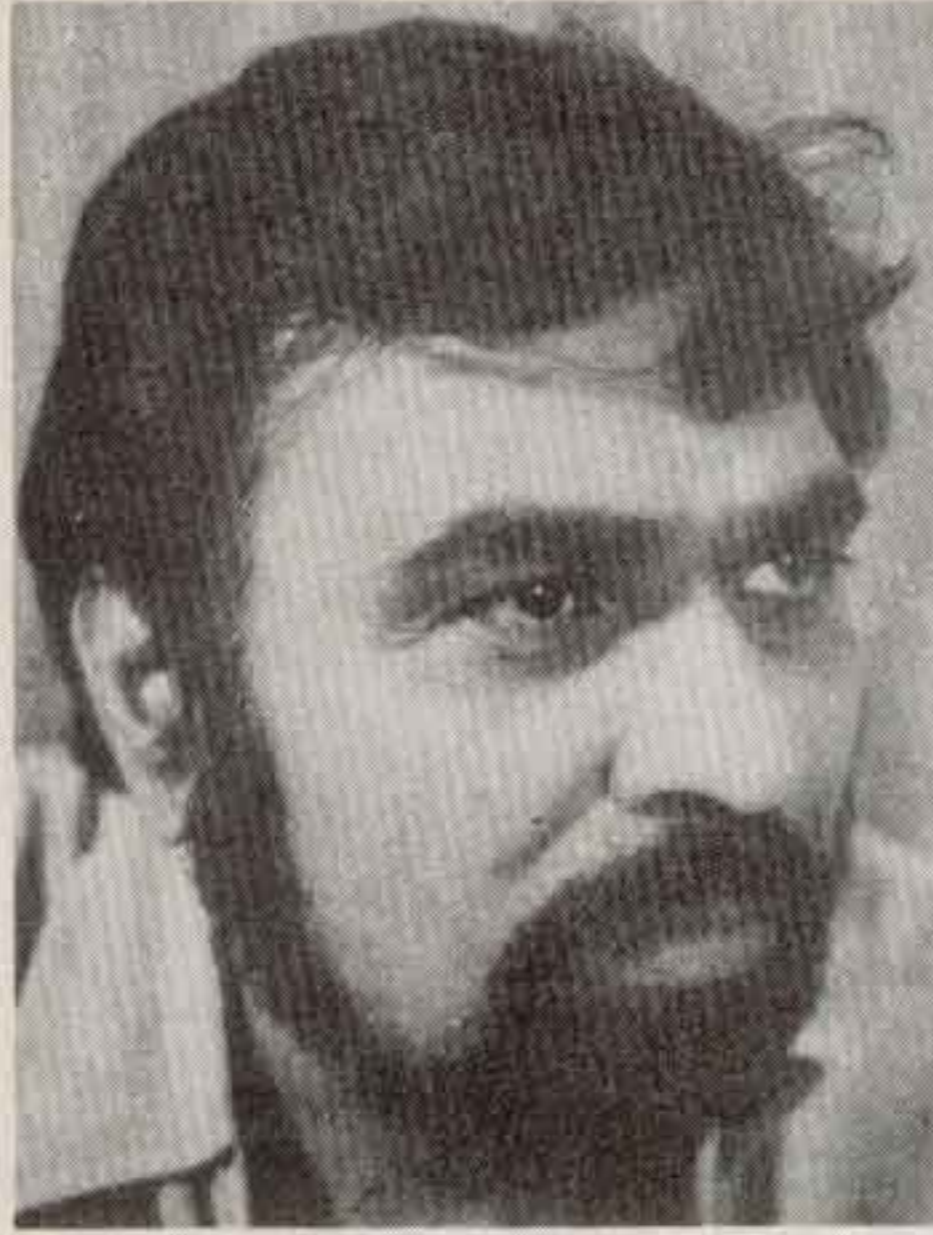
NEWS MAGAZINE NO: 59— TARANATH SHENOY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers, P.B. Pendharkar, Pritam S. Arshi.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cameramen, M.S. Gangadhar, Ashok Patil.

citation

The award for the Best News Film of 1985 is given to NEWS MAGAZINE NO 59—TARANATH SHENOY for an in-depth coverage of the strong determination of Taranath Shenoy, the handicapped swimmer, who crossed the English Channel.



यश चौधरी पुणे के भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से डिप्लोमा करने के बाद 1967 में फिल्म प्रभाग में निर्देशक के रूप में भर्ती हुए। वे 70 से अधिक फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। उन्हें अनेक राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। इस समय वे फिल्म प्रभाग में निर्माता के रूप में कार्यरत हैं। यश चौधरी की अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाली कुछ फिल्में हैं—कृष, चंडीगढ़, सेफ्टी इन द यूज ऑफ ट्रैक्टरस, न्यू एंड रिन्यूएबल सोर्सिस ऑफ एनर्जी, एनर्जी फ्रॉम विन्ड, वाटर एंड सन तथा फेसिस आफ्टर द स्टॉर्म।

सी.एल. कौल ने बंगलौर के जयचामराजेन्द्र आक्युपेशन इंस्टीच्यूट से मोशन पिक्चर फोटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने फिल्म प्रभाग में 29 वर्ष तक काम किया है। छायाकार से निर्देशक बने सी.एल. कौल ने 1978 और 1979 में सर्वोत्तम समाचार चित्र छायाकार का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया।

A diploma holder from the FTII, Pune, Yash Choudhary joined Films Division as Director in 1967. He has directed more than 70 films. He is the recipient of several national and international awards. He is at present Producer in Films Division. Some of Yash Choudhary's films which have won international awards are KRISH, CHANDIGARH, SAFETY IN THE USE OF TRACTORS, NEW AND RENEWABLE SOURCES OF ENERGY FROM WIND, WATER AND SUN and FACES AFTER THE STORM.

A diploma holder in motion picture photography from the Jayachamarajendra Occupational Institute, Bangalore, C.L. Kaul has worked in Films Division for over 29 years. Cameraman-turned-director, he won national award as the Best Newsreel Cameraman in two successive years in 1978 and 1979.



हम नौजवान

हिन्दी/139 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक/मुख्य अभिनेता देवानन्द, मुख्य अभिनेत्री ऋचा शर्मा, सह अभिनेता अटले बरार, सह अभिनेत्री टब्बू, छायाकार डी.के. प्रभाकर, ध्वनि आलेखक अरुण शर्मा, संपादक बाबू शेख, कला निर्देशक टी.के. देसाई, गीतकार अंजान, इंदीवर, संगीत निर्देशक आर.डी. बर्मन, पार्श्व गायिका आशा भोंसले, पीनाज मसानी, अनुराधा पोडवाल।

प्रोफेसर हंस एक कालेज के सिद्धान्तवादी प्रिन्सिपल हैं। अतीत में यह कालेज बहुत अच्छा रहा है लेकिन अब आपसी विवादों के कारण इसकी हालत खस्ता है। कालेज में हिंसा का दौर चल रहा है, लोग अधिकारों का दुरुपयोग कर रहे हैं तथा अलगाववादी ताकतें हावी हैं। प्रोफेसर हंस पूरी व्यवस्था से संघर्ष करते हैं और अपराधियों को ठिकाने लगा कर कालेज को पहले जैसा गौरव प्रदान करते हैं।

HUM NAUJAWAN

Hindi/139 mins.

Producer/Director/Screenplay Writer/Leading Actor: Dev Anand **Leading Actress:** Richa Sharma **Supporting Actor:** Atley Brar **Supporting Actress:** Tabbu **Cameraman:** D.K. Prabhakar **Audiographer:** Arun Sharma **Editor:** Babu Sheikh **Art Director:** T.K. Desai **Lyricists:** Anjaan, Indivar **Music Director:** R.D. Burman **Female Playback Singers:** Asha Bhosle, Pinaz Masani, Anuradha Poduwal.

Prof. Hans is a principled principal of a strife-torn college, an institution with a glorious past but a terrorised present. He finds his hands more than full having to contend with campus violence, misuse of power and disruptive forces. Overcoming his personal and professional tragedies, he fights the system, brings the guilty to book and restores the college to its lost glory.



मयूरी

तेलुगु/135 मिनट

निर्माता रामोजी राव, निर्देशक/पटकथा लेखक सिंगीतम श्रीनिवास राव, गणेश पात्रो, मुख्य अभिनेत्री सुधा चन्द्रन, सह अभिनेता एस.आर. राजू, सह अभिनेत्री निर्मला, छायाकार हरी अनुमोलु, ध्वनि आलेखक एमी, संपादक के. गौतम राजू, कला निर्देशक वी. भास्कर राजू, वेशभूषाकार वी. कोन्ड्य्या, गीतकार वातुरी सुंदर राम मूर्ति, संगीत निर्देशक/पार्श्व गायक एस.पी. बालासुब्रह्मण्यम्, पार्श्व गायिका एस. जानकी, पी. शैलजा।

यह फिल्म एक युवा नर्तकी सुधा के वास्तविक जीवन पर आधारित है। 1981 में एक बस दुर्घटना में सुधा की दाईं टांग कट गई परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी और जयपुर जाकर कृत्रिम अंगों के प्रसिद्ध चिकित्सक डा० पी.सी. सेठी से कृत्रिम टांग लगवाई। कई महीनों के संघर्ष के बाद वह कृत्रिम पैर से नृत्य करने में सफल हो गई। फिल्म में मयूरी की भूमिका स्वयं सुधा ने अभिनीत की है।

MAYURI

Telugu/135 mins.

Producer: Ramoji Rao **Director:** Singitam Srinivasa Rao. **Screenplay Writers:** Singitam Srinivasa Rao, Ganesh Patro **Leading Actress:** Sudha Chandran **Supporting Actor:** S.R. Raju **Supporting Actress:** Nirmala **Cameraman:** Hari Anumolu **Audiographer:** Emmy **Editor:** K. Goutam Raju **Art Director:** V. Bhaskara Raju **Costume Designer:** B. Kondaiah **Lyricist:** Veturi Sundara Rama Murthy **Music Director/Male Playback Singer:** S.P. Balasubramaniam **Female Playback Singers:** S. Janaki, P. Sailaja.

The film was inspired by the real life story of Sudha, a young dancer, who was involved in a bus accident in 1981 and lost her right leg. Undeterred, she went to Jaipur and was fitted with an artificial limb by the famous Dr. P.C. Sethi. For months she struggled and finally succeeded in giving a dance performance wearing the artificial limb. In the film, the role of Mayuri is played by Sudha herself.



मुधल मरियाधाई

तमिल/170 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक भारती राजा, मुख्य अभिनेता शिवाजी गणेशन, मुख्य अभिनेत्री राधा, सह अभिनेता दीपन, सह अभिनेत्री रंजनी, छायाकार वी. कन्नन, ध्वनि आलेखक एस.पी. रामानाथन, संपादक राजगोपाल, कला निर्देशक कमलसाकर, वेशभूषाकार शंकर, गीतकार वैरामुथु, संगीत निर्देशक इलयाराजा, पार्श्व गायक वासुदेवन, इलयाराजा, पार्श्व गायिका चित्रा, एस. जानकी।

मलाईचामी एक सज्जन और भले जमींदार हैं जिन्हें मजदूर लोग बहुत चाहते हैं। लेकिन उनका घरेलू जीवन झंझटों से भरा है। उनकी पत्नी पुन्नाथा बहुत सख्त स्वभाव की है जो उन पर तथा गांव वालों पर हमेशा बिगड़ती रहती है। उनकी लड़की जिस व्यक्ति से ब्याही गई है वह उसे मारता-पीटता है। उनके भतीजे की शादी उसकी प्रेमिका से हुई है लेकिन कुछ लोगों ने उस लड़की की हत्या कर दी है। चारों ओर दुख के इस वातावरण में मलाईचामी के जीवन में एक मछुआरे की युवा बेटी कुईल का आगमन होता है। कुईल के प्रति मलाईचामी के बढ़ते हुए लगाव को देखकर पुन्नाथा क्रुध हो उठती है। कुईल को हत्या के आरोप में गिरफ्तार करके जेल भेज दिया जाता है। इससे सब लोग हैरान हैं लेकिन केवल मलाईचामी जानता है कि कुईल ने उसके परिवार के लिए कितना बड़ा बलिदान किया है।

MUDHAL MARIYADHAI

Tamil/170 mins.

Producer/Director/Screenplay Writer: Bharati Rajaa **Leading Actor:** Shivaji Ganesan **Leading Actress:** Radha **Supporting Actor:** Deepan **Supporting Actress:** Ranjani **Cameraman:** B. Kannan **Audiographer:** S.P. Ramanathan **Editor:** Rajagopal **Art Director:** Kamlasekar **Costume Designer:** Sankar **Lyricist:** Vairamuthu **Music Director:** Ilayaraja **Male Playback Singers:** Vasudevan, Ilayaraja **Female Playback Singers:** Chitra, S. Janaki.

Malaichamy is a benign landowner, popular with his workers. But his domestic life is full of problems. His wife, Ponnatha, is a shrew who raves and rants at him and the villagers. His daughter is married to a man who ill-treats her. His nephew's marriage to the girl he loves ends in a tragedy with the girl being murdered by villainous hands. Into this miserable world of Malaichamy enters Kuyil, the young daughter of a fisherman. Malaichamy's growing fondness for her enrages Ponnatha. Kuyil's arrest and imprisonment for murder shocks everyone. But only Malaichamy knows what a great sacrifice Kuyil had made for the sake of his family.

न्यू दिल्ली टाइम्स

हिन्दी/123 मिनट

निर्माता पी.के. तिवारी, निर्देशक रमेश शर्मा, पटकथा लेखक गुलजार, मुख्य अभिनेता शशि कपूर, मुख्य अभिनेत्री शर्मिला टैगोर, सह अभिनेता कुलभूषण खरबंदा, ओमपुरी, छायाकार सुब्रतो मित्रा, संपादक रेणु सलूजा, कला निर्देशक नीतीश राय, समीर चन्दा, संगीत निर्देशक लुईस बैंक्स।

विकास पांडे 'न्यू दिल्ली टाइम्स' के कार्यकारी संपादक हैं। वे आदर्शवादी तथा निष्ठावान पत्रकार हैं। लेकिन अपने इन्हीं गुणों के कारण उन्हें मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। अनुसूचित जाति के एक विधायक की हत्या के मामले में खोज के दौरान विकास का उन राजनीतिक ताकतों से सामना होता है, जिनका निहित स्वार्थ इस बात में है कि सच्ची घटनाओं और उनके उद्देश्यों का समाचार दबा रहे। वह सत्तारूढ़ दल के एक संसद सदस्य का भंडाफोड़ करने पर तुल जाते हैं जो राज्य के मुख्यमंत्री के खिलाफ असंतुष्टों के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। विकास को यह विश्वास ही नहीं होता कि उनके अपने शहर में नशीली दवाओं के व्यापार और सोने की तस्करी से लेकर हत्या तक के अपराध हो रहे हैं। उनकी आंख तब खुलती है जब दंगे भड़क उठते हैं और सारा शहर आग की लपटों में घिर जाता है। अपनी खोज के दौरान वे उन ताकतों का पर्दाफाश करते हैं जो उनके व्यक्तिगत जीवन को आतंकित कर रही हैं।



NEW DELHI TIMES

Hindi/123 mins.

Producer: P.K. Tiwari **Director:** Ramesh Sharma **Screenplay Writer:** Gulzar **Leading Actor:** Shashi Kapoor **Leading Actress:** Sharmila Tagore **Supporting Actors:** Kulbushan Kharbanda, Om Puri **Cameraman:** Subrata Mitra **Editor:** Renu Saluja **Art Directors:** Nitish Roy, Samir Chamda **Music Director:** Louis Banks.

Vikas Pande is the Executive Editor of "New Delhi Times". An idealist and professional journalist, he suffers from these very virtues. In the course of investigating the murder of a scheduled caste M.L.A., Vikas comes face to face with political powers who have a vested interest in keeping the news of true incidents and motives suppressed. He is all out to expose an M.P. of the ruling party who is leading a dissident movement against the State Chief Minister. Vikas cannot believe that crimes from drug peddling and smuggling of gold to murder exist in his home town till riots break out and the town goes up in flames. In the process of his investigation, he unleashes forces which terrorise his personal life.



परमा

बंगला/ 139 मिनट

निर्माता निर्मल कुमार गुहा, निहारेन्दु गुहा, सुखेन्दु गुहा और सरोजेन्दु गुहा, निर्देशक/पटकथा लेखक अपर्णा सेन, मुख्य अभिनेता मुकुल शर्मा, मुख्य अभिनेत्री राखी गुलजार, सह अभिनेता दीपंकर डे, सह अभिनेत्री अपर्णा सेन, बाल कलाकार अर्जुन गुहा, छायाकार अशोक मेहता, ध्वनि आलेखक विजय भोपे, संपादक प्रशान्त डे, कला निर्देशक अशोक बोस, वेशभूषाकार बब्लू दास, संगीत निर्देशक भास्कर चन्दावरकर।

परमा परम्परावादी हिन्दू परिवार की एक सामान्य बंगाली गृहिणी है। वह पत्नी, बहू और मां के रूप में अपना जीवन गुजारते हुए पूरी तरह संतुष्ट है और व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान के प्रति बिल्कुल जागरूक नहीं है। दुर्गापूजा समारोह में परमा की मुलाकात उसके पति के भतीजे के एक दोस्त राहुल राय से होती है जो उच्चकोटि का फोटोग्राफर है। राहुल राय परमा की परम्परागत सुन्दरता से प्रभावित होकर उसके परिवार से उसके चित्र लेने की अनुमति लेता है। इस सब में राहुल और परमा एक-दूसरे को चाहने लगते हैं और जल्दी ही परमा एक स्त्री के रूप में अपनी पहचान से परिचित हो जाती है। एक पत्रिका में फोटो छपने से परमा के परिवार वालों को ठेस लगती है और सारा घर उसके खिलाफ हो जाता है। हताश होकर परमा आत्महत्या की कोशिश करती है। आत्महत्या का प्रयास विफल रहता है और वह ठीक हो जाती है। यह स्थिति उसके नए जन्म का प्रतीक है।

PARAMAMA

Bengali/139 mins.

Producers: Nirmal Kumar Guha, Niharendu Guha, Sukhendu Guha Sarojendu Guha **Director/Screenplay Writer:** Aparna Sen **Leading Actor:** Mukul Sharma **Leading Actress:** Rakhi Gulzar **Supporting Actor:** Deepankar De **Supporting Actress:** Aparna Sen **Child Artiste:** Arjun Guha **Cameraman:** Ashoke Mehta **Audiographer:** Vijay Bhope **Editor:** Prasanta Dey **Art Director:** Ashoke Bose **Costume Designer:** Bablu Das **Music Director:** Bhaskar Chandavarkar

Parama is a typical Bengali housewife of a conservative hindu home. She is quite content to play out her roles of housewife, daughter-in-law, mother and so on without ever being aware of her own identity as a person. During Durga Puja festival, Parama meets young Rahul Ray a friend of her husband's nephew and a talented photographer. Struck by Parama's traditional Indian beauty, Rahul obtains her family's permission to photograph her. During the process Rahul and Parama are drawn irresistably towards each other and soon Parama finds her own identity as a woman. The photographs published in a magazine shock Parama's family and the entire household sets its face against her. In desperation Parama attempts suicide. The aborted attempt and her subsequent recovery become to her the symbol of a new birth.

पुढचे पाऊल

मराठी/160 मिनिट

निर्माता मधुकर रूपजी, सुधा ए. चिताले, विनय नेवलकर, निर्देशक राजदत्त, पटकथा लेखक जयवन्त दलवी, मुख्य अभिनेता यशवंत दत्त, मुख्य अभिनेत्री आशालता, सह अभिनेता सागर, सह अभिनेत्री मानसी, बाल कलाकार अमिताभ, छायाकार ईशान आर्य, ध्वनि आलेखक मनोहर अंबेरकर, संपादक दास धयमादा, कला निर्देशक/वेशभूषाकार डी.एन. कुलकर्णी गीतकार सुधीर मोगे, संगीत निर्देशक/पार्श्व गायक सुधीर फडके, पार्श्व गायिका आशा भोंसले।

माई पटगांवकर पर अमीर बनने का भूत सवार है क्योंकि उसकी बहनें बहुत धनी हैं और उनके पास बंगले और कारें हैं। अमीर बनने का रास्ता वह अपने इकलौते बेटे शीनू की शादी पर दहेज बटोरने का चुनती है। शीनू की दूसरी पत्नी चित्रा, जो कि गरीब घर की है, को इसलिए परेशान किया जाता है क्योंकि उसके पिता ने शीनू को स्कूटर खरीदने के लिए पैसे नहीं दिए। रोज-रोज की परेशानी से तंग आकर चित्रा खुदकशी कर लेती है। माई और शीनू एक और दुल्हन की तलाश शुरू कर देते हैं। वे कमल नाम की लड़की को चुनते हैं जिसके नाम उसके पिता ने जमीन की है। वे लड़की के साथ दुर्व्यवहार करते हैं और उसे जलाने की कोशिश करते हैं। एक सामाजिक कार्यकर्ता की मदद से कमल उनके चंगुल से छूट जाती है। तब शहर के लोगों की आंखें खुलती हैं और वे अपराधियों का सामाजिक बहिष्कार करने को तैयार हो जाते हैं।

PUDHCHE PAOOL

Marathi/160 mins

Producers: Madhukar Rupji, Sudha A. Chitale, Vinay Newalkar **Director:** Rajdatt **Screenplay Writer:** Jayawant Dalvi **Leading Actor:** Yashwant Datt **Leading Actress:** Ashalata **Supporting Actor:** Sagar **Supporting Actress:** Manas **Child Artiste:** Amitabh **Cameraman:** Ishan Arya **Audiographer:** Mansher Amberkar **Editor:** Das Dhaymade **Art Director/Costume Designer:** D.N. Kulkarni **Lyricist:** Sudhir Moghe **Music Director/Male Playback Singer:** Sudhir Phadke **Female Playback Singer:** Asha Bhosle.

Mai Patgaonkar is obsessed with acquiring riches because her sisters are rich and have bungalows and cars. The avenue she chooses to attain her objective is dowry for her only son, Shinu, Shinu's second wife, Chitra, who comes from a poor family, is ill-treated because her father had not given Shinu the money he had demanded for buying a scooter. Unable to bear the harassment, Chitra commits suicide. Promptly, Mai and Shinu start scouting for another bride. They select Kamal, who has been bequeathed land by her father. They continue the ill-treatment and attempt to set the girl on fire. With the help of a social worker, Kamal frees herself. The people of the town are awakened and they rise in effective social boycott of the culprits.



राव साहिब

हिन्दी/130 मिनट

निर्माता पहलाज बजाज, निर्देशक/पटकथा लेखक/वेशभूषाकार विजया मेहता, मुख्य अभिनेता अनुपम खेर, मुख्य अभिनेत्री तन्वी, सह अभिनेता मंगेश कुलकर्णी, सह अभिनेत्री विजया मेहता, छायाकार अदीप टंडन, ध्वनि आलेखक रवीन्द्र साठे, कला निर्देशक श्याम भुटकर, संगीत निर्देशक भास्कर चन्दावरकर, पार्श्व गायक रवीन्द्र साठे, पार्श्व गायिका आनन्द गंधर्व।

35 वर्षीय बैरिस्टर राव साहिब, स्वयं में मस्त उनके बड़े भाई नाना साहिब और उनकी 45 वर्षीया बाल-विधवा बुआ, जो कि एक-दूसरे से कटे-कटे से रहते हैं, नव-विवाहित दम्पति राधक्का और भाओराव के आने से उनके जीवन में सुखद परिवर्तन आता है। अचानक भाओराव की मृत्यु हो जाती है और राधक्का के पिता इस बात पर जोर देते हैं कि परंपरा के अनुसार राधक्का अपना सिर मुंडवा ले। इससे तीनों व्यक्ति बहुत दुखी होते हैं। राधक्का के पिता की भी एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। राव साहिब राधक्का के पिता की जान बचा सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। राधक्का का उनसे लगाव हो जाता है और उसे आशा है कि वे उससे विवाह कर लेंगे। लेकिन राव साहिब शादी की जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ कर अपने आप सिर मुंडवा लेती है और उन प्रगतिशील विचारों को तिलांजलि दे देती है जो राव साहिब ने उसे सिखाए थे।

RAO SAHEB

Hindi/130 mins.

Rao Saheb, the thirty-five year-old barrister, his elder brother, Nana Saheb, mentally unbalanced and Mawshi their forty-five year-old aunt widowed at the age of ten experience unfamiliar yet happy stirrings when newly married Radhakka and Bhaorao enter their lives. Bhaorao's sudden death and Radhakka's father's insistence that she should shave her head according to tradition cause them intense unhappiness, Radhakka's father dies an accidental death. Rao Saheb could have saved his life but did not. Radhakka is attracted to him and hopes he would marry her. But Rao Saheb begins withdrawing into himself, turning his back on the responsibilities of marriage. Disappointed and dejected, Radhakka shaves her head reverting to tradition and turning her back on the progressive beliefs that Rao Saheb had taught her.



श्री नारायण गुरु

मलयालम/ 105 मिनट

निर्माता/गीतकार ए. जाफर, निर्देशक पी.ए. बक्कर, पटकथा लेखक डॉ० ए. पवित्रन, मुख्य अभिनेता श्रीकुमार, मुख्य अभिनेत्री कनक लता, बाल कलाकार बैशाख, छायाकार हेमचन्द्रन, ध्वनि आलेखक देवदास, संपादक रवि, कला निर्देशक/वेशभूषाकार प्रदीप, संगीत निर्देशक जी. देवराजन, पार्श्व गायक बाल मुरलीकृष्ण, जयचन्द्रन, पार्श्व गायिका माधुरी।

युवा नारायण कई परंपरागत धारणाओं और धार्मिक तथा सामाजिक रीतियों के आलोचक हैं। वे विभिन्न जातियों और मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद नहीं मानते। उनका जीवन और विचार संपूर्ण विश्व को एक मानने के दृष्टिकोण पर आधारित है। वे उच्चकोटि के संत और उपदेशक हैं जो अपनी आध्यात्मिक चेतना के बल पर नए मानव तथा नई सामाजिक व्यवस्था की रचना करते हैं। उन्हें श्री नारायण गुरु के नाम से पुकारा जाता है।

SRI NARAYANA GURU

Malayalam/105 mins.

Producer/Lyricist: A. Jaffer **Director:** P.A. Backer **Screenplay Writer:** Dr. A. Pavithran **Leading Actor:** Sreekumar **Leading Actress:** Kanakalatha **Child Artiste:** Byshakh **Cameraman:** Hemachandran **Audiographer:** Devadas **Editor:** Ravi **Art Director/Costume Designer:** Pradeep **Music Director:** G. Devarajan **Male Playback Singers:** Balamurali Krishna, Jayachandran **Female Playback Singer:** Madhuri.

Young Narayanan is critical of many traditional concepts and religious and social practices. He sees no difference of caste or sect between man and man. Universality of outlook is the striking feature of his life and thought. He is a rare saint and preacher who uses his spiritual attainments for the creation of a new man and a new social order and is acclaimed Shri Narayana Guru.

सिन्धु भैरवी

तमिल/ 160 मिनट

निर्माता राजम बालचन्दर, निर्देशक/पटकथा लेखक के. बालचन्दर, मुख्य अभिनेता शिव कुमार, मुख्य अभिनेत्री सुहासिनी, सह अभिनेता देल्ही गणेश, सह अभिनेत्री सुलक्षणा, छायाकार आर. रघुनाथ रेड्डी, ध्वनि आलेखक एस.पी. रामनाथन, संपादक एस. गणेश, कला निर्देशक मोहनन्, गीतकार वैरामुथु, संगीत निर्देशक इलयाराजा, पार्श्व गायक के.जे. येसुदास, पार्श्व गायिका चित्रा।

जे.के. बालगणपति शास्त्रीय संगीत के जाने माने गायक हैं। उनका विवाह एक सरल चित्त और मधुर स्वभाव की लड़की भैरवी से हुआ है। लेकिन उनके जीवन में दो चीजों की कमी है, एक तो उनकी संतान नहीं है और दूसरे बालगणपति का जीवन साथी ऐसा नहीं है जो संगीत के मामलों में उनके स्तर की बातचीत कर सके। उनकी मुलाकात सिन्धु नाम की महिला से होती है जिनमें यह गुण विद्यमान है और दोनों का संबंध सब सीमाएं लांघ जाता है। भैरवी के कड़े विरोध के कारण बालगणपति और सिन्धु एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं लेकिन इस जुदाई का बालगणपति पर बुरा असर होता है। उसे पुनर्जीवित करने के लिए सिन्धु को फिर उनके पास लाया जाता है लेकिन बालगणपति और भैरवी को उपहार देने के बाद वह वहां से चली जाती है जिसकी उन दोनों को कामना थी।



SINDHU BHAIRAVI

Tamil/160 mins.

Producer: Rajam Balanchander **Director/Screenplay Writer:** K. Balanchander **Leading Actor:** Sivakumar **Leading Actress:** Suhasini **Supporting Actor:** Delhi Ganesh **Supporting Actress:** Sulukshana **Cameraman:** R. Raghunath Reddy **Audiographer:** S.P. Ramanathan **Editor:** S. Ganesh **Art Director:** Mohan **Lyricist:** Vairamuthu **Music Director:** Ilaiyaraja **Male Playback Singer:** K.J. Yesudoss **Female Playback Singer:** Chitra.

J.K. Balaganapathy is a renowned singer of classical music. He is married to Bhairavi, a simple and sweet lady. Two things are missing in their otherwise complete life. They do not have a child and Balaganapathy does not have a companion who could vibrate with him equally on matters of music. When he finds such a person in Sindhu, their relationship fast leads to mutual surrender, mentally and physically. Bhairavi's violent objections tear Balaganapathy and Sindhu apart. But the separation has severe adverse effect on him. In a bid to revive him, Sindhu is again brought to him but she decides to leave him giving Balaganapathy and Bhairavi a gift that they had been yearning for.



श्रावन्ती

तेलुगु/140 मिनिट

निर्माता जयकृष्ण, निर्देशक/पटकथा लेखक क्रांति कुमार, मुख्य अभिनेता मोहन, मुख्य अभिनेत्री सुहासिनी, सह अभिनेता एम. अरुण, छायाकार हरी अनुमोलु, ध्वनि आलेखक स्वामीनाथन, संपादक बी. कृष्णन राजू, कला निर्देशक रामचन्द्र सिंह, वेशभूषाकार साई, गीतकार वातुरी सुंदर राम मूर्ति, संगीत निर्देशक चक्रवर्ती, पार्श्व गायक एस.पी. बालासुब्रह्मण्यम्, पार्श्व गायिका पी. सशीला।

श्रावन्ती पुराने ख्यालों की एक भीरु लड़की है। चिरंजीवी के जीवन दर्शन से, जिसका लोग मखौल उड़ाते थे, उसके जीवन में नाटकीय परिवर्तन आता है। उसे यह जानकर धक्का लगता है कि चिरंजीवी मरणासन्न है। उसे यह भी पता लगता है कि वह उससे प्रेम करता है। श्रावन्ती उससे शादी कर लेती है और अल्प, किन्तु मधुर विवाहित जीवन के बाद चिरंजीवी मृत्यु को प्राप्त होता है। सारधी, जो कि एक विधुर है, श्रावन्ती से विवाह करने का अनुरोध करता है। जब वह श्रावन्ती के पूजा कक्ष में चिरंजीवी का चित्र देखता है तो ईर्ष्या से जल उठता है। धीरे-धीरे उसके मन में ग्रन्थी इस कदर जड़ जमा लेती है कि श्रावन्ती के लिए उसका आचरण असहनीय हो उठता है और वह सारधी को छोड़कर चिरंजीवी के बूढ़े मां-बाप के पास जाकर रहने का निश्चय कर लेती है।

SRAVANTHI

Telugu/140 mins.

Producer: Jayakrishna **Director/Screenplay Writer:** Kranthi Kumar
Leading Actor: Mohan **Leading Actress:** Suhasini **Supporting Actor:** M. Aruna
Cameraman: Hari Anumolu **Audiographer:** Swaminathan
Editor: B. Krishnam Raju **Art Director:** Ramachandra Singh **Costume Designer:** Sai
Lyricist: Veturi Sundara Rama Murthy **Music Director:** Chakravarthi
Male Playback Singer: S.P. Balasubramaniam **Female Playback Singer:** P. Suseela.

Sravanthi is a timid, conservative girl. Chiranjeevi whose philosophy of life is to laugh at it, brings about a dramatic change in her. She is shocked to know that Chiranjeevi is a dying man. She also comes to know his love for her. She marries him. Chiranjeevi dies after a short and sweet married life. Saradhi, a widower, persuades Sravanthi to marry him. Jealousy rears its ugly head when he finds Chiranjeevi's photograph in Sravanthi's puja room. Gradually the complex grows in him to such an extent that Sravanthi, unable to bear it, decides to leave Saradhi and live with the old parents of Chiranjeevi.



थिनकलाएचा नल्ला दिवसम्

मलयालम/130 मिनिट

निर्माता एम. मणि, निर्देशक/पटकथा लेखक पी. पद्माराजन, मुख्य अभिनेता मामुटी, मुख्य अभिनेत्री कवियूर पोन्नम्मा, सह अभिनेता करमन जनार्दनन, सह अभिनेत्री श्रीविद्या, बाल कलाकार बेबी अनुपमा, बेबी सुमिता, छायाकार वसन्त कुमार, ध्वनि आलेखक देवदास, संपादक बी. लेनिन, कला निर्देशक मक्कड देवदास, वेशभूषाकार अशोकन, गीतकार चुनक्कर रामनकुट्टी, संगीत निर्देशक श्याम, पार्श्व गायिका वाणी जयराम।

जानकीअम्मा आज बहुत प्रसन्न है कि कई वर्षों बाद समूचा परिवार उसका साठवां जन्म-दिवस मनाने के लिए पुश्तैनी घर में इकट्ठा हुआ है। लेकिन उसकी खुशी तब चकनाचूर हो जाती है जब उसका बेटा गोपन मकान को बेचने और उसे एक जरा-चिकित्सा केन्द्र में भेजने की योजना बनाता है। पहले तो जानकीअम्मा ये सुनकर स्तब्ध रह जाती है किन्तु अन्ततः वह जरा-चिकित्सा केन्द्र में चली जाती है। अगले ही दिन जानकीअम्मा की मृत्यु की खबर पहुंचती है। समय बीतने के साथ गोपन अकेला रह जाता है। मकान बेचने की उसकी योजना सिरे नहीं चढ़ पाती। अपराध बोध और दुख से विचलित होकर वह भौतिक सुखों को त्याग कर अपना बाकी जीवन गांव के मकान में बिताने का फैसला करता है। उसके इस फैसले से बच्चे बहुत खुश होते हैं।

THINKALAZCHA NALLA DIVASAM

Malayalam/130 mins.

Producer: M. Mani **Director/Screenplay Writer:** P. Padmarajan **Leading Actor:** Mamooty **Leading Actress:** Kaviyoor Ponnamma **Supporting Actor:** Karamana Janardhanan **Supporting Actress:** Sreevidhya **Child Artistes:** Baby Anupama, Baby Sumitha **Art Director:** Makkada Devadas **Costume Designer:** Ashokan **Lyricist:** Chunakkara Ramankutty **Music Director:** Shyam **Female Playback Singer:** Vani Jayaram.

Janakiamma is happy that after a number of years her whole family is gathered in the ancestral home to celebrate her sixtieth birthday. But her happiness is marred by her son, Gopan's, plan to sell off the house and send her away to a geriatric centre. Janakiamma is at first shocked at this but ultimately goes to the geriatric centre. The next morning news comes of Janakiamma's death. As days pass, Gopan is left alone. His plan to sell the house does not materialise. Haunted by guilt and sorrow, he decides to give up his materialistic existence and spend the rest of his life in the village home—to the great joy of the children.



त्रिकाल

हिन्दी/136 मिनट

निर्माता ललित एम. बिजलानी, फ्रेनी एम. वरियावा, निर्देशक/पटकथा लेखक श्याम बेनेगल, मुख्य अभिनेता के.के. रैना, मुख्य अभिनेत्री लीला नायडू, सह अभिनेता निखिल भगत, सह अभिनेत्री नीना गुप्ता, ध्वनि आलेखक हितेन्द्र घोष, संपादक भानुदास दिवाकर, कला निर्देशक नीतीश राय, वेशभूषाकार सबा जैदी, गीतकार इला अरुण, संगीत निर्देशक वनराज भाटिया, पार्श्व गायक रेमो फर्नांडीज, पार्श्व गायिका अलिसा चिनाय।

रूईज परेरा, जो करीब 41-42 वर्ष का है, चौबीस साल बाद गोवा जाता है। उत्सुकतावश वह उस गांव में पहुंचता है जहां उसने जवानी के कुछ वर्ष गुजारे थे। हालांकि जनजीवन और प्राकृतिक वातावरण बदल गया है लेकिन सूजा सोरेस मैसन इमारत, जिसे वह अच्छी तरह जानता था, अब भी मौजूद है लेकिन अब वह खाली और निर्जीव लगती है तथा उसके बगीचे अब जंगल में बदल गए हैं। परेरा घर में प्रवेश करता है और एकाएक पिछले जीवन में पहुंच जाता है जहां उसे आंसुओं और हंसी की वे आवाजें सुनाई देती हैं जो अब विस्मृति के अंधकार में छिप चुकी हैं। उसे वे चेहरे दिखाई देते हैं, जो कभी उसके जाने-पहचाने थे। मारिया सोरेस का जीवन और उसकी दुख भरी कहानी फिर उसकी आंखों के सामने उभर आती है। अतीत से निकलकर परेरा वर्तमान में लौटता है और बाग के झाड़ीदार रास्ते से चलता हुआ लोहे के द्वार को पार करके नए विश्व में प्रवेश करता है, जो अतीत के खंडहरों के सन्नाटे से बाहर उसके स्वागत के लिए उत्सुक है।

TRIKAL

Hindi/136 mins.

Producers: Lalit M. Bijani, Freni M. Variava **Director/Screenplay Writer:** Shyam Benegal **Leading Actor:** K.K. Raina **Leading Actress:** Leela Naidu **Supporting Actor:** Nikhil Bhagat **Supporting Actress:** Neena Gupta **Audiographer:** Hitendra Ghosh **Editor:** Bhanudas Divakar **Art Director:** Nitish Roy **Costume Designer:** Saba Zaidi **Lyricist:** Ila Arun **Music Director:** Vanraj Bhatia **Male Playback Singer:** Remo Fernandes **Female Playback Singer:** Alisha Chinoy.

Ruiz Pareira, a man in his early forties, visits Goa after twenty-four years. Curiosity takes him back to a village where he had spent a part his youth. Though life and landscape have changed, the Souza Soares mansion which he knew well, still stands but empty and lifeless, its gardens an uncontrolled wilderness. Pareira enters the house and is at once transported to the past alive with the sound of tears and laughter, voices now lost in oblivion, faces whose hidden nuances were once familiar. He sees all over again the life and tragedy of Maria Soares. Returning to the present, Pareira walks away down the overgrown garden path, past the ornate iron gates into the new world that waits beyond the silence of the ruins of the past.



हमारा शहर

अंग्रेजी-हिन्दी/82 मिनट/16 मि.मी.

निर्माता/निर्देशक/संपादक आनन्द पटवर्धन, छायाकार रंजन पालित, आनन्द पटवर्धन, ध्वनि आलेखक इन्द्रजीत नियोगी।

इस फिल्म में बंबई की तंग बस्तियों में रहने वाले चालीस लाख लोगों द्वारा अपने अस्तित्व के लिए रोज लड़ी जा रही लड़ाई का चित्रण है। बंबई की आधी आबादी इन्हीं लोगों की है।

BOMBAY: OUR CITY

English-Hindi/82 mins/16mm

Producer/Director/Editor: Anand Patwardhan **Cameramen:** Ranjan Palit, Anand Patwardhan **Audiographer:** Indrajit Neogy.

The film tells the story of the daily battle for survival of the four million slum dwellers of Bombay who constitute one half of the city's population.

हाई एडवेंचर ऑन व्हाइट वाटर्स अंग्रेजी/35 मिनट

निर्माता यश चौधरी, निर्देशक/पटकथा लेखक सी.एल. कौल, छायाकार महेश काम्बले, ध्वनि आलेखक एम. प्रसाद, ए.के. सिंह, संपादक श्याम सत्वे, ए.एम. बांगड़ीवाला, कार्टूनकार आर.आर. जोशी, वी. एस. शंकरदास, कार्टून छायाकार एस.जी. माने।

इस फिल्म में भारतीय नदी धावक संघ द्वारा 1984 में आयोजित दूसरे भारत-अमरीकी उत्तर गंगा अभियान में नदी दौड़ के नए साहसिक खेल का रोमांचपूर्ण चित्रण किया गया है।

HIGH ADVENTURES ON WHITE WATERS

English/35 mins.

Producer: Yash Choudhary **Director/Script Writer:** C.L. Kaul
Cameraman: Mahesh Kamble **Audiographers:** N. Prasad, A.K. Singh
Editors: Sham Satve, A.M. Bangdiwala **Animators:** R.R. Joshi, V.S. Shankardas: **Animation Photographer:** S.G. Mane

A thrilling account of the new high adventure sport of river running undertaken by the second Indo-U.S. Uttar Ganga Expedition, 1984 organised by the Indian River Runners Association.



द विस्पेरिंग विन्ड

अंग्रेजी/35 मिनट

निर्देशक बिप्लब राय चौधरी।

उड़ीसा की सबसे पिछड़ी जनजातियों में से एक डोंगरिया कोंड है जिसके लोग पूर्वी घाट पर नियामगिरी पहाड़ियों में बसे हुए हैं। वे घने वनों वाली घाटियों में छोटे-छोटे गांवों में अलग-थलग रहकर जिन्दगी गुजारते हैं। इस फिल्म में इन लोगों के परंपरागत जीवन की झांकी है।

THE WHISPERING WIND English/35mins.

Director: Biplab Ray Choudhary

One of the most primitive tribes of Orissa are the Dongria Kondhs who live in the Niamgiri hills of the Eastern Ghats. They lead an isolated life in tiny villages nestling in thickly wooded valleys. The film provides a glimpse of their traditional life.



बाई

मराठी/31 मिनट



निर्माता स्त्रीवाणी, ईशवाणी, निर्देशक/पटकथा लेखक/संगीत निर्देशक सुमित्रा भावे।

इस फिल्म में अनुसूचित जाति की एक मां के कष्टों और व्यथा का चित्रण करके यह दिखाया गया है कि वह किस तरह एक इंसान का जीवन जीने के लिए बाधाओं का सामना करती है।

BAI

Marathi/31 mins.

Producer: Streevani and Ishvani Director/Screenplay Writer/Music Director: Sumitra Bhave.

The film depicts the trials and tribulations of a scheduled caste mother and how she stands up to adversities for living the life of a human being.



सत्यजीत रे

हिन्दी/133 मिनट

निर्माता फिल्म प्रभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, निर्देशक श्याम बेनेगल।

इस फिल्म में फिल्म निर्माता, संगीत निर्देशक, लेखक, चित्रकार और मुद्रक के रूप में सत्यजीत रे के कार्य को चित्रित किया गया है। रे स्वयं अपने बारे में और अपने बचपन, शिक्षा और संगीत तथा कला के प्रति अपनी रुचि के संबंध में जानकारी देने के साथ-साथ ये भी बताते हैं कि वे फिल्म निर्माता कैसे बने।

SATYAJIT RAY

Hindi/133 mins.

Producer: Films Division, Ministry of Information & Broadcasting

Director: Shyam Benegal.

This is a study of Satyajit Ray's work as a film-maker, composer, writer, illustrator and typographer. Ray talks about himself, his childhood and education, his interest in music and art and the manner in which he became a film-maker.

द सियर हू वाक्स एलोन

अंग्रेजी/53 मिनट

निर्माता/निर्देशक जी. अरविन्दन।

इस फिल्म में महान दार्शनिक जे. कृष्णमूर्ति के जीवन और चिन्तन को प्रस्तुत किया गया है।

THE SEER WHO WALKS ALONE

English/53 mins.

Producer/Director: G. Aravindan.

The film presents the life and thought of the great philosopher. J. Krishnamurthi.

वर्ली पेंटिंग

अंग्रेजी/17 मिनट

निर्माता बी.आर. शेंडगे, निर्देशक/पटकथा लेखक वी.के. वानखेड़े, छायाकार एन.एस. गंगाधर, कार्टूनकार वी.के. वानखेड़े, पी.एम. भोंगड़े, के.एन. रणदिवे, कार्टून छायाकार बी. खोसला, ध्वनि आलेखक एच.एस. नीलकान्त, संपादक हरेन्द्र जोशी, संगीत निर्देशक रघुनाथ सेठ।

इस फिल्म में महाराष्ट्र के थाणे जिले के दूर-दराज के इलाकों में बसी जनजाति द्वारा विकसित परंपरागत कला को दर्शाया गया है। इन चित्रों की आदिकालीन शैली, जो अब कला दीर्घाओं में अपना स्थान बना चुकी है, उन लोगों के जीवन और वातावरण की नई प्रतिक्रियाओं का संकेत देती है।

WARLI PAINTING

English/17 mins.

Producer: B.R. Shendge **Director/Script Writer:** V.K. Wankhede **Cameraman:** N.S. Gangadhar **Animators:** V.K. Wankhede, P.H. Bhongade, K.N. Randive **Animation Cameraman:** B. Khosla **Audiographer:** H.S. Neelkantha **Editing:** Harendra Joshi **Music:** Raghunath Seth.

The film depicts the traditional art evolved by the tribes inhabiting the remote area of Thane district in Maharashtra. The primitive style of these paintings reflects the new reactions with their life and surroundings, which has achieved its place in art galleries.



पावर टू द पीपल

अंग्रेजी/16 मिनट

निर्माता बी.एन. मेहरा, निर्देशक/पटकथा लेखक के. बालकृष्णन नायर, छायाकार के.बी. नायर, ध्वनि आलेखक एच.एस. नीलकान्त, राजेन्द्रन, संपादक डब्ल्यू.डी. साठे, संगीत निर्देशक रघुनाथ सेठ।

इस फिल्म में लोगों में वैज्ञानिक चेतना और पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने में एक स्वयंसेवी संगठन की अग्रणी भूमिका का चित्रण किया गया है।

POWER TO THE PEOPLE

English/16 mins.

Producer: B.N. Mehra **Director/Script Writer:** K. Balakrishnan Nair **Cameraman:** K.B. Nair **Audiographers:** H.S. Neelkantha, Rajendran **Editor:** W.D. Sathe **Music:** Raghunath Seth.

The film presents the pioneering role of a voluntary organisation in spreading scientific temper among the people, including promoting ecological and environmental awareness.

सेफ्टी मैयर्स इन हैंडलिंग एग्रीकल्चरल मशीनरी

हिन्दी/21 मिनट

निर्माता डी. गौतमन, निर्देशक गुरबीर सिंह ग्रेवाल, छायाकार बैजनाथ भगत, ध्वनि आलेखक शुभाशीष चौधरी, संपादक बी.एस. त्यागी।

इस फिल्म में फसल काटन भूसा अलग करने, गन्ना पेलने की मशीनें और कम्बाइन चलाने में अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों और सावधानियों की जानकारी दी गई है।

SAFETY MEASURES IN HANDLING AGRICULTURAL MACHINERY

Hindi/21 mins.

Producer: D. Gautaman **Director:** Gurbir Singh Grewal **Cameraman:** Bejnath Bhagat **Audiographer:** Subhasis Choudhary **Editor:** B.S. Tyagi

The film illustrates the safety measures and precautions to be taken while operating threshers, chaffcutters, sugarcane crushers and combines.

कैश इन कैशयू कल्टीवेशन

अंग्रेजी/30 मिनट

निर्माता के.के. गर्ग, निर्देशक डी. गौतमन, पटकथा लेखक एस. नागाभुशनम, छायाकार शंकर पटनायक, ध्वनि आलेखक के.ए. पद्मनाभन, एम.एस. मैथ्यू, संपादक बी.एस. त्यागी, गोपीचन्द्र, संगीत निर्देशक राव बिहारी दत्त।

इस फिल्म में काजू की वैज्ञानिक ढंग से खेती करने को बढ़ावा देने के लिए काजू की खेती के विभिन्न चरणों का चित्रण किया गया है।

CASH IN CASHEW CULTIVATION

English/30 mins.

Producer: K.K. Garg **Director:** D. Gautaman **Script Writer:** S. Nagabhusanam **Cameraman:** Shankar Patnaik **Audio-graphers:** K.A. Padmanabhan, M.A. Maethew **Editors:** B.S. Tyagi, Gopi Chand **Music Director:** Rao Bihari Dutta.

The film narrates the various stages of agricultural operations to promote scientific cultivation of cashew.

समाचार चित्र सं. 59—तारानाथ शिनाय

अंग्रेजी/11 मिनट

निर्माता पी.बी. पेंडारकर, प्रीतम एस. अर्शी छायाकार एम.एस. गंगाधर, अशोक पाटिल।
यह फिल्म एक विकलांग युवक की प्रेरणास्पद कहानी है जो अपने साहस, संकल्प और उत्साह के बल पर सफल तैराक बनने में कामयाब हो जाता है।



NEWS MAGAZINE NO 59-TARANATH SHENOY

English/11 mins.

Producer: P.B. Pendharkar, Pritam S. Arshi **Cameraman:** M.S. Gangadhar, Ashok Patil.

The inspiring story of a severely handicapped young man who, by sheer courage, determination and cheerful spirit, makes a mark as a swimmer.

करुणा की विजय

हिन्दी/12 मिनट

निर्माता भारतीय बाल चित्र समिति, निर्देशक/कार्टूनकार के.एस. बनसोड, छायाकार सतीश अजगांवकर, दशरथ थराली, संपादक श्रीनिवास जुन्नारकर, सुरेन पाटनकर, संगीत निर्देशक के. नारायण।

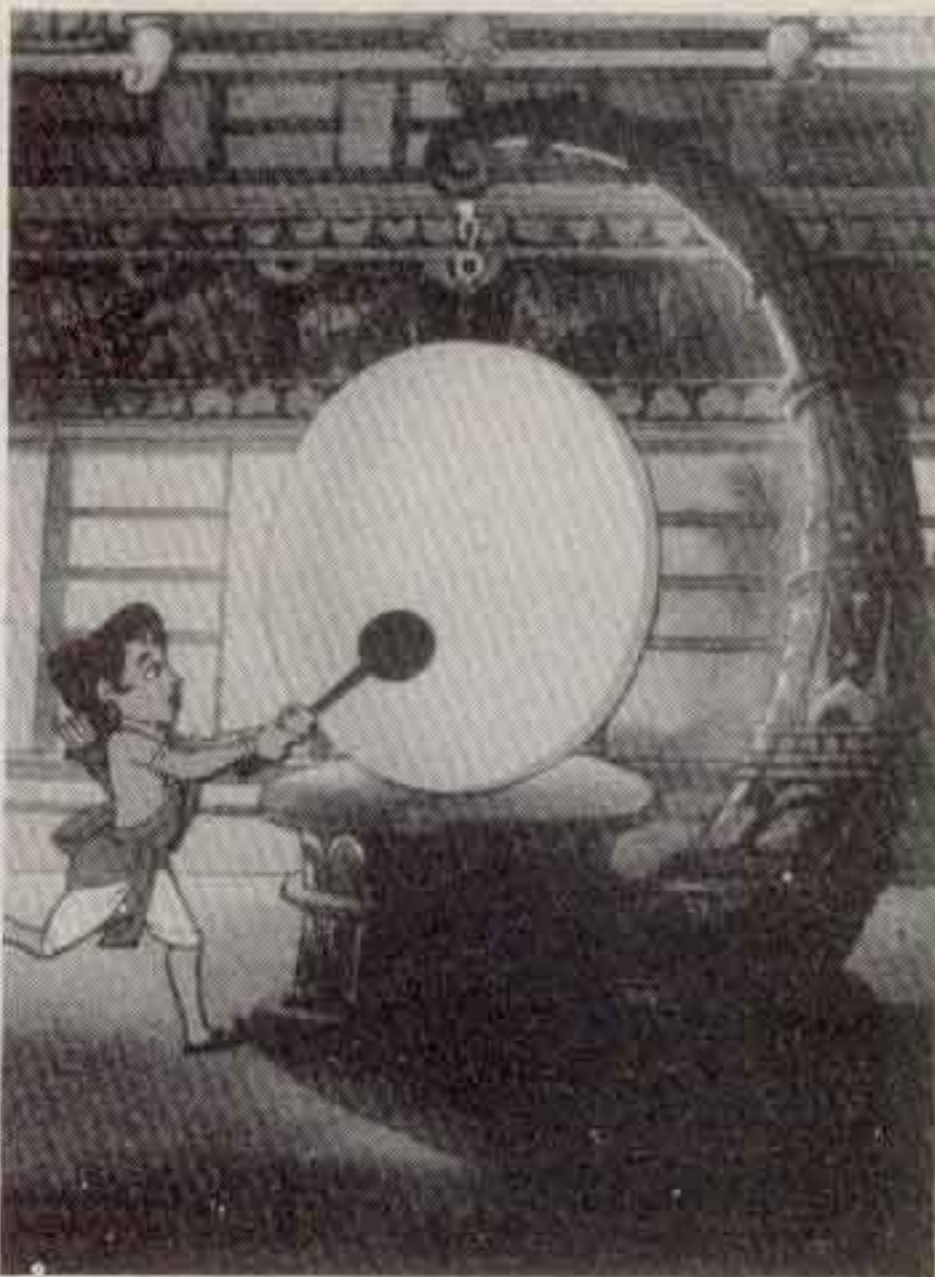
इसमें जातक कथाओं से ली गई एक कहानी चित्रित की गई है जिसमें महात्मा बुद्ध के बचपन की घटनाओं का वर्णन है।

KARUNA KI VIJAY

Hindi/12 mins.

Producer: Children's Film Society, India **Director/Animator:** K.S. Bansod **Cameramen:** Satish Ajgaonkar, Dashrath Tharalis **Editors:** Shrinivas Junnarkar, Suren Patankar **Music Director** K. Narayan.

A story taken from the jataka tales, the film deals with an episode from Buddha's childhood.





बोध वृक्ष

हिन्दी/35 मिनट

निर्माता भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे, निर्देशक राजन खोसा।

यह फिल्मकला की शैलीगत कृति है जिसमें एक ऐसी युवा महिला की चेतना के विकास को दर्शाया गया है जो अपनी दादी की सेवा करते हुए अपनी सार्थकता को तलाशती है।

BODHVRIKSHA

Hindi/35 mins.

Producer:Film and Television Institute of India, Pune.

Director:Rajan Khosa

A formalistic work of cinema which captures the growing stream of consciousness of a young woman groping for meaning as she nurses her grandmother.

प्रिजनर्स ऑफ सरकम्स्टान्सिज

अंग्रेजी/22 मिनट

निर्माता भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे, निर्देशक रमेश हाण्डू।

इस फिल्म में रिमांड गृहों और सुधार विद्यालयों में रह रहे बच्चों की स्थिति का उद्घाटन किया गया है। इसमें वर्तमान संदर्भ में बंबई बाल कानून की वैधता पर प्रश्नचिन्ह लगाया गया है।

PRISONERS OF CIRCUMSTANCES

English/22 mins.

Producer: Film and Television Institute of India, Pune

Director:Ramesh Handoo

This film probes the condition of children who end up in remand homes and reformatory schools. It questions the validity of the Bombay Children Act in the present day context.

अनुकरण

हिन्दी/14 मिनट

निर्माता आर.के. गुप्ता, निर्देशक गुल बहार सिंह।

इस फिल्म में यह बात हृदयस्पर्शी ढंग से दर्शायी गयी है कि भारतीय समाज में स्त्री के रूप में जन्म लेने पर किस तरह भेदभाव का शिकार होना पड़ता है।

ANUKARAN

Hindi/14 mins.

Producer: R.K. Gupta **Director:** Gul Bahar Singh

The film is a moving portrayal of the discrimination that a person born a female is subjected to in Indian society.

फिल्म समारोह निदेशालय, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड द्वारा संकलित एवं निर्मित और एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली में मुद्रित।

Compiled and produced by the Directorate of Film Festivals, National Film Development Corporation Limited and printed at Allied Publishers (P) Ltd., New Delhi.